वार्षिक प्रतिवेदन

2013-2014

राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ

(वि.अ.ए. अनुभाग 3, अधिनियम 1956 के अधीन स्थापित विश्वविद्यालय)

तिरुपति - 517 507 (आं.प्र.)

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् द्वारा मान्यता प्राप्त और

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा पारंपरिक शास्त्र अध्ययन के लिए उत्कृष्ट केंद्र के रूप में मान्यता प्राप्त

तमसो मा ज्योतिर्गमय

संपादक समिति

प्रो. राधाकान्त ठाकुर

प्रो. जी.एस.आर.कृष्णमूर्ति

प्रो. प्रह्लाद आर. जोशी

डॉ. आर. दीप्ता

डॉ. के. राजगोपालन

डॉ. वी. रमेश बाबू

डॉ. सोमनाथ दास

डा. टी.लता मंगेश

श्री वि.जि.शिवशंकर रेड्डी

श्री सी. वेंकटेश्वर्लु

तकनीकी सहायक

श्री जे.एल. श्रीनिवास

प्राक्कथन

मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि शैक्षणिक वर्ष 2013-14 के समाप्त होने से पूर्व राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति के वार्षिक प्रतिवेदन, पाठ्य सहगामी कार्यक्रम और प्रतिवेदन समर्पण किया जा रहा है। शैक्षणिक कार्यक्रमों, शोध गतिविधियाँ और पाठ्येतर घटनाएँ सूचनाएँ ऐसे कई कार्यक्रम 2013-14 में किए गए काम और बहु - विमीय बुद्धिगत प्रयोग शैक्षणिक और प्राशासनिक दोनों क्षेत्रों में उत्कृष्टता और अनुसंधान मूलभूत कार्यक्रम हैं। छात्रों की भर्ती इस शैक्षणिक वर्ष में भी पूर्व जैसा लगभग स्थिर है। प्रतिवेदनानुसार विद्यापीठ शैक्षिक अखंडता, मौलिक अनुसंधान कार्यक्रम और आधारिक संरचना के कारण वर्ष के दौरान छात्र संख्या में वृद्धि हुई । धीरे धीरे विद्यापीठ संस्कृत अध्ययन और अनुसंधानों से अंतर्राष्ट्रीय लक्ष्य के लिए उन्मख हो रही है । विश्वविद्यालय के इस शैक्षणिक वर्ष के अंतर्गत वार्षिक कार्य योजना अत्यंत सतर्क और साथ-ही-साथ भर्ती नियमित आयोजन और नवाचारी के साथ-साथ अंशकालिक पाठ्यक्रम, शोध कार्यक्रम, सेतु पाठ्यक्रम विचार-विनिमय विकास कार्यक्रम, खेल और कूद, परीक्षाओं का आयोजन, परिणामों का प्रकट करना और अखिल भारत संस्कृत छात्र प्रतिभा उत्सव आदि सभी कार्यक्रमों का आयोजन समस्त प्राध्यापकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, छात्रों और अन्य के सहयोग से अत्यंत शांतिपूर्वक रूप से होता आया है। विद्यापीठ के छात्रों ने देश के अलग-अलग राज्यों द्वारा आयोजित प्रतिस्पर्धाओं में भाग लेकर कई पुरस्कार को जीत कर संस्था का नाम रोशन किया है। प्राध्यापकों ने भी देश - विदेशों मेंह्न आयोजित कई संगोष्ठियों एवं सम्मेलनों में भाग लेकर अपना आलेख प्रस्तुत किए हैं। एक बहुत खुशी की बात यह है कि विद्यापीठ के छात्रों ने एक बार फिर 8 वाँ अखिल भारतीय संस्कृत छात्रों का प्रतिभा उत्सव में रोलिंग शील्ड प्राप्त कर अपनी नैपुण्यता प्रदर्शन कर विश्वविद्यालय को सवोच्च स्थान पर पहुँचा दिया है। भारतीय संस्कृति का परिचय होगा। उत्कृष्टता केंद्र के अंतर्गत निम्न सभी योजनाओं का अनुपालन किया गया है -1. शास्त्रवारिधि (चुने गए प्रमुख पारंपरिक शास्त्रों के पाठ्य को इस पाठ्यक्रम में अध्ययन किया जाता है।) 2. प्रकाशन 3. आडियो और विडियो प्रलेखीकरण 4. आडियो - विडियो रेकार्डिंग केंद्र की गतिविधियाँ,5. लिपि विकास प्रदर्शिनी 6. प्राचीन पांडुलिपि अध्ययन के विद्युतीकरण साधन 7. संस्कृत स्व - अध्याय कीट्स 8. प्रलेखीकरण अर्टिफ्याक्ट्स 9. गणकीकृत पांडुलिपियाँ 10. योग. दबाव प्रबंधन और हेलिंग केंद्र11. संगोष्ठियों कार्यशालाएँ 12. कंप्यूटर विज्ञान सेतु पाठ्यक्रम और संस्कृत भाषा तकनीकी और अन्य योजना का आयोजन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा 11 वी योजना में प्राप्त हुआ है क्योंकि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने उदारतापूर्वक सहयोग को आगे बढाया है।

साहित्य विभाग और शिक्षा एवं दर्शन विभागों के लिए प्राप्त विशेष सहायता कार्यक्रम (साप) को सफलतापूर्वक निभाया जा रहा है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने आठ प्रमुख शोध परियोजना और दो निम्न शोध परियोजना तथा कई परिचयात्मक प्राच्य व्यक्तित्व सुधार और नवाचीरी पाठ्यक्रम आदि को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने अनुपालन कर इस शोध दिशा में ज्यादा-से-ज्यादा बढावा देने में मदत किया है। इसलिए इस

शैक्षणिक वर्ष में यह प्रतिवेदन और भी संतोषजनक नजर आता है। एक और हर्षदायक बात तो यह है कि गत वर्ष में कई छात्रों ने नेट और जे.आर्. एफ. पास होकर अन्यों के लिए इस दिशा में निर्देश किया है। वर्ष के दौरान प्रतिवेदन के तहत एक शोध छात्रा को वि.अ.ए. ने पोस्ट डॉक्रल फेलोशिप से सम्मानित किया। विद्यापीठ से गए छात्रों ने देश - विदेश में बडे - बडे ओहदों पर जाकर इस संस्था का नाम रोशन किया है। मन को शांत रखने के लिए शारीरिक तंदूरुस्ती, खुशदिमाग और चेतनयुक्त शरीर के लिए निरंतर व्यायाम की जरूरत पडती है, हमारे छात्र शारीरिक शिक्षा के साथ-ही-साथ योग कार्यक्रमों में भाग लेकर सेहत से तंदुरुस्त हो रहे हैं। संपूर्ण वातावरण सुंदर है, परिसर में जेनरेटर है। हर प्रकार से सभी का सहयोग रहने से प्रशासन अपना लक्ष्य पारंपारिक संस्कृत अध्यापन और समयानुसार संस्कृतिक मूल्यों को देश भर में प्रसारित करने में कामयाब हो सकता है।

यह संस्था आधारभूत संरचना में समयावधि में अनुभवात्मक दृश्यमान प्रगति एवं विकास किया और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने ओ.बी.सी योजना के साथ-ही-साथ योजना अनुदान के अंतर्गत वित्तीय सहायता मंजूर किया है। दिनांक 17 नवंबर 2013, महिला सुविधाएँ केंद्र का उद्घाटन डॉ. के. कृपारानी, आई.टी. की माननीय मंत्री, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा किया गया। अनुसंधान और प्रकाशन भवन का उद्घाटन डॉ. एम. पल्लंराजू, माननीय मंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा दिनांक 23 जनवरी 2014 को किया गया। छात्रा शयन गृह और आगति गैलरि, महामहिम डॉ. जे.बी. पट्टनायक, असम के राज्यपाल और विद्यापीठ के माननीय कुलाधिपति द्वारा 5 मार्च 2014 को उद्घाटित किया गया। एस.सी/एस.टी और अल्प संख्याक छात्रों को बढावा देने हेतु कई सुविधाएँ दी है। कुलमिलाकर विश्वविद्यालय के प्राध्यापक उर्वरक है, सुविधा, प्रदर्शन और आधारभूत संरचनादि विकास के परिणाम है।

पुनः एक बार, मैं उन सभी को धन्यवाद देना चाहता हूँ जो विद्यापीठ की उन्नति हेतु निरंतर अपना योगदान देते आ रहे हैं और उपलब्धि के लिए प्रयास कर रहे हैं।

हरेकृष्ण शतपथी

(प्रो. हरेकृष्ण शतपथी)

कुलपति

अनुक्रमणिका

वार्षिक प्रितवेदन

विषय	पृष्ठ संख्या
प्राक्कथन	3-4
शैक्षक सत्र 2013-14 की मुख्य विशेषताएँ	6
प्रतिवेदन एक नजर 2013-14	7-12
प्रबंधन बोर्ड के सदस्य	14
विद्वत् परिषद के सदस्य (शैक्षिक सदस्य)	15
वित्त समिति के सदस्य (वित्त सदस्य)	16
विद्यापीठ के अधिकारी	17
विद्यापीठ के विविध संकाय अधिष्ठाता	17
विद्यापीठ के विभाग	18
प्राध्यापक वर्ग सूची	19-21
प्रस्तावना	22
I. शैक्षिक - कार्यक्रम	22-40
अ.शैक्षिक	23-43
आ.अनुसंधान	29
इ. प्रकाशन	34
ई. प्रशिक्षण	34
उ. संगोष्ठी/सम्मेलन/कार्यशाला	35
II. पाठ्यसहगामी गतिविधियाँ	44-49
III. पाठ्येतर गतिविधियाँ	50-67
IV. विशेष कार्यक्रम	68-85
V. परियोजनाएँ	86-94
VI. आधारिक संरचना	95-99
VII. प्रशासन	100

शैक्षिक सत्र 2013-14 की मुख्य विशेषताएँ

- वर्ष के दौरान सभी अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति / अन्य पिछडे वर्ग समुदायों की आरक्षित रिक्यों को भर दिया गया है ।
- प्रतिवेदन के तहत वर्ष के दौरान 2688 नई किताबें पुस्तकालय को प्राप्त हुई ।
- दिनांक 5 मार्च, 2014 सत्रवाँ दीक्षांत समारोह का आयोजन किया गया ।
- दिनांक 23.01.2014 से 25.01.2014 तक आठवें अखिल भारतीय संस्कृत छात्र प्रतिभा महोत्सव का आयोजन किया गया और 25 विश्वविद्यालयों / कॉलेजों ने भाग लिया ।
- दिनांक 4 दिसंबर से 10 दिसंबर 2013 और 27 फरवरी से 2 फरवरी 2014 तक राष्ट्रीय सेवा योजना के पाँच इकाईयों के माध्यम से विद्यापीठ ने संगठित सामुदायिक विकास कार्यक्रमों का आयोजन किया ।
- उत्कृष्टता केंद्र के कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किए गए हैं।
- आचार्य के नए छात्रों के लिए सेतु पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया ।
- अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति / अन्य पिछडे और अल्पसंख्यक संबंधित छात्रों के लिए कैरियर कौउन्सलिंग सेल, नेट, प्रशिक्षण केंद्र और उपचारात्मक प्रशिक्षण केंद्र के माध्यम से हर एक शैक्षिक वर्ष में शिक्षण दिया जा रहा है ।
- विद्यापीठ में महिला सुविधाएँ केंद्र दिनांक 17 नवंबर 2013 को डा. के. कृपाराणी, राज्यमंत्री, आई.टी. भारत सरकार द्वारा उद्घाटित किया गया ।
- स्वमी विवेकानंद की 150 वीं जयंजी मनाया गया ।
- भारत रत्न डॉ. बी.आर. अम्बेडकर की 124 वीं जयंती के अवसर 42 श्रद्धांजली समर्पित किया गया ।
- छः अनुसंधान परियोजनाएँ और एक सामान्य अनुसंधान परियोजना मंजूर की गई और परियोजनाएँ प्रगति पर है ।

प्रतिवेदन पर एक नजर - 2013-14

1.	संस्था का नाम एवं पता	:	राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ मानित विश्वविद्यालय तिरुपति - 517 507
2.	स्थापना वर्ष	:	1961
3.	मानित विश्वविद्यालय स्तर का मान्यता वर्ष	:	1987
4.	कुलाधिपति का नाम	:	**डॉ. जानकी वल्लभ पट्नायक**
5.	कुलपति का नाम	:	**प्रो. हरेकृष्ण शतपथी**
6.	कुलसचिव का नाम	:	प्रो. के.आर.एस. मेनोन (31.8.2013 तक) प्रो. आर.के. ठाकुर (1.9.2013 से 29.12.2013 तक) प्रो. सी. उमाशंकर (30.12.2013 से)
7.	विद्यापीठ के प्राधीकारी	:	
	7.1 बोर्ड ऑफ मेनेजमेंट के सदस्य	:	सूची संलग्न है
	7.2 विद्वत् परिषद के सदस्य	:	सूची संलग्न है
	7.3 वित्त समिति के सदस्य	:	सूची संलग्न है
8.	संस्थान का परिसर	:	41.48 एकड
9.	कुल छात्रों की संख्या	:	1778
10.	कुल अध्यापक कर्मचारियों की संख्या	:	81
11.	कुल अध्यापकेतर कर्मचारियों की संख्या	:	79
12.	आधारिक संरचना	:	

12.1 **छात्रावास :** विद्यापीठ के परिसर में सात (सप्ताचल) छात्रावासों का निर्माण किया गया है । (1) शेषाचल (2) वेदाचल (3) गरुडाचल (4) पद्माचल (5) विद्याचल (6) नीलाचल और (7) सिंहाचल को विद्यापीठ में अध्ययन करनेवाले छात्र एवं छात्राओं के निवास एवं भोजन हेतु आवश्यकतानुसार बनाए गए हैं । एक और छात्रवास सिंहाचल नाम से निर्माण किया गया है । वह संपूर्ण रूप से शोध छात्रों संबंधी है।

12.2 **शैक्षिक भवन :** शैक्षिक भवन का निर्माण सभी प्राध्यापक एवं छात्रों के अध्ययन हेतु कक्षाएँ बनाई गई हैं। बनाया हुआ परिसर 5365.78 वर्ग मीटर है । प्रस्तुत शैक्षिक भवन के पास ही दूसरा शैक्षिक भवन का निर्माण किया ।

12.3 **अतिरिक्त शैक्षिक भवन :** एक अतिरिक्त शैक्षिक भवन

12.4 **प्रशासनिक भवन :** इस भवन में कई कार्यालय हैं - कुलपति, कुलसचिव, वित्ताधिकारी, परीक्षा नियंत्रक, स्थापना कार्यालय और प्रशासनिक इकाइयाँ, वित्त और लेखा-परीक्षा इकाइ आदि । इस भवन का परिसर 1479.00 वर्ग मीटर है ।

12.5 **इंडोर स्टेडिएम :** इस इंडोर स्टेडिएम का निर्माण छात्र एवं कर्मचारियों के खेल-कूद हेतु अवश्यकतानुसार निर्माण किया गया है । इसमें बहुविध व्यायाम शाला के 16 कार्य केंद्र है । बनाया हुआ परिसर 850.00 वर्ग मीटर है ।

12.6 **खेल मैदान :** इस खेल मैदान को विश्वविद्यालय में सभी खेल - कूद हेतु बनाया गया है । इसका परिसर 5.00 एकड है ।

12.7 **शिक्षा भवन :** इसको प्राध्यापक एवं छात्रों के अध्ययन हेतु कक्षाएँ अवश्यकतानुसार निर्माण किया गया है । इस शिक्षा विभाग में मनः शास्त्र प्रयोग शाला और बहु-विध भाषा प्रयोगालय है। इसको 2005.50 वर्ग मीटर परिसर में निर्माण किया गया है ।

12.8 **अगाऊ कंप्यूटर केंद्र :** इस में छात्रों के अवश्यकतानुसार करीब 100 कंप्यूटर ई-प्रशिक्षण हेतु बनाए गए हैं । फिलहाल वि.अ.ए. के वित्तीय सहायता से उच्छ - स्थानीय कंप्यूटर केंद्र बनाया गया है।

12.9 **संस्कृत - नेट केंद्र :** इसमें उत्कृष्ठता केंद्र कार्यक्रम के निदेशक को कार्यालय, रामायण और महाभारत परियोजनाएँ चलाई जाती हैं । इस के अलावा, इस में आडियो - विडियो रिकार्डिंग हेतु ई-स्टूडियो विश्वविद्यालय के शैक्षिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए बनाई गई है ।

12.10 **संक्रमण निवास /अतिथि गृह :** अतिथि गृह में बारह कमरे हैं उसमें एक विशेष अतिथि के लिए उपयुक्त एवं एक शयनशाला है । इसके निर्माण का परिसर 433.00 वर्ग मीटर है । अतिथि गृह/संक्रमण निवास में मौजूदा मंजिल पर और एक मंजिल पुननिर्मित किया गया। इस वर्ष में अतिथिगृह में एक लिफ्ट को भी व्यवस्थित किया गया ।

12.11 **ग्रंथालय :** ग्रंथालय भवन में महत्वपूर्ण किताबों का संग्रह है । पत्रिकाएँ एवं पांडुलिपियाँ इसमें 98.568 किताबें और 3,897 पांडुलिपियाँ संग्रहित हैं । इसके ग्राहकों में 150 भारतीय पत्रकार एवं 10 विलायती पत्रकार हर साल आते हैं । वि.अ.ए. के सहायता से इस ग्रंथालय को इन्फ्लीबनेट कार्यक्रम के अधीन पूरे स्वचालित बनाया गया है । इसके निर्माण का परिसर 150.21.18 वर्ग मीटर है ।

12.12 **कर्मचारी मकान :** विद्यापीठ ने दो टाइप - V मकान, एक टाइप - IV मकान, एक टाइप - III मकान, एक टाइप - II मकान और दो टाइप - I मकान 22 विश्वविद्यालय के कर्मचारियों को निवास हेतु बनाया गया है । इस वर्ष के दौरान विद्यापीठ ने वरिष्ठ शिक्षकों हेतु एक नए प्रकार, टाइप - IV मकान जिसके चार आपर्टमेंट बन गये हैं। जल्द ही यह निवास हेतु दे दिए जाएंगे । परिसर का उद्घाटन माननीय आसम के राज्यपाल प्रज्ञान वाचस्पति डॉ. जे.बी. पट्टनायक द्वारा उद्घाटित किया गया ।

12.13 **अनुसंधान और प्रकाशन भवन :** अनुसंधान और प्रकाशन वन डॉ. एम. पल्लंराजू, माननीय मंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सकराकर, नई दिल्ली द्वारा दिनांक 23, जनवरी, 2014 को उद्घाटित किया गया ।

12.14 **महिला सुविधाएँ केंद्र :** महिला सुविधाएँ केंद्र डॉ. के. कृपाराणी, राज्यमंत्री, आई.टी. भारत सरकार द्वारा दिनांक 17 नवंबर, 2013, विद्यापीठ में आयोजित किया गया ।

12.15 **आंध्र बैंक भवन :** बैंक कर्मचारियों तथा छात्रों की और जनता की रकम की लेन देन की आवश्यताओं की पूर्ति कर रही है ।

12.16 **डाक - घर :** विभागीय डाकॉघर विद्यापीठ के छात्र, कर्मचारी और जनता का भी सेवा कर रही है।

12.17 **विश्वविद्यालय कैंटिन भवन :** कैंटिन आई.आर.टी.सी. द्वारा संचालित है जो कर्मचारी, छात्र और जनता की जरूरतों की पूर्ति करती है ।

12.18 **ए.टी.एम. सुविधा :** आंध्र बैंक, विद्यापीठ के शाखा ए.टी.एम. की विस्तार सेवा परिसर में महिला छात्रायाँ/ कर्मचारियों की सेवार्थ संचलित है ।

12.19 **योग मंदिर भवन :** योग और ध्यान कक्षाएँ छात्रों की, कर्मचारियों तथा जनता की भी जरूरतों की पूर्ति के लिए है ।

13. **शैक्षिक कार्यक्रम :**

13.1 **औपचारिक कार्यक्रम :** प्राक - शास्त्री ; शास्त्री (बी.ए.) ; बी.ए. ; बी.एससी. आचार्य (एम.ए.), एम्.ए.(हिंदी) ;

13.2 **अनुसंधान कार्यक्रम :** एम.फिल (विशिष्टाचार्य), पी.एच.डी.(विद्यावारिधी), डी.लिट (विद्यावाचस्पति)

13.3 **डिप्लोमा और प्रमाण - पत्र पाठ्यक्रम :** डिप्लोमा में मंदिर संस्कृति ; पौरोहित्य ; वेब तकनीकी ; योग विज्ञान ; प्राकृतिक भाषा प्रक्रमण ; संस्कृत एवं कानून ; प्रबंधन प्रमाण - पत्र पाठ्यक्रम : मंदिर संस्कृति ; पौरोहित्य ; प्रयोजन मूलक अंग्रेजी और ज्योतिष ।

13.4 **दूरस्थ शिक्षा :** प्राक - शास्त्री ; शास्त्री (बी.ए.) ; आचार्य (एम.ए.) ; संस्कृत में प्रमाण - पत्र; संस्कृत में डिप्लोमा और स्नातकोत्तर योग विज्ञान ।

13.5 **नवाचारी पाठ्यक्रम :** वि.अ.ए. के मदद से विद्यापीठ में निम्न पाठ्यक्रमों का नवाचारी कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है : शाब्दबोध में एम.ए. ; एम्.ए.आई.टि(प्राचीनी भारत प्रबन्धन तकनिकों में मास्टर (दो वर्ष))।

13.6 **सेतु पाठ्यक्रम :** स्नातकोत्तर में प्रवेश लेनेवालों को विद्यापीठ में छात्रों के ज्ञान विकास हेतु सेतु पाठ्यक्रम का आयोजन किया जाता है ।

14. **परियोजनाएँ-**

14.1 **पारंपरिक शास्त्र के लिए उत्कृष्टता केंद्र :** वि.अ.ए. ने विद्यापीठ में पारंपरिक शास्त्र के लिए उत्कृष्टता केंद्र के रूप में मान्यता दी है और XI वी योजना के अंतर्गत 3.00 करोड रुपये की मंजूरी भी की है । सी.ओ.ई. के अंतर्गत निम्न कार्यक्रमों को चलाया जा रहा है -

1. शास्त्र वारिधि (प्रमुख पारंपरिक शास्त्र के विषय पर अध्ययन)
2. प्रकाशन
3. संस्कृत स्वंय अध्यय कीट्स
4. लिपि विकास प्रदर्शिनी
5. संस्कृत - नेट गतिविधि का विस्तार
6. सामान्य भाषा मास्टर का प्रक्रमण

7. शास्त्रीक - डिस्कोर्सेस का आडियो-विडियो प्रलेखिकरण
8. आडियो-विडियो रिकार्डिंग केंद्र
9. पांडुलिपियों का डिजिटिलैजेशन
10. प्राचीन लिपियों के अध्ययन उपकरण
11. रीचुल्स में अर्टफ्याक्ट्स उपयोग प्रलेखीकरण
12. योग, दबाव प्रबंध एवं नीरोग केंद्र

14.2 **उत्कलपीठ -** उडीसा सरकार द्वारा प्रयोजित उत्कलपीठ अध्ययन केंद्र सन 2001 में राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ में प्रारंभ किया गया है। इसका प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार है -

इसके अंतर्गत भगवान जगन्नाथ संस्कृति, श्री चैतन्य की दार्शनिकता और जयदेव साहित्य का अनुसन्धान कर अमर संदेश को मुद्रित कर समाज के समक्ष रखना एक महान कार्य है ।

संपादन, संकलन और पुस्तक प्रकाशन, प्रपत्रौं और आलेखों इन तीन बातों पर जोर दिया जाता है ।

प्रति वर्ष राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति के मार्ग दर्शन एवं कार्यान्वयन में उत्कलपीठ ने कार्य शालाएँ, गोष्ठियाँ, प्रकाशन, प्रदर्शनी आदि का आयोजन करता है ।

14.3 **सॉप (विशेष सहायता कार्यक्रम) :** विश्वविद्यालय अनुदान आयोग - साप के मदद से तीन विभागों को अनुदान प्राप्त हुआ है - साहित्य विभाग और शिक्षा विभाग में चलाए जा रहे हैं ।

1. **साहित्य विभाग :** 1.4.2013 से 31.3.2014 तक के वि.अ.ए. के वित्तीय सहायता के अधीन विशेष सहायता कार्यक्रम डी.आर.एस.I स्तर को साहित्य विभाग में पाँच साल के लिए अनुदान दिया गया है । इसके लिए रुपये 31.00 लाख तथा दो अनुसन्धान अध्येयताओं की मंजूरी दी है । इस कार्यक्रम का विषय है - **''भारत में संस्कृत काव्यशास्त्र''।** प्रो. सी. ललिताराणी समन्वयक और डॉ. के. राजगोपालन सह समन्वयक हैं ।

2. **शिक्षा विभाग :** सन 2009-2010 से वि.अ.ए. के अधिन विशेष सहायता कार्यक्रम डी.आर.एस. I स्तर को शिक्षा विभाग को पाँच साल के लिए दिया गया है । इसके लिए रुपये 25.50 लाख की वित्तीय सहायता की मंजूरी दी है । इस कार्यक्रम का विषय है - **''भाषा विकास एवं सामग्री उत्पादन'' ।**

3. **दर्शन विभाग :** सन् 2011-12 से वि.अ.ए. के अधीन विशेष सहायता कार्यक्रम डी.आर.एस.I स्तर दर्शना विभाग को पाँच साल के लिए दिया गया है। इसके लिए रुपये 14.72 लाख की वित्तीय सहायता तथा दो अनुसंधान अध्येयताओं की मंजूरी दी है। इस कार्यक्रम का विषय है - नव्य न्याया (गंगेशोपाध्याय द्वारा तत्त्वचिंतामणि की टीकाएँ एवं उपटीकाएँ की महत्वपूर्ण सर्वेक्षण)

15. पाठ्येतर गतिविधियाँ / पाठ्यसहगामी गतिविधियाँ :

15.1 **आठ वाँ अखिल भारतीय संस्कृत छात्र प्रतिभा उत्सव :** आठ वाँ अखिल भारतीय संस्कृत छात्र प्रतिभा उत्सव का आयोजन विद्यापीठ में दिनांक 22 से 25 जनवरी, 2014 तक आयोजित किया। लगभग 220 छात्रों, कुल 25 संस्थाओं से विविध सांस्कृतिक एवं साहित्यिक प्रतियोगिताओं में भाग लिया था । इस अवसर पर माननीय मंत्री, मानव संसाधन विकास, भारतक सरकार के डॉ. एम.एम. पल्लमराजू, ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता और द्वितीय संस्कृत आयोग के अध्यक्ष प्रो. सत्यव्रत शास्त्री, संसद सदस्य, तिरुपति डॉ. चिंता मोहन और श्री एम.जी. गोपाल, ऐ.ए.एस., कार्यकारी अधिकारी, उपस्थित थे । उत्सव में चैम्पियनशिप की रोलिंग पुरस्कार राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ,तिरुपित ने जीता ।

15.2 **विद्यापीठ वार्षिक एवं छात्रावास दिवस :** विद्यापीठ वार्षिक एवं छात्रावास दिवस का शैक्षिक वार्षिक और छात्रावास दिवस प्रतिवेदन प्रो. एस.बी. रघुनाथाचार्य मुक्त सभांगण में दिनांक 6 & 8 मार्च, 2014 को आयोजन किया गया था ।

15.3 **वार्षिक खेल - कूद :** अलग-अलग विधाओं के इंडोर खेलों का आयोजन विद्यापीठ के कई छात्र एवं कर्मचारियों के लिए किया गया था ।

15.4 **राष्ट्रीय सेवा योजना की गतिविधियाँ :** विद्यापीठ रा.से.यो.कार्यक्रमों के आयोजन करने का मूल उद्देश्य छात्रों में स्वतन्त्र कार्यकुशलता संबंध में शक्ति भरना है।

रा से यो के सदस्य तिरुपति के उपशहरी प्रांतों में घूमकर रक्तदान, रक्त संचारण, हृदरोग, एच.आई वी के बारे में महत्वपूर्ण विचारों से अवगत करवाया।

दिनांक 26 जनवरी 2014(गणतंत्र दिवस) राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, रक्त दान शिबिर केंद्र से समिल्लित होकर 142 इकाइयों का रक्त58 सदस्यों और कर्मचारियों से लिया गया। कुलसचिव जी, वित्तीय अधिकारी, विविध विभागों के संकाय प्रमुखों छात्रों और कर्मचारियों के उपस्थिति में कुलपति जी ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया ।

15.5 **संगोष्ठियाँ / सम्मेलन / कार्यशालाएँ :**

(i) **राष्ट्रीय संस्कृत जागरुकता कार्यक्रम -**

दिनांक 27 और 28 जुलाई, 2013, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रोत्साहित किया गया ।

संस्कृत के महत्व, भारतीयसंस्कृति एवं नैतिक शिक्षा के प्रति जागरूकता लाने के लिए दिनांक 27 और 28 जुलाई 2013, विद्यापीठ के परिसर मे केद्रीय विद्यालय शिक्षको केलिए द्विविवसीय राष्ट्रीय संस्कृत जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह पहला अनुसूचित प्रस्तावित शिबिर कार्यक्रम है। पचास से अधिक शिक्षक, हैदराबाद क्षेत्र, आंध्र प्रदेश एवं एरनाकुल क्षेत्र, केरल के केंद्रीय विद्यालय तथा राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरूपति, इस शिबिर मे भाग लिए थे।

(ii) **''नीलाचल और सिंहाचल का एक तुलनात्मक अध्ययन - शेषाचल के विशेष संदर्भ में'' विषय पर आयोजित द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी**

राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के परिसर में 2 और 3 सितंबर 2013को योगमंदिरम में उत्कल पीठ द्वारा ''नीलाचल और सिंहाचल का एक तुलनात्मक अध्ययन - शेषाचल के विशेष संदर्भ में'' विषय पर आयोजित द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजन किया गया था । डा. राधागोविंद त्रिपाठी और डा. ज्ञान रंजन पंडा संगोष्ठी के समन्वयक तथा सह समन्वयक थे ।

(iii) **'आधुनिक भारत में विवेकानंद के युग' पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी -**

'आधुनिक भारत में विवेकानंद के युग' पर द्वि दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 23 और 24 दिसंबर 2013 को राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति के परिसर में प्रतिष्ठित आध्यात्मिक गुरु और ऋषि को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए - श्री स्वामी विवेकानंद के जन्मदिन के सुअवसर पर आयोजन किया गया था । डा. राणी सदाशिव मूर्ति संगोष्ठी के संजोयक थे ।

(iv) **अंग्रेजी और संस्कृत के कथा साहित्य पर राष्ट्रीय संगोष्ठी -**

अंग्रेजी और संस्कृत के कथा साहित्य पर द्वि दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 3 और 4 सितंबर 2013 को राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति के अंग्रेजी विभाग द्वारा आयोजित किया गया था । इस संगोष्ठी में देश के विभिन्न भागों से लगभग 50 विद्वानों ने भाग लिया ।

(v) **''अखिल भारतीय संस्कृत महिला विदूषियों की सम्मेलन -**

दिनांक 7 और 8 मार्च 2014, अखिल भारतीय संस्कृत महिला विद्वान सम्मेलन का आयोजन, राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठम तिरुपति कें साहित्य विभाग द्वारा आयोजित किया गया। प्रो.सी.ललिताराणी संगोष्ठी की समन्वयिका थी।

15.6 उत्सवों का आयोजन /त्योहार :

(i) **संस्कृत सप्ताह का आयोजन :** दिनांक 16 से 23 अगस्त, 2013 तक विद्यापीठ में संस्कृत सप्ताह का आयोजन किया गया था।

(ii) **ओणम :** केरलावालों के नये वर्ष के उपलक्ष्य में पोंप और गैएटी का आचरण 29 अगस्त, 2013 विद्यापीठ में किया गया था ।

(iii) **पोंगल :** दिनांक 14 जनवरी, 2014 को उत्तरायण पवित्र काल और मकर संक्रांति धार्मिक त्योहार मनाया गया था।

लेखा

1.	योजनेतर अनुदान बजट प्राप्त	:	1729.98 लाख रुपये
	योजनेतर अनुदान बजट का व्यय	:	1985.19 लाख रुपये
2.	XII योजना	:	400.00 लाख रुपये
	व्यय	:	211.42 लाख रुपये
3.	आय के स्रोत	:	वि.अ.ए., ति.ति.दे. और अन्य से निधियाँ प्राप्त
4.	ति.ति.दे. अनुदान	:	50.00 लाख (2011-12 के लिए)
7.	मां.सं.वि.मं. अनुदान	:	2.60 लाख रुपये
8.	उत्कृष्ठता केंद्र अनुदान	:	-----

लेखा परीक्षा की स्थिति

वर्ष 2013-14 का सांविधानिक लेखापरीक्षा को प्रधान निदेशक लोखापरीक्षा (सेंट्रल), हैदराबाद आं.प्र. दिनांक 10.7.2014 से 28.7.2014 किया गया और प्रतिवेदन प्राप्त हुआ ।

* * *

प्रबंधन बोर्ड के सदस्य

प्रो. हरेकृष्ण शतपथी
कुलपति/अध्यक्ष

संयुक्त सचिव, (सी.यु. & एल.)
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
भारत सरकार, नई दिल्ली

प्रो. एस. सुदर्शन शर्मा
संकाय प्रमुख, साहित्य और संस्कृति संकाय
राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ
तिरुपति

प्रो. आर.एल.एन. शास्त्री
अधिष्ठाता, वेदवेदाङ्ग संकाय
राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ
तिरुपति

प्रो. श्रीमति. एम.वी. रमणा,
संस्कृत विभाग,
आंध्र विश्वविद्यालय, वालटेअर,
विशाखपट्नम

प्रो. सिनीरुद्ध दास,
संस्कृत विभाग,
मद्रास विश्वविद्यालय, चेपौक,
चन्नै - 600 005

प्रो. राममूर्ति नाईडु,
सदस्य वि.अ.ए.
35, मौंटेन वियु, अपार्टमेंट
रोड.सं.2, बंजारा हिलस
हैदराबाद - 500 034

प्रो. ए.सि.शारंगी
केन्द्रीय सरकार, मा.सं.वि.मं. के नामित
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
भारत सरकार, नई दिल्ली

प्रो. ओ.श्रीराम लाल शर्मा
संकाय प्रमुख, दर्शन विभाग,
राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति

डॉ. ए. श्रीपाद भट्
सह आचार्य, ज्योतिष विभाग,
राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति
(06-06-2013 तक)

डॉ. उन्निकृष्णन नंपियातिरि
सह आचार्य, ज्योतिष विभाग,
राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति
(13-06-2013 से 05-02-2014 तक)

प्रो. सी. उमाशंकर
कुलसचिव / सचिव
राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति

विद्वत परिषद के सदस्य

प्रो. हरेकृष्ण शतपथी - कुलपति/अध्यक्ष

1. प्रो. हरेकृष्ण शतपथी, कुलपति, आर.एस.वि.,तिरुपति - अध्यक्ष
2. प्रो. एस. सुदर्शन शर्मा, संकाय प्रमुख, साहित्य एवं संस्कृति संकाय, आर.एस.वि.,तिरुपति.
3. प्रो. आर.एल.एन्.शास्त्री,वेदवेदांग संकाय प्रमुख, आर.एस.वि.,तिरुपति.
4. प्रो. ओ.श्रीरामलाल शर्मा, दर्शन संकाय प्रमुख, आर.एस.वि.,तिरुपति.
5. प्रो.रजनी कान्त शुक्ला, संकाय प्रमुख, शिक्षा विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति.
6. प्रो. राधाकांत ठाकुर, शैक्षिक संकाय प्रमुख, आर.एस.वि.,तिरुपति.
7. प्रो.जी.एस.आर.कृष्ण मूर्ती, शैक्षिक समन्वयक, आर.एस.वि.,तिरुपति
8. प्रो.एम.एल.नरसिंह मूर्ति, विभागाध्यक्ष, अद्वैत वेदान्त विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
9. प्रो.जे.रामकृष्ण, विभागाध्यक्ष, व्याकरण विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
10. प्रो.जी.एस.आर.कृष्ण मूर्ती, विभागाध्यक्ष, साहित्य विाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
11. प्रो. सीएच.पी. सत्यनारायण, प्रभारी विभागाध्यक्ष, अनुसंधान तथा प्रकाशन विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
12. प्रो.आर.जे.रमाश्री , विभागाध्यक्ष, कम्प्यूटर विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
13. डा.ए.श्रीपादभट्ट, विभागाध्यक्ष, ज्योतिष विभाग,आर.एस.वि.,तिरुपति
14. प्रो. प्रह्लाद आर जोशी, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
15. प्रो. नरसिंहाचार्य पुरोहित, विभागाध्यक्ष, द्वैतवेदान्तविभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
16. प्रो. वी.एस. विष्णुभट्टाचार्युलु, विभागाध्यक्ष, आगम विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
17. प्रो. पी.टी.जी.वाई. संपत्कुमाराचार्युलु, विभागाध्यक्ष, न्याय विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
18. डॉ. सी. राघवन, विभागाध्यक्ष, विशिष्टाद्वैत वेदांतविभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
19. डॉ. आर. दीप्ता, विभागाध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
20. प्रो. एस.सत्यनारायण मूर्ति, व्याकरण विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति.
21. प्रो.वी.पुरन्दर रेड्डी, अद्वैतवेदान्त विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
22. प्रो.टी.वी.राघवाचार्युलु, आगम विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
23. प्रो. एम.एस.आर. सुब्रह्मण्य शर्मा, अद्वैत वेदांत विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
24. प्रो. सी.ललिता राणी, साहित्य विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
25. प्रो. एन. लता, शिक्षा विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
26. प्रो. वी.सुजाता, आंग्ल विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
27. प्रो.सत्यनारायण आचार्य, साहित्य विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
28. प्रो. उन्निकृष्णन नंपियातिरी, ज्योतिष विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
29. डॉ. राणी सदाशिव मूर्ति, साहित्य विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
30. डॉ. सी. रंगनाथन, साहित्य विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
31. श्री.पी.नागमुनि रेड्डी, शिक्षा विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
32. डॉ. राधा गेविंद त्रिपाठी, शिक्षा विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
33. डॉ. एस. दक्षिणा मूर्ति शर्मा, शिक्षा विभाग, आर.एस.वि.,तिरुपति
34. प्रो. के.सी. पाढी, अध्यक्ष, पी.जी. काउन्सिल, श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी, 752 003 ओड़िशा
35. प्रो. आर.सी. पंडा, व्याकरण विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वारणासी, 221 005
36. प्रो. ए.पी. सच्चिदानंद, प्राचार्य, राजीवगाँधी परिसर, शृंगेरी
37. कुलपति, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली
38. कुलपति, श्री लाल बहदूर राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, कुतुब संस्थाक्षेत्र, नई दिल्ली
39. कुलपति, श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्व विद्यालय, श्री विहार, पुरी

प्रो. सी. उमा शंकर - कुलसचिव / सचिव

वित्त समिति के सदस्य

प्रो. हरेकृष्ण शतपथी कुलपती	अध्यक्ष
संयुक्त सचिव मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, शास्त्री भवन, नई दिल्ली	सदस्य
प्रो.के.राममूर्ति नाईडु 35, मौंटेन अपार्टमेंट रोड सं.2, बंजारा हिल्स हैदराबाद- 34	सदस्य
प्रो. एन.टी.वी.सुब्बा राव भूतपूर्व रैक्टर, श्री.प.म.वि. प्रोफेसर, राष्ट्रीय कानून स्कूल ऑफ भारत विश्वविद्यालय बेंगलूरु	सदस्य
वित्ताधिकारी	सचिव

विश्वविद्यालय के अधिकारी

1. **प्रो.हरेकृष्ण शतपथी**	कुलपति
2. **प्रो.के.आर.एस.मेनोन**	कुलसचिव (1.1.2013 से 31.8.2013 तक)
प्रो. आर.के. ठाकुर	कुलसचिव (1.9.2013 से 29.12.2013 तक)
प्रो. सी. उमा शंकर	कुलसचिव (30.12.2013 से)
3. **डा.टी.आंजनेयुलु**	परीक्षा नियंत्रक
4. **श्री एस.आनंद**	वित्ताधिकारी (30.06.2013 तक)
श्री.वी.जी.शिवशंकर रेड्डी	वित्ताधिकारी प्रभारी (01.07.2013 से)
5. **श्री.वी.जी.शिवशंकर रेड्डी**	उप कुलसचिव
6. **डा.के.राजगोपालन**	जन-संपर्क अधिकारी
7. **श्री.सी.वेंकटेश्वर्लु**	सहायक कुलसचिव
8. **श्री.टी.गोविंदराजन**	सहायक कुलसचिव
9. **श्रीमती एम. उषा**	सहायक कुलसचिव
10. **श्री.सी.ईश्वरय्या**	सहायक परीक्षा नियंत्रक/वि.का.

विद्यापीठ के विविध संकाय अधिष्ठाता

शैक्षणिक कार्य	:	**प्रो. आर्.के.ठाकुर**
वेद वेदांग संकाय	:	**प्रो. आर.एल.एन. शास्त्री**
दर्शन संकाय	:	**प्रो. ओ.श्री. रामलाल शर्मा**
साहित्य और संस्कृति संकाय	:	**प्रो. एस. सुदर्शन शर्मा**
शिक्षा संकाय	:	**प्रो. रजनीकांत शुक्ला**

विद्यापीठ के विभाग

❖ **शिक्षा शास्त्र संकाय:**

1. शिक्षा विभाग
2. शारीरिक शिक्षा विभाग

❖ **साहित्य एवं संस्कृति संकाय**

1. साहित्य विभाग
2. पुराणेतिहास विभाग
3. अंग्रेजी विभाग
4. तेलुगु विभाग
5. हिंदी विभाग

❖ **अनुसंधान एवं प्रकाशन विभाग**

❖ **दर्शन संकाय**

1. न्याय विभाग
2. अद्वैत वेदांत विभाग
3. विशिष्टाद्वैत वेदांत विभाग
4. द्वैत वेदांत विभाग
5. आगम विभाग
6. मीमांसा विभाग
7. सांख्य योग विभाग

❖ **वेद वेदांग संकाय**

1. व्याकरण विभाग
2. ज्योतिष विभाग
3. धर्मशास्त्र विभाग
4. वेद भाष्य विभाग
5. कंप्यूटर विज्ञान विभाग
6. इतिहास विभाग
7. गणित विभाग
8. एम.ए.आई.एम.टी. विभाग

प्राध्यापक वर्ग सूची

शिक्षा शास्त्र संकाय

❖ शिक्षा विभाग

1. प्रो. के.रविशंकर मेनोन, आचार्य एवं अधिष्ठाता (31.8.2013 तक)
2. प्रो. वी.मुरलीधर शर्मा, आचार्य
3. श्री पी. नागमुनि रेड्डी, सहायक आचार्य (चयन वर्ग)
4. प्रो. एन्. लता, आचार्य
5. प्रो. रजनीकांत शुक्ला, आचार्य और संकाय प्रमुख (1.9.2013 से)
6. प्रो. प्रह्लाद आर. जोशी, आचार्य
7. डा. पी. वेंकट राव, सह आचार्य
8. डा. राधागोविंद त्रिपाठी, सहायक आचार्य
9. के. कादम्बिनी, सहायक आचार्य (द्वितीय चरण से तृतीय चरण कि पदोन्नति हुई)
10. डा. एस. दक्षिणा मूर्ति शमा, सहायक आचार्य
11. डा. एस. मुरलीधर राव, सहायक आचार्य
12. डा. आर. चंद्रशेखर, सहायक आचार्य (प्रथम चरण से द्वितीय चरण की पदोन्नति हुई)
13. डा. ए. सच्चिदानन्द मूर्ति, सहायक आचार्य
14. डा. ए. सुनीता, सहायक आचार्य

❖ शारीरिक शिक्षा विभाग

डा. एम.ए. आदिकेशवुलु नायुडु, सह आचार्य (सेवानिवृत्त 31.01.2013)

साहित्य एवं संस्कृति संकाय

❖ साहित्य विभाग

1. प्रो. एस. सुदर्शन शर्मा, आचार्य एवं संकाय प्रमुख
2. प्रो. जी. एस. आर.कृष्णमूर्ति, आचार्य
3. प्रो. सी. ललिता राणी, आचार्या
4. डा. सत्यनारायण आचार्य, सह आचार्य
5. डा. आर. सदाशिव मूर्ति, सह आचार्य
6. डा. सी. रंगनाथन, सह आचार्य
7. डा. के. राजगोपालन, सह आचार्य
8. डा. प्रदीपकुमार बाग, सहायक आचार्य
9. डा. भारत भूषण रथ, सहायक आचार्य
10. डा. जे.बी. चक्रवर्ति, सहायक आचार्य
11. के.लीनाचंद्र, सहायक आचार्य
12. डा. श्वेतपद्म शतपथी, सहायक आचार्य
13. डा. ज्ञान रंजन पण्डा, सहायक आचार्य

❖ **पुराणेतिहास विभाग**

1. डा. पारमिता पण्डा, सहायक आचार्य

❖ **अंग्रेजी विभाग**

1. प्रो. वी. सुजाता, आचार्या
2. डा. आर. दीप्ता, सह आचार्य

❖ **तेलुगु विभाग**

1.डा. नल्लन्ना, सहायक आचार्य
2. डा. विजयलक्ष्मी, सहायक आचार्या

❖ **हिंदी विभाग**

डा. टी.लता मंगेश, सहायक आचार्या

❖ **अनुसन्धान एवं प्रकाशन विभाग**

1. डा. सी.एच.पी. सत्यनारायण, आचार्य एवं निदेशक, दूरस्त शिक्षण
2. डा. विरूपाक्ष वी. जड्डीपाल, सह आचार्य
3. डा. के. सूर्यनारायण, सह आचार्य एवं विभागाध्यक्ष प्रभारी
4. डा. सोमनाथ दास, सहायक आचार्य
5. डा. सी.नागराजु, सहायक आचार्य

दर्शन संकाय

❖ **न्याय विभाग**

1. प्रो. के. ई. गोविंदन,आचार्य (सेवानिवृत्त 31.10.2013)
2. प्रो. ओ.श्री रामलाल शर्मा,आचार्य
3. प्रो.पी.टी.जी. वाई. संपत्कुमाराचार्युलु,आचार्य

❖ **अद्वैत वेदांत विभाग**

1. प्रो. एम.एल. नरसिंह मूर्ति,आचार्य
2. प्रो.वी. पुरंदर रेड्डी, आचार्य और विभागाध्यक्ष
3. डा.एम.एस.आर.सुब्रह्मण्य शर्मा,आचार्य
4. डा.के. गणपति भट्ट, सह आचार्य
5. डा. के. विश्वनाथ, सहायक आचार्य (प्रथम चरण से द्वितीय चरण कि पदोन्नति हुई)

❖ **विशिष्टाद्वैत वेदांत विभाग**

1. प्रो. के. ई. देवनाथन्, आचार्य
   (20.2.2014 का लीन लिया - एस.वी. वेदिक विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप नियुक्त हुए ।)
2. डा. सी. राघवन्, सह आचार्य

❖ **द्वैत वेदांत विभाग**

1. प्रो. नरसिंहाचार्य पुरोहित,आचार्य
2. डा. नारायण,सहायक आचार्य

❖ **आगम विभाग**

1. प्रो.टी.वी. राघवाचार्युलु, आचार्य
2. प्रो. वी. एस. विष्णुभट्टाचार्युलु, आचार्य
3. डा. पि.टि.जि.रंग रामानुजाचार्युलु, सहायक आचार्य

❖ **मीमांसा विभाग**

डा. टी. एस.आर. नारायणन, सहायक आचार्य

❖ **सांख्य योग और योग विज्ञान विभाग**

डा. डी. ज्योति, सहायक आचार्य

वेद वेदांग संकाय

❖ **व्याकरण विभाग**

1. प्रो. एस. सत्यनारायण मूर्ति, आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
2. प्रो. आर.एल. नरसिंह शास्त्री, आचार्य एवं अधिष्ठाता
3. प्रो. जे. रामकृष्ण,आचार्य
4. डॉ. एन.आर.रंगनाथन ताताचार्य, सहायक आचार्य
5. श्री यशस्वी, सहायक आचार्य
6. श्री सन्तोष माजी, सहायक आचार्य

❖ **ज्योतिष विभाग**

1. प्रो. राधाकान्त ठाकुर, आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
2. प्रो. ए. श्रीपाद भट्ट, आचार्य
3. डा. वी. उन्निकृष्णन् नम्पियातिरी, सह आचार्य
4. डा. कृष्णेश्वर झा,सहायक आचार्य
5. डा. के.एस. लवकुमार,सहायक आचार्य

❖ **धर्मशास्त्र विभाग**

1. डा. शितांशु भूषण पण्डा, सहायक आचार्य
2. डा. सुधांशु शेखर मोहापात्र, सहायक आचार्य

❖ **वेद भाष्यम विभाग**

डा. निरंजन मिश्र, सहायक आचार्य

❖ **कंप्यूटर विज्ञान विभाग**

1. प्रो. आर.जे. रमाश्री, आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
2. श्री. जी. श्रीधर, सहायक आचार्य (प्रथम चरण से द्वितीय चरण कि पदोन्नति हुई)

❖ **शाब्दबोध विभाग**

डा. ओ.जी.पी. कल्याण शास्त्री

❖ **इतिहास विभाग**

डा. एस. आर. शरण्य कुमार, सहायक आचार्य (द्वितीय चरण से तृतीय चरण कि पदोन्नति हुई)

❖ **गणित विभाग**

1. डा. वी. रमेश बाबु, सहायक आचार्य
2. डा. ए.चन्दुलाल, सहायक आचार्य

❖❖❖

प्रस्तावना

तिरुमला पर्वत के पादतल में स्थित यह राष्ट्रियसंस्कृत विद्यापीठ गत पाँच दशकों से संस्कृत के अध्ययन एवं अध्यापन की दृष्टि से छात्रों एवं विद्वानों का लक्ष्य हो गया है। यहाँ देश के विभिन्न भाग से विभिन्न धर्म जाति एवं भाषा के छात्र आते हैं जिससे यह विद्यापीठ एक छोटे भारत की तरह दिखता है। यहाँ अध्ययन एवं अनुसंधान केलिए उत्कृष्ट सुविधा एवं अत्यन्त अनुकूल वातावरण उपलब्ध है। नए पाठ्यक्रम, भव्यभवन, कम्पूटर आदि आधुनिक उपसाधनों ने संस्कृत अध्ययन - अध्यापन के क्षेत्र में इस विद्यापीठ को उन्नत बना दिया हे। तिरुपति शहर के मध्यभाग में अवस्थित विद्यापीठ परिसर विशाल तरू के छाया से, सुंदर बगीचे एवं मनोहर वन से अत्यंत आकर्षणीय लगता है। **स्थापना** - भरत सरकार द्वारा गठित केन्द्रीय संस्कृत आयोग की 1950 वर्ष में अनुशंसा पर पारंपरिक संस्कृत की आधुनिक अनुसंधान शैली के साथ प्रचार-प्रसार हेतु शिक्षामंत्रालय द्वारा तिरुपति में केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ तिरुपति सोसाइटी नाम से एक स्वयत्त संस्था पंजीकरण करवाया। विद्यापीठ का शिलान्यास 4 जनवरी, 1962 में तत्कालीन उपराष्ट्रपति डा. एस. राधाकृष्णन् ने किया था। तिरुमल-तिरुपति-देवस्थान ट्रष्ट बोर्ड के तत्कालीन कार्यनिर्वबणाधिकारी डॉ.सी.अन्नाराव जी ने बयालीस एकड जमीन तथा भवन निर्माण हेतु 10 लाख रूपये दिये थे।

सुविख्यात विद्वान एवं राजनेता भारत के भूतपर्वमुख्य न्यायाधीश पतंजली शास्त्री विद्यापीठ सोसाइटी के अध्यक्ष रह चुके। उसके बाद प्राच्यविद्या के प्रसिद्ध विद्वान पी. राघवन तथा लोकसभा के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री.एम. अनन्तशयनम अय्यंगार जी अध्यक्ष हुए। डॉ. बी. आर. शर्माजी ने 1962-1970 तक प्रथम निर्देशक के रूप में काम किया है। श्री वेंकटराघवन, डॉ. मण्डन मिश् डॉ.आर.करुणाकरन, डॉ.एम.डी बाल सुब्रह्मण्यम एवं प्रो.एन.एस.रामानुज ताताचार्य ने क्रमशः प्राचार्य के रूप में अपने वैदुष्य एवं प्रशासनिक अनुभव से इस विद्यापीठ की सेवा की।

केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ को अप्रैल, 1971 में राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के संरक्षण में शिक्षामंत्रालय की स्वायत्त संस्था का रूप दिया गया। रजत जयंती महोत्सव के दौरान वर्ष 1987 में **श्री.पी.वी.नरसिंहाराव** जी भारत सरकार के तत्कालीन केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के यू.जीयसी अधिनियम 1956 के अनुभाग 3 (राजपत्र अध्यादेश नं.एफ.9-285 यू - 3.16 - 111987) के अनुसार विद्यापीठ को **मानित विश्वविद्यालय** घोषित किया। **मानित विश्वविद्यालय** का औपचारिक रूप से उद्घाटन दिनांक 26-8-1989 को तत्कालीन राष्ट्रपति **आर. वेंकटरामन्** के द्वारा किया गया। विद्यापीठ ने शैक्षणिक सत्र 1991 - 1992 से मानित विश्वविद्यालय के रूप में काम करना शुरू किया। उस समय से अत्यंत प्रतिष्ठित व्यक्ति जैसे पं.श्री पट्टाभिरामशास्त्री, प्रो. रमारंजन मुखर्जी और डॉ.वी.आर.पंचमुखी इस विद्यापीठ के कुलाधिपति रहे है। प्रो.एन.एस. रामानुज ताताचार्य, प्रो.एस.बी. रघुनाथाचार्य और प्रो. डी. प्रह्लादाचार्य ने क्रम से 1989 से 1994 , 1994 से 1999 और 1999 से 2004 तक कुलपति के रूप में इस विद्यापीठ की सेवा की है। वरिष्ठ आचार्य प्रो.के.ई.गोविन्दन प्रभारी कुलपति के रूप में दो वर्ष अप्रैल 2006 तक सेवा की है। दिनांक 16-06-2008 से असम के राज्यपाल **प्रज्ञानुवाचस्पति डॉ. जानकीवल्लभ पट्नायक** जी विद्यापीठ के कुलाधिपति पद पर विराजमन हैं। **प्रो.हरेकृष्णशतपथी जी विद्यापीठ के कुलपति हैं, वे 19 अप्रैल 2006 से कुलपति हैं।** अध्ययन - अध्यापन, शोध, प्रकाशन तथा संस्कृत के संरक्षण एवं प्रचार प्रसार के क्षेत्र में विद्यापीठ की उपलब्धियों को देखते हुए विद्यापीठ को निम्न उपाधियों से प्रोत्साहित एवं अलंकृत किया गया है।

- **विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वा पारंपरिक शास्त्रीय विषय के क्षेत्र में उत्कृष्टता केन्द्र का मंजूर हुआ है।**
- **राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) ने 2003 में ए$^{+}$ श्रेणी से प्राधिकृत किया है।**

I. शैक्षणिक - कार्यक्रम

अ. शैक्षिक

संस्कृत पढनेवाले छात्रों के लिए विद्यापीठ औपचारिक अध्यापन, व्यावसायिक एवं अनौपचारिक रुप से कई पाठ्यक्रम प्रस्तुत करता है। 2013-2014 के लिए निम्न पाठ्यक्रमों को चलाया जा रहा हैं -

I. औपचारिक शिक्षा :

1. स्नातक पाठ्यक्रम

1. प्राक् - शास्त्री (इंटरमीडियट के समकक्ष)
2. शास्त्री (बी.ए. समकक्ष)
3. शास्त्री वेदभाष्य (बी.ए.समकक्ष)
4. बी.ए.
5. बी.एस.सी.

2. स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

1. आचार्य (एम्.ए.के समकक्ष) 14 शास्त्रों में
2. आचार्य संस्कृत में (शाब्दबोध प्रणाली तथा भाषा तकनीकी)
3. एम. एससी. कम्प्यूटर विज्ञान और भाषा तकनीकी

वि.अ.ए के नवाचारी कार्यक्रम

4. एम.ए.हिंदी
5. तुलनात्मक सौन्दर्य शास्त्र (साहित्य) में पी.जी.डिप्लोमा
6. एम.ए.आई.एम.टी

3.शोध कार्यक्रम

1. एम्.फिल्.(पांडुलिपि शास्त्र और पुरालिपि शास्त्र को मिलाकर 11 शास्त्रों में)
2. एम्.फिल (शिक्षा शास्त्र)
3. विद्यावारिधि -(पीएच्.डी.समानांतर) सभी शास्त्रों/साहित्य/शिक्षा शास्त्र
4. विद्यावाचस्पति (डि.लिट्.समानांतर) सभी शास्त्रों और शिक्षा में

4.वृत्तिक पाठ्यक्रम-

1. शिक्षा शास्त्री (बी. एड्. समानांतर)
2. शिक्षा आचार्य (एम्, एड्. समानांतर)

II सायंकालीन एवं अंशकालिक कार्यक्रम

1. स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम

1. योग विज्ञान
2. प्राकृति भाषा संसाधन
3. वेब तकनीकी

2. डिप्लोमा पाठ्यक्रम-

1. मंदिर संस्कृति
2. पौरोहित्य
3. संस्कृत एवं कानून डिप्लोमा
4. प्रबंधन और प्राच्य अभिविन्यास

3. प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम

1. मंदिर संस्कृति
2. पौरोहित्य
3. प्रयोजनमूलक अंग्रेजी
4. ज्योतिष
5. ई-अधिगम

4. विद्यापीठ के निम्न वृत्ति आभिविन्यास कार्यक्रम

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के वित्तीय सहायता से चलाए जानेवाले पाठ्यक्रम

1. भारतीय भाषाओं में डी.टी.पी.
2. वेब तकनीकी शास्त्र
3. पुराणेतिहास
4. वास्तु शास्त्र
5. संस्कृत और क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद तकनीक और रचनात्मक लेखन

प्रवेश प्रक्रिया - विद्यापीठ के शैक्षणिक-सत्र जून-जुलाई से शुरु होता है और अप्रैल-मई में परिक्षाएँ समाप्त हो जाती हैं अर्ध वार्षिकीय परीक्षा केवल नियमित शास्त्री तथा आचार्य पाठ्यक्रम मे होती हैं। शिक्षाशास्त्री एवं शिक्षा आचार्य में नही होती है। प्राकशास्त्री, शास्त्री, बि.ए. पाठयक्रम में प्रवेश के लिए पूर्वपरीक्षा के प्राप्तांक एवं व्यक्तिगत साक्षात्कार को आधार माना जाता है। आचार्य (एम्.ए.) पाठयक्रम, शिक्षाशास्त्री (बि.एड) शिक्षा आचार्य(एम.एड) और विद्यावारिधि में नामांकन हेतु विद्यालय स्तर पर तथा राष्ट्रीय स्तर पर विद्यापीठ द्वारा प्रवेश परीक्षा ली जाती है। नेट-स्लेट-एम.फिल-पी.एच.डी उपाधिवालो को विद्यावारिधि प्रवेश परीक्षा से छुट दी गई है। वे नियमित या अंश कालिक के आधार पर अनुसंधान कर सकते हैं। सभी पाठ्यक्रमों में प्रवेश की सूचनाएँ विश्वविद्यालय की वेबसाईट- http://www.rsvidyapeetha.ac.in पर उपलब्ध है ।

शैक्षणिक वर्ष 2013-14 के स्नातकोत्तर स्तर तक के कार्यक्रम जून में ही शुरु हुए। शिक्षा शास्त्री (बी.एड) और शिक्षा आचार्य (एम.एड) और विद्यावारिधी (पी.एच.डी) के अतिरिक्त सभी पाठ्य क्रमों के लिए योग्यता परीक्षा और मौखिक के आधार पर प्रवेश दिये गये है। शिक्षा-शास्त्री (बि.एड.) शिक्षा आचार्य (एम.एड) और विद्यावारिधि (पि.एच.डी) के प्रवेश राष्ट्रीय स्थरीय संयुक्त प्रवेश परीक्षा क्रमशः CPSST-CPSAT औरCVVT की नामावली में आयोजित की गई नेट, स्लेट, एम.फिल, पी.एच.डी,धारकों को CVVT से छूट दी गयी है । शोधार्थी अपने शोध कार्य को नियमित या रेगुलर और निजी या प्राईवेट के रूप में आगे बढा सकते है। सभी शास्त्रों के पाठ्यक्रम को केवल संस्कृत के माध्यम से ही पढाया जाता है। और परीक्षा संस्कृत में भी आयोजित की जाती है। आधुनिक विषयों के लिए शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी और अन्य भाषाओं के लिए संबंधित भाषा शिक्षा का माध्यम और परीक्षा का माध्यम है।

परीक्षाएँ - स्नातक और स्नातकोत्तर उपाधियों के लिए अर्ध वार्षिकीय के अनुरूप परीक्षाएँ ली जाती है । प्राकशास्त्री (इंटर मीडियट) के लिए वार्षिक पैटर्न का पालन किया जाता है। अन्य नाँन सेमिस्टर डिप्लोमा उपधियाँ पी.जी.डिप्लोमा परीक्षाएँ मार्च और अप्रैल में रखी गयी है ।

छात्रों की भर्ती

क्र. सं.	पाठ्यक्रम का नाम	कुल			ओ.सी.			बी.सी.			एस.सी.			एस.टी.			अल्प.सं.			शा.वि.		
		पु	स्त्री	कु	पु	स्त्री	कु	पु	स्त्री	कु	पु	स्त्री	कु	पु	स्त्री	कु	पु	स्त्री	कु	पु	स्त्री	कु
1	प्राक्-शास्त्री प्रथम वर्ष	118	64	182	35	26	61	46	12	58	18	6	24	19	20	39	-	-	-	-	-	-
2	प्राक्-शास्त्री द्वितीय वर्ष	76	49	125	37	16	53	25	19	44	3	4	7	11	10	21	-	-	-	-	-	-
	कुल (1 & 2)	194	113	307	72	42	114	71	31	102	21	10	31	30	30	60	-	-	-	-	-	-
3	शास्त्री प्रथम वर्ष	87	62	149	34	26	60	38	26	64	9	4	13	6	6	12	-	-	-	-	-	-
4	शास्त्री द्वितीय वर्ष	68	26	94	37	16	53	22	7	29	7	3	10	2	-	2	-	-	-	-	-	-
5	शास्त्री तृतीय वर्ष	71	20	91	48	11	59	20	7	27	1	2	3	2	-	2		-	-	-	-	-
	कुल (3 - 5)	226	108	334	119	53	172	80	40	120	17	9	26	10	6	16	-	-	-	-	-	-
6	बी.एससी. प्रथम वर्ष	7	16	23	4	4	8	2	11	13	1	1	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-
7	बी.एससी. द्वितीय वर्ष	5	3	8	4	2	6	1	1	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
8	बी.एससी. तृतीय वर्ष	4	8	12	3	5	8	1	2	3	-	1	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	कुल (6 - 8)	16	27	43	11	11	22	4	14	18	1	2	3	-	-	-	-	-	-	-	-	-
9	शास्त्री वेदभाष्यम प्रथम वर्ष	13	-	13	13	-	13	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
10	शास्त्री वेदभाष्यम द्वितीय वर्ष	8	-	8	8	-	8	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
11	शास्त्री वेदभाष्यम तृतीय वर्ष	7	-	7	7	-	7	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	कुल (9 - 11)	28	-	28	28	-	28	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
12	शिक्षा शास्त्री (बि.एड्)	97	57	154	63	39	102	17	12	29	15	6	21	2	-	2	-	-	-	-	-	-
	स्नातक कुल (1-12)	561	305	866	293	145	438	172	97	269	54	27	81	42	36	78	-	-	-	-	-	-
	स्नातक कुल (3-12)	367	192	559	221	103	324	101	66	167	33	17	50	12	6	18	-	-	-	-	-	-
13	आचार्य प्रथम वर्ष	132	85	217	65	43	108	49	37	86	17	4	21	1	1	2	-	-	-	-	-	-
14	आचार्य द्वितीय वर्ष	106	57	163	50	29	79	39	25	64	14	3	17	3	0	3	-	-	-	-	-	-
	कुल (13 & 14)	238	142	380	115	72	187	88	62	150	31	7	38	4	1	5	-	-	-	-	-	-
15	एम.ए. (सं.) शाब्दबोध प्रथम वर्ष	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
16	एम.ए. (सं.) शाब्दबोध द्वितीय वर्ष	2	1	3	2	1	3	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	कुल (15 & 16)	2	1	3	2	1	3	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
17	एम.एससी. प्रथम वर्ष	7	-	7	3	-	3	3	-	3	1	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-
18	एम.एससी. द्वितीय वर्ष	3	3	6	2	1	3	1	1	2	-	1	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	कुल	10	3	13	5	1	6	4	1	5	1	1	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-

पु. - पुरुष, स्त्री - स्त्री, कु. - कुल

क्र. सं.	पाठ्यक्रम का नाम	कुल			ओ.सी.			बी.सी.			एस.सी.			एस.टी.			अल्प.सं.			शा.वि.		
		पु	स्त्री	कु	पु	स्त्री	कु	पु			पु	स्त्री	कु	पु	स्त्री	कु	पु			पु	स्त्री	कु
19	एम.ए.ऐ.एम.टि. प्रथम वर्ष (२०१२-१३ से शुरू प्रशासन)	8	3	11	5	1	6	1	2	3	2	-	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-
20	एम.ए.ऐ.एम.टि. द्वितीय वर्ष	9	6	15	5	4	9	4	2	6	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	कुल	17	9	26	10	5	15	5	4	9	2	-	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-
21	एम.ए. हिन्दी प्रथम वर्ष (२०१३-१४ से प्रवेश प्रारंभ)	5	3	8	2	-	2	3	2	5	-	1	1	-	-	-	2	2	4	-	-	-
	कुल	5	3	8	2	-	2	3	2	5	-	1	1	-	-	-	2	2	4	-	-	-
22	शिक्षा-आचार्य (एम.एड)	34	10	44	22	7	29	5	2	7	4	1	5	3	-	3	-	-	-	-	-	-
	पी.जी. कुल (13-22)	306	168	474	156	86	242	105	71	176	38	10	48	7	1	8	2	2	4	-	-	-
	व्यावसायिक पाठ्यक्रम कुल (12-22)	131	67	198	85	46	131	22	14	36	19	7	26	5	-	5	-	-	-	-	-	-
23	एम.फिल.	45+4	13+3	58+7	31+3	13+2	42+5	11	0+1	9+1	3+1	-	3+1	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	कुल (23)	49	16	65	34	15	47	11	1	10	4	-	4	-	-	-	-	-	-	-	-	-
24	विद्यावारिधि २०११-१२	58	15	73	47	14	61	8	1	9	1	-	1	2	-	2	-	-	-	-	-	-
25	विद्यावारिधि २०१२-१३	60 8	21 3	81 11	43 8	15 -	58 8	10 -	5 3	15 3	4 -	1 -	5 -	2 -	- -	2 -	1 -	- -	1 -	1 -	- -	1 -
26	विद्यावारिधि २०१३-१४	69	21	90	50	16	66	11	4	15	6	1	7	2	-	2	-	-	-	-	-	-
	कुल (24-26)	195	60	255	174	45	219	29	13	42	11	2	13	6	-	6	1	-	1	1	-	1
	कुल (01-26)	1111	549	1660	657	291	946	317	182	497	107	39	146	55	37	92	3	2	5	1	0	1
	प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम																					
27	पौरोहित्य मे प्रमाणपत्र	1	-	1	1	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
28	मंदिर संस्कृति मे प्रमाणपत्र	3	-	3	2	-	2	1	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
29	ज्योतिष मे प्रमाणपत्र	7	1	8	5	1	6	2	-	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
30	प्रयोजनमूलक अंग्रेजी	2	1	3	1	-	1	-	1	1	1	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-
31	वास्तुशास्त्र मे प्रमाणपत्र	2	-	2	2	-	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
32	संस्कृत में डी.टी.पी.	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	कुल (27-32)	15	2	17	11	1	12	3	1	4	1	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-

पु. - पुरुष, स्त्री - स्त्री, कु. - कुल

क्र. सं.	पाठ्यक्रम का नाम	कुल			ओ.सी.			बी.सी.			एस.सी.			एस.टी.			अल्प.सं.			शा.वि.		
		पु	स्त्री	कु	पु	स्त्री	कु	पु			पु	स्त्री	कु	पु	स्त्री	कु	पु			पु	स्त्री	कु
	डिप्लोमा पाठ्यक्रम																					
33	पौरोहित्य में डिप्लोमा	10	1	11	8	1	9	2	-	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
34	मंदिर संस्कृति में डिप्लोमा	3	1	4	2	-	2	1	1	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	कुल (33 & 34)	13	2	15	10	1	11	3	1	4	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	पी.जी. डिप्लोमा पाठ्यक्रम																					
35	योगा में पी.जी. डिप्लोमा (सायंकालिन कार्यक्रम)	19	12	31	12	8	20	7	4	11	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
36	पी.जी. नेचुरोपती (सायंकालिन कार्यक्रम)	8	4	12	5	2	7	1	2	3	2	-	2	-	-	-	-	-	-	-	-	-
37	तुलनात्मक सौन्दर्य शास्त्र में पी.जी. डिप्लोमा में भूमंडलीय परिप्रेक्ष्य	12	2	14	10	2	12	1	-	1	1	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	कुल (35 - 37)	39	18	57	27	12	39	9	6	15	3	-	3	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	अन्य प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम																					
38	भारतीय भाषाओं में डी.टी.पी.	5	1	6	1	1	2	1	-	1	3	-	3	-	-	-	-	-	-	-	-	-
39	संस्कृत और क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद तकनीक और रचनात्मक लेखन में प्रमाणपत्र	4	-	4	4	-	4	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
40	वेब तकनीकी	-	1	1	-	1	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	कुल (38 & 40)	9	2	11	5	2	7	1	-	1	3	-	3	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	विद्यावारिधि २०११-१२																					
41	विद्यावारिधि २०१२-१३	2	3	5	2	-	2	-	3	3	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
42	विद्यावारिधि २०१३-१४	1	-	1	1	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	कुल (41-42)	5	1	6	4	1	5	-	-	-	1	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	अड्वान्सड डिप्लमो	8	4	12	7	1	8	-	3	3	1	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-
43	भारतीय भाषाओं में डी.टी.पी.																					
44	वेब तकनीकी	6	-	6	5	-	5	1	-	1	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	कुल (43&44)	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	कुल योग भर्ती	1201	577	1778	722	308	1028	334	193	525	115	39	154	55	37	92	3	2	5	1	-	1

पु. - पुरुष - 1201, स्त्री - स्त्री - 577, कु. - कुल - 1201+577 = 1778 (डीडीई के छात्रों को छोडकर)

* कुल शारीरिक विकलांग अतिरिक्त

एस्.सी., एस्,टी., ओ.बी.सी.के लिए छात्रवृत्तियाँ :

सरकार द्वारा एस्.सी., एस.टी., ओ बी.सी.के छात्रों के लिए घोषित छात्रवृत्ति विद्यापीठ के द्वारा निरंतर दी जाती है।

आरक्षण नियम पालन

विद्यापीठ में भारत सरकार एवं वि.अ.ए. के अनुसार समय-समय पर लागु होनेवाले आरक्षण नियम एस.सी.,एस.टी.और ओ.बी.सी. छात्रों के संबंध में जैसा भी नियम है उसके अनुसार प्रत्येक शैक्षिक वर्ष के पाठ्यक्रम जैसे प्राक्-शास्त्री, शास्त्री, आचार्य, शिक्षा शात्रि (बी.एड्), शिक्षा आचार्य (एम.एड). एम.फिल और विद्यावारिधी (पी.एच.डी) और शिक्षक और शिक्षकेतर पदों के नियुक्ति के संबंध में भी आरक्षण का पालन किया जाता है।

योग्यता छात्रवृत्तियाँ :

योग्यता छात्रवृत्तियाँ छात्रों को गत परीक्षा के प्राप्त अंकों की प्रतिशतता के आधार पर दी जाती है। प्राक्शस्त्री प्रथम और द्वितीय वर्ष के छात्रों को, शास्त्री प्रथम, द्वितीय और तृतीय वर्ष के छात्रों को तथा आचार्य प्रथम और द्वितीय वर्ष के छात्रों को छात्र वृत्ति दी जाती है।

आ. व्यावसायिक पाठ्यक्रम :

शिक्षा संकाय

शिक्षा विभाग माध्यमिक विद्यालय के सेवा पूर्व एवं सेवारत-शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाता है। यह विभाग संस्कृत सीखने एवं शिक्षा-शोध को विकसित करने के लिए स्वतः अध्ययन उपकरण तैयार कर रहा है। निम्नलिखित पाठ्यक्रम विवरण इस प्रकारक है -

क्र.सं	पाठ्यक्रम का नाम	अवधि	सीट की संख्या	भर्ती
1	शिक्षा-शास्त्री(बी.एड्)	एक वर्ष	154	154
2	शिक्षा-आचार्य(एम्.एड्).	एक वर्ष	44	42
3	शिक्षा शास्त्र में एम्.फिल्.	एक वर्ष	05	04
4	विद्यावारिधी(पीएच.डी)	2-5 वर्ष		22

अनौपचारिक शिक्षा :

इग्नू की दूरशिक्षा परिषत् ने विद्यापीठ के प्रस्ताव को स्वीकृत किया और 2003-04 से दूर शिक्षा कार्यक्रम प्रारंभ करने की अनुमति दी। **दूर शिक्षा को डा.सी.एच्.पी. सत्यनारायण,** आचार्य, शोध एवं प्रकाशन विभाग निदेशक के रूप में नियुक्त किया गया है।

वर्ष 2013-14 में चलाए जानेवाले प्राठ्यक्रमों का विवरण एवं भर्ती निम्न है :

विश्वविद्यालय के दूर शिक्षा केंद्र द्वारा निम्नलिखित पाठ्यक्रम प्रस्तुत किए गए हैं, जिसका विवरण इस प्रकार है-

क्रमं.सं.	पाठ्यक्रम का नाम	अवधि	भर्ती
1.	प्राक्-शास्त्री	2 वर्ष	47
2.	शास्त्री/बी.ए.	3 वर्ष	48
3.	बी.ए.	3 वर्ष	11
4.	आचार्य	2 वर्ष	344
5.	योग विज्ञान में स्नातकोत्तर डिप्लोमा	1 वर्ष	29
6.	संस्कृत में प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम	1 वर्ष	57
7.	संस्कृत में डिप्लोमा	1 वर्ष	48

हर साल में दो बार समस्त पाठ्यक्रमों के लिए संपर्क कक्षाओं का आयोजन विद्यापीठ परिसर में किया जाता है।

आ. अनुसंधान

i. प्रवेश:

विद्यापीठ ने **विद्यावारिधी** (पीएच.डी.) साहित्य में /व्याकरण/ज्योतिष (फलित और सिद्धांत), न्याय/ अद्वैत वेदांत/ विशिष्टाद्वैत वैदांत/द्वैत वेदांत/ वेदभाष्य/ आगम / और शिक्षा शास्त्र में दी जाती है।

विश्वविद्यालय उन छात्रों को विद्यावारिधी की उपाधि प्रदान करती है, जिन्होंने अपना शोधकार्य पूरा कर लिया हो तथा शोधप्रबंध का मूल्यांकन विद्यापीठ द्वारा निर्धारित विशेषज्ञ से करा लिया गया हो।

वि.अ.ए. नए नियमों के अनुसार उपाधि, संस्कृत में विद्यावारिधी लिखा रहेगा और अंग्रेजी में **डाक्टर ऑफ फिलासोफी** होगा।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार के निर्णयानुसार विद्यावारिधि (पी.एच.डी.) तीन मानित विश्वविद्यालयों यानि राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति, एस्.एल्.बि.एस्.आर्.एस्.विद्यापीठ के लिए कार्यक्रम में प्रवेश के लिए आयोजित करने के लिए एक संयुक्त प्रवेश परीक्षा के फैसले के अनुसार राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली द्वारा पहली परीक्षा CVVET-2011 आयोजित की गई है। रोटेशन के आधार पर वर्ष 2013 में यह CVVET का आयोजन करने के लिए श्री लाल बहदूर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली की बारी है।

संयुक्त विद्यावारिधि प्रवेश परीक्षा (CVVET) का आयोजन सभी केन्द्रों में अगस्त 2013 को किया गया है। सभी योग्य और चयनित उम्मीदवारों का अनुसंधान पाठ्यक्रम में प्रवेश दिया गया है। पी.एच.डी. छात्रों की संख्या एवं विभिन्न विभागों का विवरण नीचे तालिका में प्रस्तुत है।

निदेशक द्वारा शोध पर्यवेक्षण :

क्रं. सं.	शोधार्थी का नाम	मार्गदर्शक का नाम	विभाग	प्रवेश की तिथि
1.	ए. शेकर रेड्डि	प्रो. वि. मुरलीधर शर्मा	शिक्षाशास्त्र	23.12.2013
2.	यल्. वेंकट सुब्बाराव	डा. ए. सच्चिदानन्दमूर्ति	शिक्षाशास्त्र	24.12.2013
3.	ए. चारुकेश	प्रो. वि. मुरलीधर शर्मा	शिक्षाशास्त्र	24.12.2013
4.	चिन्मया मिश्रा	प्रो. प्रलहाद आर. जेशी	शिक्षाशास्त्र	27.12.2013
5.	भारद्वाज दास	डा. आर. चन्द्रशेखर	शिक्षाशास्त्र	20.01.2014
6.	अरुपम समन्ता	डा. के. कादम्बिनी	शिक्षाशास्त्र	21.01.2014
7.	सुकबेद दास	डा. आर. चन्द्रशेखर	शिक्षाशास्त्र	21.01.2014
8.	यम. दत्तात्रेय शर्मा	प्रो. प्रलहाद आर. जोशी	शिक्षाशास्त्र	27.01.2014
9.	शिवनाम संदीप कोल्लूरु	डा. मुरलीधर राव	शिक्षाशास्त्र	27.01.2014
10.	विजय कुमार दास	प्रो. प्रलहाद आर. जोशी	शिक्षाशास्त्र	28.01.2014
11.	तापस कुमार पण्डा	डा. ए. सच्चिदानन्द मूर्ति	शिक्षाशास्त्र	28.01.2014
12.	विश्वास रावा	डा. यस. दक्षिणामूर्ति शर्मा	शिक्षाशास्त्र	28.01.2014
13.	प्रबिर बेरा	डा. पि. वेंकटराव	शिक्षाशास्त्र	28.01.2014
14.	कुमार बागेवादिमत	डा. आर. चन्द्रशेखर	शिक्षाशास्त्र	29.01.2014
15.	अन्नपूर्णा दधिय	प्रो. प्रलहाद आर. जोषी	शिक्षाशास्त्र	30.01.2014
16.	सुनिल कुमार ठाकुर	प्रो.. रजनीकांत शुक्ल	शिक्षाशास्त्र	30.01.2014
17.	महिमा तिवारी	डा. एन. लता	शिक्षाशास्त्र	30.01.2014
18.	डि. उदयकुमार	डा. सत्यनारायण आचार्य	साहित्य	24.12.2013
19.	एच.जि. अर्जुन काश्यप	प्रो. सिएच.पि. सत्यनारायण	साहित्य	03.01.2014
20.	लोहिता वड्लमूडि	प्रो. यसं. सुदर्शन शर्मा	साहित्य	20.01.2014
21.	पि. कृष्णवासु श्रीकांत	डा. भारतभूषन रथ	साहित्य	20.01.2014
22.	टि.पि. गोपाल कृष्ण	प्रो. जी.यस.आर. कृष्ममूर्ति	साहित्य	21.01.2014
23.	अशोक बाबु देवरमपाटि	डा. सी. ललिताराणि	साहित्य	21.01.2014
24.	वे. प्रद्युत कुमार दास	डा. भारतभूषन रथ	साहित्य	21.01.2014
25.	जे. चन्द्रशेखर	डा. सि. ललिताराणी	साहित्य	21.01.2014
26.	के. श्रीचन्दना	प्रो. जी.एस.आर. कृष्णमूर्ति	साहित्य	21.01.2014
27.	स्रवंती चिन्नलबोनिया	डा. भरतभूषण रथ	साहित्य	21.10.2014
28.	सयंता महतो	डा. सीएच.पी. सत्यनारायण	साहित्य	21.10.2014
29.	चंद्रमणि देबता	डॉ. भरतभूषण रथ	साहित्य	22.01.2014

क्रं. सं.	शोधार्थी का नाम	मार्गदर्शक का नाम	विभाग	प्रवेश की तिथि
30.	डी. शिवप्रसाद बाबू	डॉ. भरतभूषण रथ	साहित्य	22.01.2014
31.	के. हरिकृष्ण	डॉ. भरतभूषण रथ	साहित्य	22.01.2014
32.	नरेंद्र आर्य	डॉ. सी. रंगनाथन	साहित्य	23.01.2014
33.	आनंदमणिकण्टा गणेश एस.	डॉ. ज्ञानरंजन पण्डा	साहित्य	24.01.2014
34.	अमरनाथ के.	डॉ. भरतभूषण रथ	साहित्य	24.01.2014
35.	वेदप्रकाश जोशी	डॉ. के. राजगोपालन	साहित्य	27.01.2014
36.	आर. श्रीहरि	प्रो. सी. ललिताराणी	साहित्य	27.01.2014
37.	कृष्णफणींद्र के.	डॉ. आर. सदाशिवमूर्ती	साहित्य	31.01.2014
38.	वी. श्रीनिवासनारायण	प्रो. आर.एल.एन. शास्त्री	व्याकरण	21.10.2014
39.	संतोष माझी	प्रो. रजनीकांत शुक्ला	व्याकरण	27.01.2014
40.	रूपा हेग्डे	प्रो.. एस.एस.मूर्ति	व्याकरण	29.01.2014
41.	प्रदीप सिंह	प्रो. रजनीकांत शुक्ला	व्याकरण	31.01.2014
42.	धर्मा दसन. वी.	डॉ. वी. उन्निकृष्ण नंपियातिरी	ज्योतिष्य	23.12.2013
43.	वी.एस. अन्नपूर्णेश्वरी	प्रो. श्रीपाद भट्ट.ए.	ज्योतिष्य	24.12.2014
44.	हृषीकेश साहु	डॉ. कृष्णेश्वर झा	ज्योतिष्य	30.12.2013
45.	ईश्वरचंद्र एम.	प्रो. ए. श्रीपाद भट्ट	ज्योतिष्य	23.01.2014
46.	जोन्नवित्तुल वेंकट राम शर्मा	प्रो. ए. श्रीपाद भट्ट	ज्योतिष्य	31.01.2014
47.	पलाशसंत्रा	डा. के. गणपति भट्ट	अद्वैत वेदांत	30.01.2014
48.	शिंडेमनोज अंगद	डा. के. गणपति भट्ट	अद्वैत वेदांत	18.12.2013
49.	ज्ञानानेश मराठे	प्रो. एम.एल.एन. मूर्ति	अद्वैत वेदांत	23.12.2013
50.	मनोजिद मुखर्जी	डा. के. विश्वनाथ	अद्वैत वेदांत	02.01.2014
51.	चिरंजित मंडल	डा. के. विश्वनाथ	अद्वैत वेदांत	28.01.2014
52.	सुदेश्ना दास	डा. के. गणपति भट्ट	अद्वैत वेदांत	30.01.2014
53.	जे. श्रीपादाचार	प्रो. नरसिंहाचार्य	द्वैतवेदांत	26.12.2013
54.	नरसिंहा के. आर.	प्रो. नरसिंहाचार्य	द्वैतवेदांत	30.12.2013
55.	विनय पडसलगि	प्रो. नरसिंहाचार्य	द्वैतवेदांत	31.01.2014
56.	वेणुगोपाल पुरोहित	डा. नारायण	द्वैतवेदांत	31.01.2014
57.	डी.एस. विष्णुकांत	प्रो.. वी.एस.वी.बी. चार्युलु	आगम	19.12.2013
58.	एस.एस. शिवप्रसाद शर्मा	प्रो. टी.वी. राघवाचार्युलु	आगम	20.12.2013
59.	टी. श्रीतेजा	प्रो. टी.वी. राघवाचार्युलु	आगम	23.12.2013

क्रं. सं.	शोधार्थी का नाम	मार्गदर्शक का नाम	विभाग	प्रवेश की तिथि
60.	पी. नीलकण्ठम	प्रो. टी.वी. राघवाचार्युलु	आगम	22.01.2014
61.	सौम्यरंजन प्रधान	डा. परमिता पण्डा	पुराणेतिहास	30.12.2013
62.	फणि अजय शर्मा स्वर्णा	डा. परमिता पण्डा	पुराणेतिहास	30.01.2014
63.	अर्वधुति दाश	डा. एस.एस. महापात्र	धर्मशास्त्र	19.12.2013
64.	सबिता बिस्वाल	डा. एस.एस. महापात्र	धर्मशास्त्र	26.12.2013
65.	प्रीति परमेश्वरी महंती	डा. एस.एस. महापात्र	धर्मशास्त्र	26.12.2013
66.	एस. नागेश्वर राव	डा. टी.एस.आर. नारायण	मीमांस	24.12.2013
67.	नीनू	डा. डी. ज्योति	सांख्ययोग	28.01.2014
68.	जगन्नाथ रथ	डा. निरंजन मिश्र	वेदभाष्य	24.12.2013
69.	गोविंद प्रसाद अधिकारी	डा. निरंजन मिश्र	वेदभाष्य	27.01.2014

विद्यापीठ से पीएच.डी.उपाधि प्राप्तकर्ताओं की सूची

क्रं. सं.	शोधार्थी का नाम	विभाग	मार्गदर्शक का नाम	पुरस्कार की तारीख
1.	रामबाबू झा	शिक्षाशास्त्र	प्रो. प्रह्लाद आर. जोशी	02.04.2013
2.	सूर्यप्रकाश गौतम	फलित ज्योतिष्य	डा. कृष्णेश्वर झा	04.04.2013
3.	भाग्य सिंह गुर्जर	शिक्षाशास्त्र	प्रो. रजनीकांत शुक्ला	29.05.2013
4.	के. दयानिधि	विशिष्टाद्वैत वेदांत	डा. चक्रवर्ति राघवन	17.06.2013
5.	देबब्रता बेहेरा	साहित्य	डा. चक्रवर्ति रंगनाथन	17.06.2013
6.	एक्कुर्ति वेंकटेश्वर्लु	शिक्षाशास्त्र	प्रो. मुरलीधर शर्मा	17.06.2013
7.	मदन सिंह	शिक्षाशास्त्र	प्रो. रजनीकांत शुक्ला	17.06.2013
8.	एस. कृष्ण	शिक्षाशास्त्र	डा. के. कादम्बिनी	17.06.2013
9.	वी. पावनी	साहित्य	प्रो. सीएच.पी. सत्यनारायण	18.06.2013
10.	माधवी कोमन्दुरी	साहित्य	डा. सी. रंगनाथन	27.07.2013
11.	अबिनाश गायेन	साहित्य	डा. के. राजगोपालन	27.07.2013
12.	ए. चंद्रज्योति	साहित्य	डा. के. सूर्यनारायण	27.07.2014
13.	भजहरि दास	अद्वैत वेदांत	प्रो. एम.एस. सुब्रह्मण्यशर्मा	29.07.2013
14.	बसंत कुमार महापात्र	धर्मशास्त्र	डा. राधागोविंद त्रिपाठी	29.07.2013
15.	जयवंत चौधरी	व्याकरण	प्रो. जे. रामकृष्ण	29.07.2013
16.	प्रकाशचंद्र मिश्र	पुराणेतिहास	डा. सितांसु भूषण पण्डा	29.07.2013
17.	देवन ई.एम.	न्याय	प्रो. ओ.एस. रामलाल शर्मा	19.08.2013

क्रं. सं.	शोधार्थी का नाम	विभाग	मार्गदर्शक का नाम	पुरस्कार की तारीख
18.	सत्यजित पण्डा	न्याय	प्रो. के.ई. गोविंदन	27.08.2013
19.	वेंकटरमण भट्ट	साहित्य	प्रो. जि.यस.आर. कृष्ममूर्ति	22.09.2013
20.	वीरब्राह्मण जी.	साहित्य	डा. के. राजगोपालन	22.09.2013
21.	के.ई. गोपाल देशिकन	न्याय	प्रो. ओ. श्रीरामलाल शर्मा	24.09.2013
22.	एस.के. अशर्फ अली	अद्वैत वेदान्त	डा. के. विश्वनाथ	03.10.2013
23.	आर. विट्ठोबाचार	न्याय	प्रो. ओ.एस. श्रीरामलाल शर्मा	28.10.2013
24.	बी. बालशिव कुमार	साहित्य	प्रो. सी. ललिताराणी	30.11.2013
25.	छगनलाल शर्मा	व्याकरण	प्रो. के.वि. रामकृष्णमाचार्युलु	31.11.2013
26.	एम.जी. नंदन राव	व्याकरण	प्रो. के.वि. रामकृष्णमाचार्युलु	13.12.2013
27.	रंजन कुमार दास	शिक्षाशास्त्र	डा. पी. वेंकटराव	13.12.2013
28.	श्रीधर एस.	शाब्दबोध	प्रो. आर.एल. नरसिंह शास्त्री डा. श्रीनिवास वरखेडी	17.12.2013
29.	दण्डु पद्मजा	साहित्य	डा. राणी सदाशिवमूर्ति	28.12.2013
30.	प्रियदर्शिनी मल्लुला आई.	व्याकरण	प्रो. एस. एस. मूर्ति	31.12.2013
31.	जी. राजशेखर रेड्डी	साहित्य	डा. विरूपाक्ष वि. जड्डीपाल	07.01.2014
32.	पसुमर्ति श्रीनु	शिक्षाशास्त्र	डा. एस. दक्षिणामूर्ति शर्मा	23.01.2014
33.	अमरेश्वर कुमार ग्रन्धि	पुराणेतिहास	डा. परमिता पण्डा	30.01.2014
34.	के. एल. पवनकुमार	द्वैत वेदांत	प्रो. नरसिंहाचार्य पुरोहित	12.02.2014
35.	डी.वी.वाई. नारायणशर्मा	अद्वैत वेदांत	प्रो. ओ.एस.आर.यल. शर्मा	17.02.2014
36.	रोट्टा गणपति राव	साहित्य	डा. एस. मुरलीधर राव	18.02.2014
37.	पालेटि नागेश्वर राव	साहित्य	प्रो. सी. ललिताराणी	21.02.2014
38.	डी. रेखा	साहित्य	प्रो. सी. ललिताराणी	21.02.2014
39.	सुनीता पात्र	साहित्य	डा. सत्यनारायण आचार्य	22.02.2014
40.	वि. कल्पना	साहित्य	प्रो. के. सूर्यनारायण	22.02.2014
41.	रामकृष्ण भट्ट के.	व्याकरण	प्रो. जे. रामकृष्ण	24.02.2014
42.	आर. गीता	व्याकरण	प्रो. जे. रामकृष्ण	24.02.2014
43.	पी. ललिता	साहित्य	डा. के. राजगोपालन	02.03.2014
44.	महाबल राव एम.जी.	साहित्य	प्रो. जी.एस.आर. कृष्णमूर्ति	02.03.2014
45.	सौम्या एम.	अद्वैत वेदांत	डा. के. गणपतिभट्ट	03.03.2014
46.	बी.वी. लक्ष्मीनारायण	शिक्षाशास्त्र	प्रो. वी. मुरलीधर शर्मा	27.03.2014
47.	के. रामानुजाचार्युलु	व्याकरण	प्रो. जे. रामकृष्ण	28.03.2014

इ-प्रकाशन

सन् 2013-14 में विद्यापीठ ने कई महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन किया है, वे निम्न हैं -

ग्रन्थ का नाम	लेखक / सम्पादक	प्रधान सम्पादक
1. वाल्मीकि रामायण - सुंदर कांडा	प्रो. पी.एम. नायक प्रो. गीर्वाणी प्रो. आ.के. ठाकुर (प्रबंधन संपादक)	प्रो. एच.के. शतपथी
2. वक्रोक्ति सिद्धांत दृष्ट्या उत्तर रामचिरतस्य अध्ययनम	डॉ. वी. सूर्यप्रभ	प्रो. एच.के. शतपथी

शेमुषी - विद्यापीठ वार्ता पत्रिका

विद्यापीठ में मासिक रूप में शेमुषी नामक से पत्रिका निकाला जाता हैं। इस वार्ता पत्रिका में विद्यापीठ के समस्त समाचारों को प्रकाशित किया जाता है और उसे भारत के समस्त विश्वविद्यालय एवं गण्यमान्य व्यक्तियों तक पहुंचाया जाता है। साहित्य विभाग के सह-आचार्य डा. के. राजगोपालन् इस शेमुषी के संपादक है।

विभागीय पत्रिकायों

1. शिक्षा विभाग - शिक्षालोक
2. साहित्य विभाग - रसधुनी

ई. प्रशिक्षण

अ. उपचारात्मक अनुशिक्षण केंद्र -

उद्देश्य -

विद्यापीठ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की वित्तीय सहायता के साथ अनुसूचित जातियाँ, अनुसूचित जनजातियाँ और अल्पसंख्यक समुदाय के छात्रों के लिए उपचारात्मक अनुशिक्षण केंद्र शैक्षणिक वर्ष 2007-2008 से आरंभ किया गया था। ये अनुशिक्षण केंद्र अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति अल्पसंख्यक श्रेणियों के लिए शिक्षण कक्षाओं का आयोजन करता है। अन्यश्रेणियों तथा जिसे शिक्षण की जरूरत होती है उन्हें भी कक्षाओं में भाग लेने की अनुमती दी जाती है। शैक्षणिक वर्ष 2013-14 के लिए अनुशिक्षण कक्षाएँ -

उपचारात्मक कोचिंग कक्षाओं को सितंबर 2013 को शुरू किया और मार्च 2014 को बंद कर दिया। कक्षाओं को सफलतापूर्वक आयोजित किया गया था। वर्ष 2012-13 में उपचारात्मक अनुशिक्षण केंद्र द्वारा पाठ्यक्रम की पूर्ती - उपचारात्मक अनुशिक्षण केंद्र द्वारा सभी शास्त्रों - (1) आचार्य प्रथम वर्ष (2) आचार्य द्वितीय वर्ष (3) शास्त्री प्रथम वर्ष (4) शास्त्री द्वितीय वर्ष (5) शास्त्री तृतीय वर्ष (6) प्राक्शास्त्री प्रथम वर्ष (7) प्राक् शास्त्री द्वितीय वर्ष और (8) शिक्षा शास्त्री (बी.एड) के अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अल्पसंख्याक श्रेणियों के छात्रों के लिए कक्षाएँ आयोजित किया गया। 333 छात्रों ने इस शिक्षा से लाभान्वित हुए। 51 शिक्षकों को.शिक्षण हेतु नियुक्त किया गया। उपचारात्मक अनुशिक्षण केंद्र ने पढने की सामग्री दिया तथा समय समय पर परिक्षाएँ रखते थे।

आ. शास्त्रवारिधी अल्पकालिक पाठ्यक्रम - ज्योतिष (5.7.2013 - 5.8.2013)

दिनांक 5.7.2013 से 5.8.2013 तक उत्कृष्टता केंद्र के तहत एक महीने के लिए ज्योतिष विभाग में अल्पकालिक पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया । प्रो. राधाकांत ठाकुर पाठठ्यक्रम के समन्वयक थे । कई गणमान्य विद्वान ज्योतिर्विज्ञान में विविध विषयों पर व्याख्यान दिए । प्रो. के.आर.एस. मेनोन समापन समारोह के मुख्य अतिथि थे । प्रो. एच.के. शतपथी अध्यक्ष थे । समापन समारोह में कुलपति ने प्रतिभागी छात्रों को प्रमाणपत्र दिए ।

उ. संगोष्ठियाँ/सम्मेलन/कार्यशालाएँ

अ. राष्ट्रीय संस्कृत जागरुकता कार्यक्रम -

दिनांक 27 और 28 जुलाई, 2013, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रोत्साहित किया गया ।

संस्कृत के महत्व, भारतीयसंस्कृति एवं नैतिक शिक्षा के प्रति जागरूकता लाने के लिए दिनांक 27 और 28 जुलाई 2013, विद्यापीठ के परिसर मे केद्रीय विद्यालय शिक्षको केलिए द्विविवसीय राष्ट्रीय संस्कृत जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह पहला अनुसूचित प्रस्तावित शिबिर कार्यक्रम है। पचास से अधिक शिक्षक, हैदराबाद क्षेत्र, आंध्र प्रदेश एवं एरनाकुल क्षेत्र, केरल के केंद्रीय विद्यालय तथा राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरूपति, इस शिबिर मे भाग लिए थे।

श्री डी. वेंकटेश्वर्लु, प्राचार्य, केंद्रीय विद्यालय 1. तिरुपति, कार्यक्रम के स्थानीय समन्वयक थे और डॉ.राणीसदाशिवमूर्ति, सह आचार्य साहित्य विभाग, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ तिरुपति कार्यक्रम के समन्वयक थे।

उद्घाटन समारोह -

उद्घाटन समारोह दिनांक 27 जुलाई 2013, 10.00 बजे राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के शेक्षणीक भवन के सेमिनार हॉल मे आयोजित किया गया था, शिबिर का आरंभ दिव्य वैदिक प्रार्थना एवं सरस्वति वंदना के साथ किया गया। महा महोपाध्याय प्रो.रव्वा श्री हरि, द्रविड विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति और तितिदे प्रकाशन के वर्तमान मुख्य संपादक कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे, प्रो. हरेकृष्ण शतपथी, माननीय कुलपति, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ समारोह के अध्यक्ष थे। प्रो.के.आर.एस.मेनोन, विद्यापीठ के तत्कालीन कुलसचिव अतिथियों एवं गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। प्रो. राधाकांत ठाकुर, शैक्षिक संकाय प्रमुख, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, ने शिबिर के उद्देश्यों का विवरण सविस्तार दिया था डॉ. राणी सदाशिव मूर्ति, कार्यक्रम समन्वयक ने इस द्विदिवसीय शिबिर कार्यक्रम का सत्र वार विवरण दिया या। मुख्य अतिथि संदेश -

अध्यक्षीय भाषण-

प्रो.हरेकृष्ण शतपथी, माननीय कुलपति, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे वर्तमान स्थिति मे संस्कृत सीखने की आवश्यकता पर बलदिया। आरंभ में उन्होने विभिन्न राष्ट्रीय संस्थानों के शिक्षको के लिए आयोजित संस्कृत जागरूकता शिबिरो का आयोजन का महान कार्य राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ को सौपने के प्रति मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के प्रति तहेदिल से आभार व्यक्त किया। इस संदर्भ मे उन्होने कहा कि शिक्षक ही जो समाज को एक साँचे मे ढालकर उसका उत्थान कर सकता है। एक उचित तरीके से बनाने के क्रममें एक उचित माध्यम की आवश्यकता होती है। उसके अनुसार संस्कृत सबसे उपयुक्त माध्यम है। भारतीय संस्कृति की उत्पत्ति, मूल्य आधारित शिक्षा की उत्पत्ति और मानव जीवन के सभी महान सिद्धांतो की उत्पत्ति संस्कृत है। भारतीय धर्म की उत्पत्ति भी संस्कृत है। धर्म जीवन की तरह है और यह सब सांप्रदायिक मतभेदों से परे मानवीय आचार संहिता है। धार्मिक जीवन व्यतीत करने के लिएह्न संस्कृत सीखना बहुत अच्छा है। हमारे दैनंदिन जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए हमे तीन महान पुरुष बुद्धा, आदिशंकरा और स्वामी विवेकानंदा द्वारा बताये गए करुणा, ज्ञान और कर्म मार्ग को अपनाना है। ये तीनो सभी व्यक्तियां की शारीरिक, मानसिक और अध्यात्मिक विकास और पूरे समाज के स्वस्थ वातावरण के लिएह्न आवश्यक है। यह सच है कि संस्कृत ही एक ऐसी भाषा है जो सब कुछ प्राप्त करने मे मदद कर सकता है। कुलपति के इस अत्यधिक प्रभावात्मक भाषण प्रतिभागियों पर सकारात्मक छाप छोड दिया है।

श्री वी.एस.प्रसाद, केंद्रीय विद्यालय 1, द्वारा दी गई धन्यवाद भाषण के साथ उद्घाटन सत्र समाप्त हो गया था। उद्घाटन सत्र के बाद विभिन्न शैक्षणिक सत्र जारी रखा गया। वे इस प्रकार है -

प्रारंभिक सत्र - इस सत्र मे डॉ. रानी सदाशिवमूर्ति, कार्यक्रम समन्वयक ने शिबिरके प्रतिभागियों को आधुनिक युग मे संस्कृत की संरक्षण व्यारतीय संस्कृति में, भारतीय भाषाओ, भारतीय वैज्ञानिक धरोहर और नैतिक सिद्धांतो के भारतीय तरीके की सोच पर बल दिया।

संस्कृत के पहलुओं - डॉ.वी.वी.जड्डीपाल, अनुसंधान एवं प्रकाशन विभाग, के प्रोफेसर, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ ने संस्कृत के पहलुओं पर एक उत्तेजक पावर पाइट प्रस्तुति दी।

संस्कृत प्रश्नोत्तरी - डॉ.सी.रंगनाथन, सह आचार्य, साहित्य विभाग ने प्रतिभागियों केलिए संस्कृत प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया था।

रस संध्या - यह पहले दिन की अंतिम घटना है जिसमे विविध क्षेत्रों के प्रतिभागियो ने विभिन्न प्रकार के अत्यंत मधुर संस्कृत गीत गाये थे।

योग और तनाव प्रबंधन :- राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के योग मंदिर में प्रातः काल 6.00 बजे से 8.00 बजे तक योग अभ्यास और तनाव प्रबंधन का सत्र प्रतिभागियों के लिए डा. ए. राजेंद्ररेड्डी और डा. डी. ज्योति द्वारा लिया गया था ।

समकालीन समाज में संस्कृ की प्रासंगिकता :-

सिर्फ भारत के किसी भी क्षेत्र के लिए संस्कृत सीमित नहीं हैं । यह मानव समाज के लिए प्रासंगिक है । इसके अलावा संस्कृत क्षेत्रीय भाषाई मतभेदों से परे सभी भारतीयों को एकत्रित करने का महान आंतरिक शक्ति रखती है ।

यह सभी क्षेत्रीय भाषाओं को मजबूत बना सकती है । यह अन्य सभी आधुनिक धाराओं में उनके मुख्य विषय के रूप में संस्कृत अध्ययन करनेवाले सभी लोगों के लिए रोजगार उपलब्ध कराने में बराबर क्षमता रखती है । यहाँ तक कि भारतीय संस्कृति हमेशा इस भाषा से प्रभावित है । इसके साथ अंतःक्रियात्मक सत्र का आयोजन साहित्य विभाग के सह आचार्य डा. सत्यनारायण आचार्य द्वारा किया गया ।

संस्कृत विज्ञान और प्रौद्योगिकी :- प्राचीन संस्कृत साहित्य में विभिन्न विज्ञान से संबंधित कई स्वतंत्र ग्रंथ पाये जाते हैं । क्षेत्रों के सभी शाखाओं के संग्रह जैसे गणित, खगोल विज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, प्राणी विज्ञान, ध्वनिकी, पर्यावरण अध्ययन, फोनेटिक्स, जेमोलॉजी, चिकित्सा, मौसमविज्ञान वास्तुकला आदि इसमें शामिल किए गये हैं ।

प्रो. जी.एस.आर.कृष्णमूति, साहित्य विभागाध्यक्ष ने प्राचीन भारतीय विद्या के ऐसे सभी वैज्ञानिक शाखाओं से संबंधित विभिन्न अवधारणाओं का एक आकर्षक प्रस्तुति दी ।

संस्कृत एवं व्यक्तित्व विकास और प्राचीन भारतीय प्रबंधन कौशल :-

इस सत्र में डा. राणी सदाशिवमूर्ति ने व्यक्तित्वविकास के विभिन्न साहित्यिक स्रोतों और प्राचीन भारतीय प्रबंधन कौशल जो वेदो के रूप में पाये गये पुराणों, महाकाव्य, काव्य और अन्य साहित्यिक स्रोतों पर एक पवर पाइंट प्रस्तुति दी । उनका व्याख्यान स्व प्रबंधन, कार्य प्रबंधन, आपदा प्रबंधन, संचारकौशल प्रत्यायोजन शक्तियों से संबंधित था ।

कुलपति तथा अन्य अतिथियों का समापन संदेश :-

माननीय कुलपति ने समापन सत्र में सभी प्रतिभागियों से चाहे वे किसी भी विषय से संबंधित हो उन्हें अपने जीवन में संस्कृत को आमंत्रित करने का बहुत मूल्यवान संदेश दिया था । यह भारतीय संस्कृति की उत्थान, मूल्य आधारित शिक्षा को प्रोत्साहन, भविष्य में छात्र पीढियों को बेहतर जीवन प्रदान करने, तथा और भी प्रभावात्मक क्षेत्रीय भाषाओं के स्वयं भाषाई कौशलों द्वारा एक सुधारात्मक संस्कृत ज्ञान देने की उद्देश्य से किया गया है । अतः उन्हें लगता है कि भारतीय समाज सुसंस्कृत वातावरण का शुभ सार्वभौमिक भाइचारे का रास्ता देख रहा है । उन्होंने यह शिबिर का अंत नहीं बल्कि सभी के जीवन का शुभारंभ तथा जीवन पर्यं त आत्मसात, अहसास, अभ्यास और संचारण प्रक्रिया द्वारा संस्कृत के माध्यम से सही इंसान बनने की बात पर बल दिया ।

रुद्रय्या, केवी 1, तिरुपति के प्रभारी प्रधानाचार्य ने भारतीय संस्कृति की रक्षा हेतु, हमें संस्कृत सीखने और संस्कृत की संरक्षण पर बल दिया । उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति को प्राथमिक स्तर से संस्कृत को नियमित विषय बनाने का शपथ लेने के लिए कहा ।

प्रो. के. आर.एस. मेनान, तत्कालीन कुलसचिव ने भारतीय संस्कृति को उपयोग कर फेंकने की संस्कृति नहीं माना बल्कि प्रयोग कर बढ़ाने की संस्कृति माना । मध्य युग में संस्कृत साहित्य के अधिकांश भागों को गलत समझा। इसलिए उन्होंने उनभागों को पुनः एक बार पढ़कर सही ढंग से भावी पीठी को प्रेषित करने की सुझाव दिया । आधुनिक शिक्षा तीन, आर एस - जरूरतों पर बल देता है वह है - पठन (Reading), लेखन (Writing) और गणित (Arithmetic) । संस्कृत शिक्षा और चार आर एस यानी की अधिकार, उत्तरदायित्व, संबंध और मनोरंजन के बिना

मानव जीवन व्यर्थ है ।

प्रो. राधाकांत ठाकुर, शैक्षिक संकाय प्रमुख ने आधुनिक शिक्षा को सभी समस्याओं का श्रोत तथा मानवीय रिश्तों का बाधक तत्व माना । एक आधुनिक शिक्षित व्यक्ति अपने माता पिता का आदर नहीं करता, जब कि संस्कृत शिक्षा मानवीय मूल्यों को मजबूत बनाता है । यह शिक्षा सभी मानव समस्याओं का हल करता है ।

श्रीमती पी. विजयराजेश्वरी, केवी 2, वायुसेना अकादमी, हैदराबाद ने विद्यापीठ के निर्मल परिसर में छाये हुए शांति पूर्ण वातावरण को देखकर उन्हें गुरुकुल प्रणाली का स्मरण आ गया जहाँ संस्कृत का ज्ञान दिया जाता था। इसलिए उन्हें विद्यापीठ को ''आधुनिक गुरुकुलम'' संज्ञा से वर्णन करना सब से उपयुक्त लगता है ।

वी. श्रीकृष्ण, पीआरटी, तिरुमलगिरि - इस शिबिर के माध्यम से उन्होंने हमारी भारतीय संस्कृति और मूल्यों को सीखने तथा संस्कृत सीखने की आवश्यकता को समझाने की प्रयास किया । वर्तमान में जर्मन के केंद्रीय विद्यालयों में संस्कृत को वैकल्पिक विषय बनाया है । उन्होंने कहा कि संस्कृत को नियमित भाषा बनना है, न कि एक विदेशी भाषा की जर्मन के जैसे वैकल्पिक।

इशांत नीरद, पीआरटी (संगीत) एर्नाकुलम-

संस्कृत सीखना आज की आवश्यकता है । संस्कृत हमारी भारतीय संस्कृति का आधार है । हमारी संस्कृति दुनिया के सभी संस्कृतियों से महान है । संस्कृत हमें एक नई दिशा देता है । संस्कृत हमारी सभी समस्याओं का महत्वपूर्ण समाधान है ।

आ. ''नीलाचल और सिंहाचल का एक तुलनात्मक अध्ययन - शेषाचल के विशेष संदर्भ में'' विषय पर आयोजित द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के परिसर में 2 और 3 सितंबर 2013को योगमंदिरम में उत्कल पीठ द्वारा ''नीलाचल और सिंहाचल का एक तुलनात्मक अध्ययन - शेषाचल के विशेष संदर्भ में'' विषय पर आयोजित द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजन किया गया था । डा. राधागोविंद त्रिपाठी और डा. ज्ञान रंजन पंडा संगोष्ठी के समन्वयक तथा सह समन्वयक थे ।

उद्घाटन सत्र :-

दिनांक 2.11.2013 10 बजे प्रशासनिक भवन के सभागार में उद्घाटन सत्र का आयोजन किया गया । यह विद्यापीठ के वेद पंडितों द्वारा किए गए वैदिकी प्रार्थना के साथ आरंभ किया गया । इस अवसर पर श्री श्री श्री बाबा सच्चिदानंद दास स्वामीजी महाराज, श्री जगन्नाथ चेतना गवेषण प्रतिष्ठानम्, पुरी के अध्यक्ष मुख्य अतिथी राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के प्रो. हरेकृष्ण शतपथी, कुलपति तथा समारोह की अध्यक्षता की । तीस से अधिक विद्वानों ने संगोष्ठी में भाग लेकर अपना शोध पत्र श्री नीलाचल,

सिंहाचल और शेषाचल क्षेत्र पर प्रस्तुत किया । डा. सत्यनारायण आचार्य गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया तथा डा. ज्ञानरंजन पण्डा धन्यवाद भाषण अर्पित किया था । डा. राधागोविंद त्रिपाठी उद्घाटन सत्र के संयोजक थे ।

संगोष्ठी की सत्रवार विवरण - दिनांक 2.9.2013 :-

पहला सत्र - 10.00 (उद्घाटन) दूसरा सत्र सुबह - 11.30 बजे से दुपहर 1.00 बजे

श्री रवींद्रनाथ प्रतिहारी - सत्र के अध्यक्ष : डा. निरंजन मिश्र सत्र के समन्वयक

प्रपत्र प्रस्तुतकर्ता -

श्री असिट महंती, श्री बाबा एस.दास स्वामीजी महाराज, अध्यापक सुनील रथ, श्रीरामचंद्र दास महापात्र, श्रीमती श्रद्धांजली कानूनगो, श्री रवींद्रनाथ पतिहारी ।

तीसरा सत्र : दुपहर 2.30 बजे से शाम 5.30 बजे

प्रो. जी.एस.आर. कृष्णमूति - सत्र के अध्यक्ष

डा. सी. रंगनाथन - सत्र के समन्वयक

प्रपत्र प्रस्तुतकर्ता -

प्रो. सी. ललिताराणी, डा. आर.सदाशिवमूर्ति, डा. के. राजगोपालन, डा. सितांशु भूषण पंडा, डा. सोमनाथ दास, डा. सुधांशु शेखर महापात्र, डा. निरंजन मिश्र, डा. परामिता पण्डा, डा. श्वेतापद्मा शतपथी, डा. जे.बी. चक्रवर्ती, डा. भरत भूषण रथ, डा. तपन कुमार घडाई, डा. प्रदीप कुमार बाघ, श्री संतोष माझी ।

दिनांक - 03.09.2013 - चौथा सत्र - सुबह 10.00 बजे से सुबह 11.30 बजे.

डा. नरेश चंद्र दास - सत्र के अध्यक्ष, डा. अजय कुमार नंदा - सत्र के समन्वयक ।

प्रपत्र प्रस्तुतकर्ता -

श्री सूर्यनारायण महापात्र, ई.आर. बलदेव सिंहरी, श्री पूर्णचंद्र गोच्चीकर, श्री हरेकृष्ण प्रतिहारी, डा. नरेश चंद्र दास पाँचवे सत्र - सुबह 11.30 बजे से 01.00 बजे

डा. सत्यनारायण आचार्य - सत्र के अध्यक्ष, डा. भरत भूषण रथ - सत्र के समन्वयक ।

प्रपत्र प्रस्तुतकर्ता -

डा. सुरेंद्र कुमार मिश्र, डा. सिद्धेश्वर महापात्र, डा. कन्हूचरण पंडा, श्री संतोष कुमार पात्र, डा. करुणाकर प्रधान, श्री बिस्वजीत सेनापति, महंता श्री रामकृष्ण दास ।

छठवाँ सत्र - दुपहर - 02.30 पजे से शाम 04.00 बजे तक ।

डा. राणी सदाशिव मूर्ति - सत्र के अध्यक्ष, डा. श्वेत पद्मा शतपथी, सत्र की समन्वयिकाय ।

प्रपत्र प्रस्तुतकर्ता -

डा. सत्यनारायण आचार्य, डा. राधागोविंद त्रिपाठी, डा. रूरू कुमार महापात्र, डा. ज्ञानरंजन पण्डा, डा. जय प्रकाश, डा. दिलीप कुमार मिश्र, डा. अजय कुमार नंदा, के. लीना चंद्रा, डा. संतोष आचार्य, डा. विद्याधर

हरिचंदन, श्री प्रसन्न कुमार पण्डा, डा. राजश्री पाड़ी ।

नीलाचलसिंहाचलयोः ऐतिहासिकपृष्ठभूमिः, सिंहाचलमन्दिरस्य मूर्त्तितत्त्वम्, सिंहाचलमन्दिरस्य कला-स्थापत्य-भास्कर्याणि, नीलाचलसिंहाचलयोः नृसिंहोपासना, नीलाचलसिंहाचलोपासनायां श्रीरामानुजः, नीलाचलस्य शास्त्रीय-भित्तिभूमिः, सिंहाचलमन्दिरे सेवा सेवकाश्च, सिंहाचलमन्दिरे दैनिकनीतिः, सिंहाचले ओडिआ-शिलालेखः, सिंहाचलमन्दिरे उत्सवाः, सिंहाचलमन्दिरम् उत्कलीय-राजवंशाश्च, सिंहाचल-नीलाचलोपासनायां वैचित्र्यम्, सिंहाचलमन्दिरस्य शास्त्रीयभित्तिः, माहारी-सानिसम्प्रदाययोः तुलनात्मकमध्ययनम्, सिंहाचलमन्दिरं प्रति श्रीनरहरितीर्थस्य अवदानम्, नीलाचलस्य रथोत्सवः शेषाचलस्य ब्रह्मोत्सवश्च, शेषाचलस्य प्रशासनिकव्यवस्था, शेषाचलमन्दिरे रीति-नीति-उत्सवाः, शेषाचलमन्दिरस्य कला स्थापत्यञ्च, शेषाचले वैष्णवोपासना, नीलमाधवः वेङ्कटेशश्च हमारे देश के विभिन्न स्थानों से आए हुए विद्वानों ने कुछ विषयों पर तुलनात्मक विचार विमर्श तथा वाद विवाद किया था ।

समापन सत्र :

समापन सत्र का आयोजन दिनांक 03.09.2013 दोपहार में आयोजित किया गया और इस सत्र के मुख्य अतिथि के रूप में श्री जगन्नाथ चेतना प्रतिष्ठान, पुरी के महासचिव श्री रवीन्द्र प्रतिहरी ने भाग लिया और दर्शकों के लिए बहुमूल्य संदेश दिया । इस समारोह के अध्यक्ष के रूप में प्रो. हरेकृष्ण शतपथी रहकर प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए । उडीसा चैयर के अतिरिक्त संयोजक डा. ज्ञानरंजन पंडा ने समारोह का आयोजन किया तथा डा. राधागोविंद त्रिपाठी द्वारा धन्यवाद समर्पण किया गया ।

इ. 'आधुनिक भारत में विवेकानंद के युग' पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी -

'आधुनिक भारत में विवेकानंद के युग' पर द्वि दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 23 और 24 दिसंबर 2013 को राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति के परिसर में प्रतिष्ठित आध्यात्मिक गुरु और ऋषि को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए - श्री स्वामी विवेकानंद के जन्मदिन के सुअवसर पर आयोजन किया गया था । डा. राणी सदाशिव मूर्ति संगोष्ठी के संजोयक थे ।

सुबह 10.00 बजे दिसंबर 23 को आयोजित उद्घाटन सत्र में रामकृष्ण मठ, कड़पा के श्री श्री अचितानंद स्वामी मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे । रामकृष्ण समिति, तिरुपति के अध्यक्ष प्रो. पी.वी. रेड्डी ने गौरव अतिथि का स्थान ग्रहण किया राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति के कुलपति प्रो. हरेकृष्ण शतपथी इस समारोह के अध्यक्ष थे। राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति के शैक्षिक संकाय प्रमुख, प्रो. राधाकान्त ठाकुर ने अतिथियों का स्वागत किया।

देश के विभिन्न कोनों से 50 से अधिक विद्वानों ने भाग लिया और स्वामी विवेकानंद के जीवन इतिहास और

दर्शन पर अपने लेख प्रस्तुत किए और ''विवेकानंद के अमूल्य उपदेशों के माध्यम से युवा के राष्ट्रीय चरित्र'' पर प्रकाश डाला । भारतीय सनातन धर्म, विभिन्न व्यक्तिगत और सामाजिक आत्मज्ञान के पहलुओं, विश्वबन्धुत्व, वैश्विक कल्याण आदि विषयों पर विचार किया गया । उद्घाटन और समापन सत्र को मिलाकर इस समारोह को कुल आठ सत्रों में विभाजित किया गया ।

समापन सत्र राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति, शैक्षिक भवन के कमरा नं 116 में 4.30 बजे मंगलवार 24.12.2013 को आयोजित किया गया था । श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति - राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त प्रो. आलेख चन्द्र सारंगी, चिन्मय मिशन, कड़पा के अध्यक्ष श्री श्री श्री शौनक चैतन्यजी, श्री वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय के पूर्व औप संस्थापक कुलपति प्रो. एस. सुदर्शन शर्मा, क्रमशः सम्मान मुख्य अतिथि, विशेष अतिथि एवं अतिथि के रूप में विराजमान थे । प्रो. हरेकृष्ण शतपथी समारोह की अध्यक्षता की और डा. सत्यनारायण आचार्य समारोह के संयोजक थे ।

ई. अंग्रेजी और संस्कृत के कथा साहित्य पर राष्ट्रीय संगोष्ठी -

अंग्रेजी और संस्कृत के कथा साहित्य पर द्वि दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 3 और 4 सितंबर 2013 को राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति के अंग्रेजी विभाग द्वारा आयोजित किया गया था । इस संगोष्ठी में देश के विभिन्न भागों से लगभग 50 विद्वानों ने भाग लिया ।

3 सितंबर 2013, सुबह 10.00 बजे को संबलपुर विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर प्रो. ए.सी. शुक्ला (अंग्रेजी और तुलनात्मक साहित्य) के भाषण के द्वारा संगोष्ठी का उद्घाटन किया गया और उन्होंने मुख्य अतिथि का स्थान ग्रहण किया । राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के माननीय कुलपति प्रोफेसर हरेकृष्ण शतपथी की अध्यक्षता में समस्त कार्यक्रम का संचालन हुआ । संगोष्ठी का आरंभ प्रो. ए.सी. शुक्ला के मुख्य भाषण के साथ हुआ । प्रो. शुक्ला ने केवल कथा की परिभाषा और 20 वीं. और 21 वी. सदी में विभिन्न स्कूलों में प्रचलित कथा साहित्य और अरस्तू के समय और इसके बाद कथा साहित्य आदि पर प्रकाश डाला । राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के प्रभारी कुलसचिव, प्रो. राधाकान्त ठाकूर ने बाणभट्ट की कादम्बरी को प्रथम उपन्यास कहकर दर्शकों को उस ओर आकृष्ट किया । विद्यापीठ के माननीय कुलपति प्रो. हरेकृष्ण शतपथी ने संस्कृत साहित्य के साथ - साथ भारत के चारों क्षेत्रों के लिए विशेष शैलियों की विविधता में विद्यमान आख्यान के प्रकारों पर प्रकाश डाला ।

आख्यानकार 'क्या कहते हैं' यही नहीं कैसे कहते हैं आदि विषयों पर भी उन्होंने विश्लेषण किया । कार्यक्रम के पहले, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के अंग्रेजी विभाग की अध्यक्षा प्रो. वी. सुजाता ने सभा का स्वागत किया और डा. आर. दीप्ता संगोष्ठी की संयोजिका ने संगोष्ठी के उद्देश्यों पर संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया ।

उद्घाटन सत्र के बाद प्रथम आरंभिक सत्र में प्रो. वी. रंगन, अंग्रेजी विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं आचार्य

नागार्जुन विश्वविद्यालय, गुंटूर ने अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहा कि साहित्य संबंधी सिद्धान्त किस प्रकार प्रभावित कर रहे हैं और ये हमारे लिए किस तरह आवश्यक हैं । हमारी (भारतीय) संस्कृत परंपरा को पहचानते हुए पश्चिमी पंरपरा से सामंजस्य करना । अगले वक्ता के रूप में प्रो. विश्वनाथ राव, आन्ध्र विश्वविद्यालय के पूर्व अंग्रेजी विभागाध्यक्ष ने पूर्व और पश्चिमी महाकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। इन सब वक्ताओं द्वारा उठाए गए मुद्दों पर विचार - विमर्श किया गया ।

दोपहर के सत्र में प्रो. टी. भारती अंग्रेजी विभाग के प्रोफेसर, श्री पद्मावती महिला विश्वविद्यालय की अध्यक्षता में 11 लेख प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किये गये । इन 11 प्रपत्रों पर वरिष्ठ आचार्यों द्वारा विचार - विमर्श एवं सूचनात्मक सुझाव प्रस्तुत किये गये हैं ।

संगोष्ठीं के दूसरे दिन अर्थात् 4 सितंबर 2013 को प्रो. जी.एस.आर. कृष्णमूर्ति, साहित्य विभाग के प्रोफेसर, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति और प्रो. वाई. सोमलता अंग्रेजी के प्रोफेसर स्नातकोत्तर केन्द्र, काकिनाडा, आन्ध्रविश्वविद्यालय की अध्यक्षता में दो समानंतर सत्र प्रपत्र पढने के लिए शुरू हुए । इन दो सत्रों में 22 प्रपत्र प्रस्तुत किये गये थे । यह प्रो. वी. रंगन की अध्यक्षता में दूसरा पूर्ण अधिवेशन के द्वारा किया गया । इस सत्र में प्रो. वी. जयसिंह, अंग्रेजी के प्रोफेसर, सेवा निवृत्त प्रधानाचार्य एस.सी.एस. कालेज, पुरी ने संस्कृत फिल्म साहित्य और आदिशंकराचार्य आदि विषयों पर चर्चा की थी । प्रो. वाई. सोमलता ने लिखने की प्रक्रिया पर अपने विचारों को प्रस्तुत किया । प्रो. एस. रेवती, संस्कृत के आचार्य, मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई ने वेदकाल से लेकर वर्तमान तक के विभिन्न प्रकार के संस्कृत कथाकारों पर प्रकाश डाला प्रो. जी.एस.आर. कृष्णमूर्ति ने विशाखदत्त द्वारा रचित प्रसिद्ध नाटक 'मुद्राराक्षस' पर विश्लेषण किया । दोपहर के सत्र में 11 प्रपत्र प्रस्तुत किये गये और प्रो. वी. जयसिंह इस सत्र के अध्यक्ष थे । इस सत्र के समस्त प्रपत्रों का प्रस्तुतीकरण बौद्धिक विचारों के साथ हुआ ।

संगोष्ठी का समापन सत्र 4.30 बजे प्रो. गंगाधर मिश्र, निदेशक, उच्चशिक्षा, उडीसा, मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे । विद्यापीठ के कुलपति प्रो. हरेकृष्ण शतपथी समारोह के अध्यक्ष थे । प्रो. मिश्र ने अपने भाषण में यह बताया कि कथा विश्लेषण में सिद्धान्तों की आवश्यकता है या नहीं । प्रो. हरेकृष्ण शतपथी ने अपने अध्यक्षीय भाषण द्वारा विद्वानों और प्रपत्र वाचकों को आकृष्ट किया और उनकी प्रतिभा की प्रशंसा की थी । श्री के. बद्रीनाथ, शोधार्थी द्वारा विद्वानों, प्रपत्रवाचकों और अंग्रेजी विभाग की ओर से संगोष्ठी में जितने भी शामिल थे, उन सभी को धन्यवाद समर्पित किया गया ।

उ. ''अखिल भारतीय संस्कृत महिला विदूषियों की सम्मेलन - राष्ट्र के निर्माण में संस्कृत महिला विदूषियों की भूमिका'' 07.03.2014 और 08.03.2014 :-

सम्मेलन के उद्देश्य :

संस्कृत साहित्य, वेद, वेदांग, धर्मशास्त्र, सृति, पुराण, महाकाव्य, खंडकाव्य, गद्यकाव्य, रूपक इत्यादि से ओतप्रोत है । महिलाओं को ''संस्कृत साहित्य में सामाजिक नींव और हमारी संस्कृति के संरक्षक के रूप में चित्रित किया गया है । वेदों में भी अपाल, गर्गी के रूप में महिलाओं को महत्त्वपूर्ण स्थान मिलता है । समाज में भी उनको उच्च स्थान मिलता है । धर्मशास्त्रों में भी महिलों पर प्रकाश डाला गया तथा रामायण एवं महाभारत में चित्रित सीता,

द्रौपदी और अन्य स्त्रियाँ समस्त पीढियों के लिए आदर्श और अनुकरणीय महिलाओं के रूप में विद्यमान है । वे सच्चाई, सहिष्णुता और शुद्धता एवं अन्य महान गुण अथवा मूल्यों के प्रतीक हैं । महाकाव्य, खंडकाव्य और नाटक भी इनके ऊपर निर्भर हैं । शकुन्तला, पार्वती, दमयंती, सुदक्षिणा आदि भी आदर्श महिलाओं में शामिल हैं ।

सामाजिक लक्ष्य के मार्ग में पुरुषों को ही नहीं महिलाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान है । संस्कृत साहित्य जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं और उनके बहु आयामी व्यक्तित्व की भूमिका पर बल देता है । ''अखिल भारतीय संस्कृत महिला विद्वानों का सम्मेलन'' के उद्देश्य है कि राष्ट्र के निर्माण में महिलाओं की भूमिका का निर्धारण और वे समाज को किस तरह प्रभावशाली बनाता है, उसका उजागर करना है ।

प्राचीन संस्कृत साहित्य में महिलाओं को भारतीय समाज मैं जो सम्मानित स्थान दिया गया है उस से भारतीय परंपरा को दर्शाता है । भारतीय संस्कृति में महिला को देवी, सरस्वती/ लक्ष्मी के रूप में स्वीकार किया जाता है । जहाँ पश्चिमी संस्कृति के विपरीत, महिला पूजा के साथ व्यवहार और हमारी परंपरा के अनुसार समस्थ शक्तियों के साथ संपन्न होती है । इस प्रकार यह सम्मेलन का विषय समकालीन समय के लिए प्रासंगिक विषय धारण करने के लिए उपयुक्त था ।

राष्ट्र के निर्माण में महिला संस्कृत विद्वानों की भूमिका :

उद्घाटन :

07.03.2014 को आयोजित स्ममेलन का उद्घाटन समारोह प्रो. पी. गीरवाणी, पूर्व कुलपति, श्री पद्मावती महिला विश्वविद्यालय, तिरुपति द्वारा उद्घाटित किया गया । श्रीमती डा. जयन्ती मनोहर, वैदिक साहित्य में प्रसिद्ध विद्वान, अमृतवाहिनी के प्रबन्ध न्यासी (ट्रस्टी) ने सम्मानित अतिथि के रूप में भाग लिया । डा. जयंती मनोहर ने वेदों में कही गयी गर्गी, अत्रि महिलाओं के माध्यम से संस्कृत साहित्य में महिला विद्वानों की भूमिका और उसके द्वारा राष्ट के निर्माण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला और प्रो. हरेकृष्ण शतपथी जी की अध्यक्षता में समस्त कार्यक्रम का संचालन हुआ ।

03.03.2014 को समापन सत्र का आयोजन किया गया । प्रो. ललिता राणी, साहित्य विभाग के प्रोफेसर और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के समन्वयक, विशेष सहायता कार्यक्रम सम्मेलन के संयोजिका के रूप में थी और उनके प्रयासों द्वारा सफलता के लिए प्रयास किया गया ।

II. पाठ्यसहगामी गतिविधियाँ

(अ) वाग्वर्धिनी परिषद्

वाग्वधिनी परिषद् विद्यापीठ का एक पाठ्य सहगामी गतिविधि है जो छात्रो को संगोष्ठियाँ, प्रश्नोत्तरी, भाषण आदि मे भाग लेने की अनुमति देता है। शैक्षिक सत्र 2013-14, विद्यापीठ परिसर के इंडोर स्टेडियम मे 24-07-2013 शाम 4.00 बजे सफलतापूर्वक उद्घाटन किया गया। प्रो.एच.के.शतपथी, कुलपति, मुख्य अतिथि और प्रो राधाकांत ठाकुर, शैक्षिकशंकाय प्रमुख, अध्यक्ष थे। डाँ.सी.रंगनाथन और डाँ. भरत भूषणरथ परिषद के समन्वयक और सह-समन्वयक तै, जिन्होंने संयुक्त रूप से समारोह का संयोजन किया था।

इस साल वाग्वर्धिनी परिषद् ने 15 साप्ताहिक प्रतियोगिता सत्रों का आयोजन सफलतापूर्वक किया और छात्रों मे संस्कृत बोलने की क्षमता को विकसित करने केलिए विशेष टिप्स बताये गए।

विद्यापीठ के छात्रों ने पूरे भारत में 10 विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेकर पुरस्कार और पदक प्राप्त किए।

विद्यापीठ के छात्रों ने निम्नलिखित प्रतियोगिता ओ मे भागलिया -

1. अखिल भारतीय प्रतियोगिता, लालबहादुर शास्त्री विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के श्लोकन्त्याक्षरी मे तृतीय पुरस्कार।
2. इस्काँन, तिरुपति, जिल स्तरीय प्रतियोगिता में द्वितीय स्थाना।
3. पुरी, उडीसा के जय उत्सव मे तृतीय स्थान।
4. राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान की राज् स्तरीय प्रतियोगिता तिरुपति मे प्रथम स्थान।
5. कलिदास समारोह, विक्रमविश्वविद्यालय, उज्जैन में प्रथम स्थाना।
6. श्री वेंकटेश्वर वैदिक विस्वविद्यालय, युवामहोत्सव, तिरुपति मे द्वितीय स्थान।
7. शास्त्रार्थसभा, त्रिपुनान्तर, केरल में द्वितीय स्थान।
8. वर्धा शिक्षा मंडल प्रतियोगिता में भाग लिया।
9. व्यास वारणासी महात्सव मे, प्रथम स्थान।
10. भोपाल परिसर के राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, अखिल भारतीय शास्त्रार्थ स्पर्धा मे छठा स्थान।

आयोजित कार्यक्रम-

वाग्वर्धिनी परिषद् ने राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के 52 आखिल भारतीय राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं का

आयोजन 15 तथा 16 दिसंबर 2013 को आयोजित किया था। पूरे साहस के साथ 8 वी अखिल भारतीय संस्कृत छात्र प्रतिभा महोत्सव का आयोजन 22 से 25 जनवरी, 2014 किया गया था। विद्यापीठ की वार्षिक साहित्यिक प्रतियोगिता का आयोजन सफलतापूर्वक किया गया था।

52 वे अखिल भारतीय राज्य स्तरीय छात्रों के शास्त्र भाषण प्रतियोगिता -

राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति ने अपने इतिहास मे पहली बार राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के 52 वें अखिल भारतीय राज्य स्तरीय प्रतियोगिता का आयो जन किया। यह सफलतापूर्वक राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति मे 15 और 16 दिसंबर 2013 को आयोजित किया गया था। आंध्र प्रदेश के विभिन्न प्रांतों के चार संस्थाओ ने इस कार्यक्रम मे भाग लिया था। विद्यापीठ के छात्रो को प्रतियोगिता ओ मे अधिक से अधिक स्थान प्राप्त हुए थे।

माननीय कुलपति प्रो.एच.के शतपथी ने पवित्र दीप प्रज्वलन कर समारोह का उद्घाटन किया। उत्होने अपने बीज भाषण शास्त्र महत्व संबंधित कौशलो तथा तकनीको पर जोर दिया। उन्होने छात्रो को तनीकी पहलुओ द्वारा केई शास्त्रिक विषय पर विशेष रूप से बोलने को प्रेरित किया। कुलसचिव प्रो. आर. के ठाकुर को सम्माननीय अतिथि के रूप मे आमत्रित किया गया था।

प्रो.जी.एस.आर.कृष्णमूर्ति सत्र की अध्यक्षता किया था। इस कार्यक्रम के संयोजक डाँ.सी.रंगनाथन, वाग्वर्धिनी परिषद के समन्वयक थे। धन्यवाद भाषण डाँ भरतभूषण रथ, वाग्वर्धिनी परिषद के सह समन्वयक द्वारा दिया गया। आंध्रप्रदेश और तमिलनाडु के विभिन्न प्रातो से निर्णायको को आमंत्रित किया गया था। प्रतिभागी संस्थान-

1. राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति
2. एस.वी.वैदिक विश्वविद्यालय, तिरुपति
3. सुरा भारती सेवापीठ्म, कडपा
4. सुरा भारती सेवापीठ्म, मैदकूर

लगभग 35 से 40 प्रतिभागियों ने बहुत ही उत्साह के साथ इस कार्यक्रम मे भाग लिए थे। इस प्रतियोगिता मे 21 घटनाओं आयोजित की गई थी। छात्रों को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति ने इस प्रतियोगिता मे 19 से अधिक पुरस्कार प्राप्त किए थे।

समापन सत्र - संस्कृत विद्वान दुनिया के चार गणमान्य व्यक्तियों के साथ मनाया गया । इन में प्रो. हरेकृष्ण शतपथी, कुलपति, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, प्रो. एस.सी. सारंगी, पूर्वकुलपति, कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक, नागपुर, सुखदेव भोई, संकाय प्रमुख, साहित्य विभाग, लालबहदुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली थे । पुरस्कार और प्रमाण पत्र विजेताओं और प्रतिभागियों के लिए प्रस्तुत किए गए ।

(आ) मैक्स मुलर क्लब

मैक्स मुलर क्लब जो अंग्रेजी विभाग के अध्यापकों के मार्गदर्शन में संस्कृत छात्रों में संगठना कौशल प्रदान करने के साथ साथ, भाषाई कौशल में सुधार लाने की एक स्वेच्छिक संगठन है । उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति करने की प्रयोजन से किया गया । शैक्षिक वर्ष 2013-14 में 8 सत्रों में विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया । क्लब का उद्घाटन दिनांक 15 नवंबर 2014, विद्यापीठ के कुलपति प्रो. हरेकृष्ण शतपथी द्वारा किया गया । उन्होंने अपने

भाषण में अंग्रेजी सीखने के फायदों के बारे में विस्तारपूर्वक बताते हुए छात्रों को अंग्रेजी सीखने के लिए प्रोत्साहित किया ।

इस शैक्षिकवर्ष में काफी देर से क्लब का आरंभ करने पर भी बहुत ही उत्साह के साथ अगले ही दिन अपने साप्ताहिक गतिविधियों को शुरू कर दिया अर्थात 16.11.2013 'एक क्षण के लिए बोलो' गतिविधि का आयोजन की गई थी । डा. भरत भूषण रथ, सहायक प्रोफेसर, साहित्य विभाग निर्णायक के रूप में आये थे । शास्त्री तृतीय वर्ष के किरण ए. भट्ट और इमेजिन महाराणा संचालक थे ।

23 नवंबर 2013, दूसरे सत्र प्राकशास्त्री के लिए ''मेरे स्कूल के दिनों'' शास्त्री और आचार्य स्तर के लिए ''हीरो सचिन'', तथा ''विफलताओं सफलता के लिए कदम हैं'' विषयों पर भाषण प्रतियोगिता को आयोजित किया गया था । डॉ. प्रताप पोतन, अंग्रेजी के अतिथि व्याख्याता निर्णायक थे । साई संतोष और नागसत्य श्री संचालक थे ।

30 नवंबर 2013, आयोजित क्लब का तीसरा सत्र निबंध लेखन प्रतियोगिता था । प्राकशास्त्री के लिए ''पर्यावरण बचाव'', शास्त्री तथा आचार्य के लिए 'क्षेत्रीय पार्टियों की बाढ-भारत की एकता के लिए खतरा'' विषय दिए गये । अंग्रेजी विभाग के प्रोफेसर वी. सुजाता निर्णायिक के रूप पधारी थी । जब की शास्त्री तृतीय वर्ष की माधुरी कामेश्वरी संचालिका थी ।

क्लब द्वारा 14 दिसंबर 2013 को आयोजित चौथे सत्र के दो बहुत ही रोचक प्रतियोगिताएँ थी । प्राकशास्त्री स्तर के लिए ''कहानी सुनना'' संचार कौशल में प्रतिस्पर्धा थी । शोध छात्रा आरती शर्मा, आचार्य छात्रा वैष्णवी तथा श्रवणा राजन प्रतियोगिता के न्याय निर्णेता थे । शास्त्री तृतीय वर्ष के इमेजिन महाराणा और समिरण दास संचालक थे।

21.12.2013 को आयोजित पाँचवें सत्र एक अद्वितीय गतिविधी थी । चार्लस डिकेंस के उपन्यास पर आधारित फिल्म, बीबीसी प्रोडक्शन ''ओलिवर ट्विस्ट'' दिखाई गई । तदुपरांत प्रतिभागियों को फिल्म पर एक आलोचनात्मक टिप्पणी लिखने के लिए कहा गया । सर्वश्रेष्ठ लेख को पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया । माधुरी कामेश्वरी और दिनेश शर्मा सत्र के संचालक थे ।

क्लब का छठा सत्र, 15 फरवरी 2014 को आयोजित किया गया था । उस में निम्न लिखित प्रतियोगितायें थी । प्राकशास्त्री छात्रों के लिए शब्दावली खेल, शास्त्री और आचार्य स्तर के लिए 'आजादी के बाद भारत स्थायी रूप से कुछ हासिल भी किया है' विषय पर वादविवाद आयोजित किया गया । छात्र उत्साह के साथ प्रतिस्पर्धा में भाग लिए थे । डा. चंदूलाल, गणित के सहायक आचार्य सत्र के निर्णायक थे । साई संतोष और माधुरी कामेश्वरी संचालक थे ।

22.2.2014 आयोजित सातवाँ सत्र में सभी छात्रों के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता था । कंप्यूटर विभाग के श्री वी. सेतुराम, निर्णायक थे । डी.टी.वी. सीताराम और कमेलिआ गुहा संचालक थे ।

आठवाँ सत्र, 27 फरवरी, 2014 को आशुभाषण प्रतियोगिता आयोजित किया गया । यह सभी स्तरों के लिए था । रामचंद्रन स्मृति और सुरेश संचालक थे । डा. कल्याण शास्त्री, सहायक आचार्य, शाब्दबोधा निर्णायक थे।

शैक्षिक वर्ष 2013-14 मैक्समुलर अंग्रेजी क्लब का समापन समारोह 18.03.2014 को आयोजित किया गया था । विद्यापीठ के कुलपति मुख्य अतिथि थे । उन्होंने विभिन्न सत्र के विजेताओं को पुरस्कारों से पुरस्कृत किया। लगभग 52 छात्रों को पुरस्कार प्रदान किया था ।

(इ) तुलसीदास हिंदी परिषद

तुलसीदास हिंदी परिषद को शैक्षिक वर्ष 2013-14 के 14.09.2013 जो बहुत गौखान्वित तिथि हिंदी दिवस के दिन उद्घाटित किया गया । प्रो. कृष्ण कचंन शर्मा, अणुविभाग, स्विम्स, समारोह के मुख्य अतिथि थे । इस अवसर पर प्रो. शर्मा विशेष रूप से दक्षिण भारतीयों को हिंदी सीखने के लाभों पर सविस्तार रूप से बताया । प्रो. राधाकंत ठाकुर, विद्यापीठ तत्कालीन कुलसचिव सम्माननीय अतिथि थे । प्रो. जी.एस.आर. कृष्णमूर्ति, साहित्य विभाग तथा शैक्षिक समन्वयक ने अपने अध्यक्षीय भाषण में परिषद के उद्देश्य पर अपने विचारों को व्यक्त किया । डा. केशव मिश्र गणमान्य व्यक्तियों को समारोह में स्वगत किया। डा. लतामेंगेश, सहायक आचार्य, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ और तुलसीदास हिंदी परिषद की संयोजिका ने धन्यवाद भाषण अर्पण किया था । डा. मोहन नायुडु समारोह के संचालक थे। वर्ष 2013-14 के दौरान दिनांक 26 मार्च 2014 को समापन समारोह का आयोजन किया गया था। प्रो. एच. के. शतपथी, कुलपति, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ इस उत्सव के मुख्य अतिथि थे। प्रो. आर.के. ठाकुर, शैक्षिक संकाय प्रमुख अध्यक्ष थे। इस अवसर पर विभिन्न सत्रों के पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए।

(ई) अन्नमय्या साहित्य कलापरिषद

अन्नमाचार्य साहित्य कला परिषद, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ छात्रों की साक्षरता परिषदों में से एक है । यह अपने गतिविधियों को वर्ष 2011 में आरंभ किया था । अन्नमाचार्य साहित्य कलापरिषद का मुख्य उद्देश्य संस्कृत छात्रों को तेलुगु भाषा में लेखन, पठन, तथा भाषण की भाषाई कौशलों में सुधार लाना है ।

शैक्षिक वर्ष 2013-14 के दौरान प्रो. रव्वा श्रीहरि, माननीय कुलपति, द्रविड विश्वविद्यालय, कुप्पम, दीप प्रज्वलन कर 4 अक्टूबर 2013 को तेलुगु भाषा को जानने की आवश्यकता पर छात्रों में जागरूकता फैलाने के लिए आयोजित किया गया था ।

प्रो. एस. सुदर्शन शर्मा, पूर्व कुलपति, श्री वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय, तिरुपति ने इस अवसर पर

अन्नमाचार्य जी को न केवल तेलुगु के प्रथम मानवआलेखाकर हैं बल्कि शानदार कलात्मकता, भावनायें तथा विचारों को व्यक्त करने वाले के रूप में उल्लेखित किया । वे कामुक तथा भक्ति दोनों उपभेदों को बराबर संभालने में अग्रणी थे। तदुपरांत प्रो. जी.एस.आर. कृष्णमूर्ति, शैक्षिक समन्वयक तेलुगु भाषा की महानता तथा महत्वपूर्णता को छात्रों को प्रबुद्ध किया ।

साल भर में कुल मिलाकर छात्र नौ बार परिषद में एकत्र होकर भाषण, निबंध, लेखन, वादविवाद, प्रश्नोत्तरी, कविता, पठन, एक पात्राभिनय आदि प्रतियोगिताओं को विभिन्न सत्र में आयोजित किया था ।

परिषद की गतिविधियाँ 28.03.2014 कुलपति, प्रो. हरेकृष्ण शतपथी जी के अध्यक्षता में समाप्त हुई थी। उन्होंने परिषद में भाग लिए सभी छात्रों को बधाई देते हुए तेलुगु भाषा में अपने ज्ञान और दक्षता में सुधार लाने की प्रयास करने के लिए कहा । तेलुगुविभाग तथा अन्नमाचार्य कला परिषद ने आधुनिक तेलुगु भाषा के प्रसिद्ध सुधारक और कीट खोजकर्ता श्रीगिडुगु राममूर्ति पंतुलु के 150वीं जन्म दिवस समारोह का आयोजन किया था ।

(उ) सांस्कृतिक कलापरिषद

सांस्कृतिक कला परिषद् का उद्देश्य विद्यापीठ के छात्रों में सांस्कृतिक कला, ज्ञान को विकसित करना है। इस वर्ष भी स्वतन्त्रता दिवस, संस्कृत सप्ताह समारोह, गणतंत्र दिवस और अखिल भारतीय संस्कृत प्रतिभा उत्सव आदि में कई सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया था। डा. आर. सदाशिव मूर्ति इस परिषद के संयोजक थे।

(ऊ) प्रयोजनमूलक संस्कृत :

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा संस्थापित यह प्रयोजनमूलक संस्कृत पाठ्यक्रम नोडाल केंद्र विश्वविद्यालय में चलाया जा रहा है। इस पाठ्यक्रम के केंद्र द्वारा शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाता है और अलग-अलग प्रयोजनमूलक संस्कृत विषयों पर समयानुसार संगोष्ठियों का आयोजन तथा राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण ज्ञान का विकास किया जाता है । इस केंद्र में आडियो दृश्य प्रयोगालय एवं ग्रंथालय है । यह केंद्र यज्ञ एकाग्रता, वैदिक संस्कार आदि पर आडियो-विडियो प्रलेखन आदि बनाया गया है। इस केंद्र द्वारा वैज्ञानिक आवरण से प्राक्-शास्त्री एवं शास्त्री छात्रों के लिए नियमित अध्यापन चलाया जाता है । यह प्रयोजनमूलक संस्कृत इकाई में अर्चकत्वं और पौरोहित्य में प्रमाण-पत्र डिप्लोमा पाठ्यक्रम चलाया जाता है।

(ऋ) सेतु पाठ्यक्रम

सेतुपाठ्यक्रम एक जोडने का पाठ्यक्रम है जो छात्रों को विशेष क्षेत्र या विषय में प्रवेश को चुनने में सक्षम बनानेवाला सुंदरतम पाठठ्यक्रम है ।

विभिन्न कार्यक्रमों में भर्ती हुए विद्यापीठ के छात्रों के लिए सेतु पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया।

शैक्षिक वर्ष 2013-14 के दौरान 5.7.2013 से 13.7.2013 तक 100 से अधिक छात्र विभिन्न शास्त्र

अर्थात्, साहित्य, व्याकरण, ज्योतिष्य, धर्मशास्त्र, वेदांत, विशिष्टाद्वैत वेदान्त, द्वैत वेदांत, मिमांसा, पुराण आदि के लिए आयोजित किया गया था । हमारे विद्यापीठ सम्मानित के आचार्य बाहर से भी विद्वानों ने विभिन्न विषयों पर कई व्याख्यान दिए । प्रो. पी.टी.जी.वाई. संपतकुमाराचार्युलु, न्याय विभाग के समन्वयक और डा. वी. उन्नकृष्णन नंपूतिरि, ज्योतिष्य विभाग के सहायक आचार्य, सह समन्वयक थे । समापन समारोह में प्रो. आर.के. ठाकुर, शैक्षिक संकाय प्रमुख ने छात्रों को प्रमाण पत्र वितरित किए ।

(ए.) प्रथम कुलाधिपति प्रो. एम.एम. पट्टाभिरामशास्त्री जी की स्मृति में आयोजित व्याख्यान माला :-

विद्यापीठ के प्रथम कुलाधिपति प्रो. एम.एम. पट्टाभिरामशास्त्री, मीमांसा और साहित्य के महान विद्वान के योगदान की स्मृति में संस्था ने पट्टाभिरामशास्त्री व्याख्यान माला का आरंभ किया था । इस योजना के तहत कई प्रख्यात विद्वानों को आमंत्रित किया गया । वर्ष के दौरान पट्टाभिरामशास्त्री व्याख्यानमाला 28 नवंबर 2013 को प्रो. किशोर कुणाल, पूर्वकुलपति, कामेश्वर सिंह दरभंगा विश्वविद्यालय, दरभंगा, और प्रो. शिवजी उपाध्याय, पूर्व कुलपति, उत्तर प्रदेश के संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वारणासी द्वारा दो विस्तार व्याख्यान दिये गए ।

III. पाठ्येतर गतिविधियाँ

(अ) खेलकूद प्रतियोगिता

वर्ष 2013-14 के सभी पाठ्यक्रमों में प्रवेश पूरा होने के बाद सभी छात्र-छात्राओं को हर रोज सुबह 6 बजे से 7:00 बजे तक प्रशिक्षण हेतु मैदान में उपस्थित रहने की सूचना दी जाती है। यह कार्यक्रम हर साल चलाया जाता है ताकि छात्र दक्षिण अंचल अंतर विश्वविद्यालय स्पर्धा और अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालय स्पर्धाओं को खेलने हेतु तैयार रहे। उसके बाद मुक्त व्यायाम हेतु सभी छात्र-छात्रोओं को इंडोर सभांगण में अलग-अलग खेलों का परिचयात्मक तैयारियाँ करवायी जाती है। ताकि विश्वविद्यालय प्रतियोगिताओं में भाग लेकर जीत हासिल करें।

इंडोर सभांगण सुबह 6:00 बजे से 8: 00 बजे तक और 3:00 बजे से 7:00 बजे तक शाम में खुला रहता है। ताकि विद्यापीठ से सभी कर्मचारी और छात्र अलग-अलग खेल उपकरणों से भरपूर फायदा उठाएं ।

खेलों में भाग लेने हेतु छात्रों को बहुविध व्यायाम शाला में जो निरन्तर व्यायाम कर अपने चित को खेलों में दोडता है उसी को अंतर विश्वविद्यालय खेलो में चुना जाता है। इसके बाद दो माह तक उन छात्रों को नापा जाता है। उसके बाद उसको वार्षिक खेलों के सम्बन्ध में चुना जाता है। जो चुने जाते है वें छात्र अखिल भारतीय और अखिल विश्वविद्यालय खेलों में खेलने योग्य होते है । उन्ही को ज्यादा तैयार भी किया जाता है ।

अखिल भारतीय दक्षिण अंचल अंतर विश्वविद्यालय प्रतियोगिता

1. दक्षिण - अंचल अंतर विश्वविद्यालय क्रिकेट (पुरुष) प्रतियोगिता -

दिनांक 11 से 22 दिसंबर तकर पांडिचेरी विश्वविद्यालय, पुदुचेरी में आयोजित किया गया । 14 सदस्यों का एक दल प्रतिस्पर्धा में भाग लिया था । (1) के. मल्लिकार्जुन राव (पीएच.डी) (2) अनिल कुमार दास (एम.फिल) (3) अजित कुमार साहु (आ-2) (4) अजित कुमार (आ-2) (5) सरोज कुमार पाटिल (आ-2) (6) अद्दुनूरी राकेश (अ-2) (7) साईकम ओबय्या (आ-1) (8) रागिपाटि श्रीकांत भाषा (शा-3) (9) करय दुर्गा प्रसाद (शा-3) (10) श्रीकांत जेना (शा-3) (11) दीक्षित कुमार गौडा (शा-1) (12) कोय्यगुरु रेड्डेय्य रेड्डी (बीएससी-1) (13) प्रत्युष कुमार गड्त्य (शा-1) (14) प्रभात कुमार पण्डा (शा-1) - प्रतिभागी थे । शारीरिक शिक्षा विभाग के डा. सी. गिरिकुमार प्रबंधक थे और बी. रविकुमार दल की सहाय थे ।

2. दक्षिण अंचल अंतर विश्वविद्यालय कब्बड्डी (पुरुष) प्रतियोगिता -

दिनांक 3 से 8 दिसंबर 2013 तक आचार्य नागार्जुना विश्वविद्यालय, गुंटुर, आं.प्र. में आयोजित किया गया था । 10 छात्रों के एक दल ने भाग लिया था -

(1) कृष्णानंद दन्नाना (आ-2) (2) मामिललपल्लि राजेश (आ-2) (3) टि. रामगंगिरेड्डी (शा-3) (4) के. स्वमी - (शा-3) (5) वी. सुरेश (शा-3) (6) डी. काशीविश्वनाथ (शा-3) (7) पी. कृष्ण (शा-2) (8) बी. गणपति (शा-2) (9) नल्लगण्डि स्वामी (शा-2) (10) ओ. साम्बशिव राव (शा-1) - प्रतिभागी थे । डा. सी. गिरिकुमार ने दल को निर्देशित किया ।

3. दक्षिण-अंचल अंतर विश्वविद्यालय खो-खो (पुरुष) प्रतियोगिता -

दिनांक 3 से 8 दिसंबर 2013 तक आचार्य नागार्जुन विश्वविद्यालय, गुंटुर, (आंध्रप्रदेश) में आयोजित किया गया । इस प्रतियोगिता में 12 छात्रों का एक दल भाग लिया था ।

(1) एस.वी. विजयकुमार (आ-2) (2) सुरेश आलुरी (शा-3) (3 वी. सुरेश (शा-3) (4) वी. रामकृष्ण (शा-3) (5) गोलि हरीश (बीएससी-3) (6) एस. शिवनागिरेड्डी (बीएससी-3) (7) एस. राम तिरुमल रेड्डी (बीएससी-3) (8) के. राजेश (बीएससी-2) (9) एम. प्रशांत (शा-2) (10) बी. गणपति (शा-2) (11) अक्काल वेंकट पवनकुमार (शा-1) (12) योगेश त्रिवेदी - प्रतिभागी थे । उपरोक्त सभी प्रतियोगिताओं में छात्रों का मार्गदर्शन शिक्षा विभाग के पीटी.आई. डॉ. सी. गिरिकुमार ने किया ।

4. दक्षिण-अंचल अंतर विश्वविद्यालय वालीबाल (पुरुष) प्रतियोगिता -

2013-14 - दिनांक 6 से 10 फरवरी 2014, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय तिरुपति में आयोगित किया गया। कग्गा नागराजु - आ-2, अशुतोष मोहंती - आ-2, सुशांत कुमार जेना - आ2, दिलीप कुमार आचार्य - आ-1, प्रलय दास - आ-1, बत्तुल श्रीनिवास राव - आ-1, पोन्नेन कृष्ण - शा2, बी. गणपति - शा-2, सौरव मण्डल - एम.फिल, प्रतिभागी थे ।

5. अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालय बाल बैडमिण्टन (पुरुष) प्रतियोगिता -

दिनांक 19 से 24 दिसंबर 2013 तक अलगप्पा विश्वविद्यालय, काराईकुडि में आयोजित किया गया था । वी. पवनकुमार शमा - शा-3, डी.टी. वेंकटसीताराम शा-3, के. ब्रह्मय्या, शा-3, डी.के. विश्वनाथ - शा-2, पी.साईकुमार - शा-1, दुर्गा श्रीनिवास राव - शा1, के. बद्रीनाथ (पीएच.डी) - प्रतिभागी थे ।

6. अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालय एथलटिक प्रतियोगिता (पुरुष और स्त्री)

दिनांक 19 से 30 दिसंबर 2013 तक पंजाब विश्वविद्यालय, पटियाला में आयोजित किया गया । विद्यापीठ से 7 छात्रों का एक दल भाग लिया था ।

डा. सी. गिरिकुमार, प्रबंधक तथा वी. सेतुरामा छात्रों के साथ थे ।

वार्षिक दिवस समारोह (2013-14)

वार्षिक दिवस और छात्रावास दिवस समारोह के अवसर पर शारीरिक शिक्षा-विभाग द्वारा शैक्षिक वर्ष 2013-14 विद्यापीठ के छात्रों और कर्मचारियों के लिए खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। छात्रावास के छात्रों तथा खेल प्रतियोगिताओं के सभी विजेताओं को दिनांक 6 मार्च, 2014 को आयोजित वार्षिक और छात्रावास दिवस पर पुरस्कार, प्रमाण पत्र देकर सम्मान किया गया था ।

विभिन्न श्रेणियों के खेलविजेताओं को विशेष रूप से आमंत्रित अतिथियों द्वारा पुरस्कार वितरण करवाया गया । चैम्पियनस को विशेष पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया था । छात्रों में - सी. निखिल, छात्राओं में - उपासना शमा और कर्मचारियों (पुरुषों) में वी. सेतुराम, कर्मचारियों (स्त्री में - डा. जी. ज्योति चैम्पियनशिप पाये थे ।

(आ) स्कौट्स और गैड्स -

शिक्षा विभाग ने शिक्षा शास्त्री(बी.एड.) के छात्रों को शिक्षक अनुशिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत नियमित रूप से स्कौट्स और गैड्स को चलाते हैं। हर साल इस प्रशिक्षण के द्वारा छात्रों को प्रथम चिकित्सा अध्यापन अनुभव प्राप्त करवाते हैं। और साल में एक बार उन्हे स्काउट्स मास्टर और गैट्स मास्टर 10 दिनों तक अध्यापन के अलावा पाठ्यचर्या दिलाते हैं ।

(इ) राष्ट्रिय सेवा योजना -

राष्ट्रीय सेवा योजना के संयोजक- डॉ.एस.दक्षिणामूर्ति शर्मा, कार्यक्रम अधिकारी, डॉ.जे.बी.चक्रवर्ती, डॉ.परामिता पण्डा, डॉ.ए. सच्चिदानंद मूर्ति और डॉ. सी. गिरिकुमार । स्वयं सेवी प्रतिनिधि - के. नागराजु, टी. गोपी, पी. रमेश, बी. योगेश और एस. गोडलक्ष्मी, स्वयं सेवको की संख्या 250 विशेष शिबिर के लिए ।

विद्यापीठ रा.से.यो.का उद्देश्य में निस्वार्थ सेवा मनोभावों का निर्माण करना है। विद्यापीठ में पाँच रा.से.यो.इकाइयाँ है। चार लडको के लिए एक इकाई लडकियों के लिए । रा.से.यो. कार्यक्रम वर्ष 2013-14 के लिए विद्यापीठ छात्रों के नामांकन के साथ शुरु किया गया। सभी रा.से.यो.इकाईयों द्वारा निम्नलिखित कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। प्रत्येक इकाई में 100 स्वयं सेवको को वर्ष 2013-14 के लिए रा.से.यो.के अंतर्गत दर्ज किया गया। इस प्रकार विद्यापीठ ने रा.से.यो. के पाँच इकाईयों में 500 स्वयं सेवको को एकत्रित किया ।

उद्देश्य - विद्यापीठ रा.से.यो.इकाइयाँ अपने सेवाओं से समाज के कई लोगों के जीवन में बदलाव लाने को प्रेरित करता हैं।

रा.से.यो. कार्यक्रम-विशेष शिबिर -

विद्यापीठ के सभी राष्ट्रीय सेवा योजना इकाइयों ने एक प्रकार से जादू सा बदलाव लाना चाहता है । रा.से.यो. एक ऐसा मंच है जो समाज की सेवा करता है। और कई चेहरों पर मुस्कान ला दें । समाज के लिए एक प्रकार सा त्यौहार सा निर्माण करना चाहते हैं। जहाँ पर अपनी चालाकियों को उजागर कर सकें । यह कोई आसान काम नहीं है फिर भी आगामी वर्षों के लिए विरासत में काम आ सकें ।

इकाई सं	कार्यक्रम अधिकारी	विशेष शिबिर जिन गाँवों को अपनाया	स्वयं सेवकों की संख्या
1.	डॉ.एस.दक्षिणामूर्ति शर्मा	चित्तूर	50
2.	डॉ. परामिता पण्डा	एन.आर. कम्मपल्लि	50
3.	डॉ.जे.बी.चक्रवर्ती	गोल्लपल्ली	50
4.	डॉ. ए. सच्चिदानंद मूर्ति	कोत्त कंड्रिगा	50
5.	डॉ. सी. गिरिकुमार	रामानायुडु कंड्रिग	50

सामाजिक तथा आर्थिक प्रतिकूल स्थितियों को दृष्टि में रखते हुए विद्यापीठ रा.से.यो.इकाइयों ने चित्तूर जिला के उपरोक्त पिछडे गाँवों में जागरुकता लाने हेतु चुना था। रा.से.यो.लक्ष्य प्राप्ति के लिए कार्यक्रम अधिकारियों के नेतृत्व में स्वयंसेवको ने 7 दिनों में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया । पहले तीन विशेष शिबिर दिनांक 14 से 20 दिसम्बर तक चलाया गया। अगले दो इकाइयाँ अर्थात् 4 और 5 वीं इकाइयाँ दिनांक 28 फरवरी, 2013 से 6 मार्च 2013 तक विशेष शिबिर चलाया गया। रा.से.यो.के संयोजक और कार्यक्रम अधिकारियों के नतृत्व में शिबिरों को प्रभावपूर्ण डंग से आयोजित किया था । निम्न योजनाओं द्वारा चुने हुए गाँवों में विकास लाया ।

सर्वे - रा.से.यो. के संयोजनाधिकारी के आदेशानुसार सभी छात्र सदस्यों को गाँव में घूमकर मुफ्त सर्वे किया गया। एक-एक घर जाकर उनको सरदार द्वारा प्राप्त सुविधाएँ, शिक्षा व्यवस्था, गैर सरकारी सुविधा आदि की जानकारि और आरोग्य संबधि जानकारी भी ली गई थी। उसके बाद हम अपनी ओर से कुछ बदलाव लाने हेतु नए विचार प्रकट करते हैं। यह सुनकर गाँव का सरपंच और विद्यालय मुख्याध्यापक सभी काफी प्रभावित हुए थे ।

श्रमदान - स्कूल और गाँव के चारों तरफ साफ सफाई की। खेल मैदान साफ कर उसका एक आकार भी दिए थे । हमने अलग-अलग तरह के 25 प्रकार पौधों का रोपन किया । स्कूल के चारों ओर बीज रोपण कर काफी सुंदर बनाया। स्कूल भवन को चूने से लेपन कर सफेद बनाया। इसके लिए स्कूली बच्चों और ग्रामीण से रा.से.यो.इकाईयों के सदस्यों की काफी प्रशंसाये प्राप्त हुई थीं।

गाँववालो से नाटक - समूह के सदस्यों ने स्कूल के वातावरण पर तेलुगु भाषा में एक नाटक का आयोजन किया। उसमें महिला शिक्षा संबंधी महत्व दिया गया था । तंबाकु सेवन से होने वाली हानि, शराब लेने से होने वाली बुराई पर प्रकाश डाला। इससे गाँव वाले बहुत प्रभावित हुए। हमारे सामने गाँव वालों ने यह निर्णय लिया कि शराब और धूमपान सेवन नहीं करेंगे।

आपदा प्रबंधन -बाढ और अकाल जैसे अलग-अलग परिस्थितियों का मुकाबला करना तथा आपदाओं से जीवन को कैसे बचाया जाए, इस पर एक उपयोगी व्याख्यान दिया गया। झूठी परिस्थितियों में कर्तव्यों का बोध करवाया गया। विविध आधुनिक और जीवत तकनीकों से गाँववालों को गतिविधियों का संचालन करना सिखाया ।

साक्षारता कार्यक्रम -रा.से.यो.स्वयं सेवको ने गाँवों में घूमकर स्कूल आयु के बच्चों और उनके अभिभाषकों को एक स्थान पर एकत्रित किया। उनको बालाश्रम द्वारा होने वाली हानियाँ और शिक्षा के महत्व के बारे में बताया। बच्चों के माता-पिता ने व्याख्यानों से प्रभावित होकर बच्चों को पास वाले स्कूल में भर्ती करवाया। यह एक मुश्किल काम था। लेकिन हम ने इसे आसान तरीके से पूरा किया ।

संस्कृति और जागरूकता कार्यक्रम :

इस वर्ष विद्यापीठ ने ग्रामीणों को नए विचारों से उत्तेजित की सोच से व्याख्यानों करने और भारतीय विरासत तथा संस्कृति पर नाटक जैसे पुराणों का प्रवचन, सनातन धर्म में सांप्रदायिक सद्भाव को अपनाया ।

स्वयं सेवकों ने ग्रामीणों में ए.आई.डी.एस. और उसकी जटिलताओं, नियंत्रित करने के लि, इस खतरनाक प्रभावित सिंड्रोम से सावधानी से जीवन व्यतीत करने की जागरूकता का सर्वश्रेष्ठ तरीकों से प्रयास की ।

पर्यावरण जागरुकता -

* ग्रमामीणों को पर्यावरण प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग और वृक्षारोपण के महत्व के बारे में बताया गया ।
* शौचालय उपयोग और उन्हे एवं घर और परिस प्रांतो को साफ सुथरे तरीके से रखने में अभ्यसिव करना ।
* गाँवों में मंदिरों को साफ करने चूने से लेपन कर सफेद बनाया तथा मंदिरों को एक नया रूप दिया ।
* सदस्य गाँव के अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजातियों के कॉलनियों के जाकर प्रथमचिकित्सा, परिसर नियोजन, विभिन्न संक्रमकरोंगों जैसे (मलेरिया टाइफाइड आदि) और रोगाणु रोकथाम पर व्याख्यान दिया। एड्स संबन्धी जानकारी भी दी गई थी ।
* बच्चों के लिए 'संस्कत पढो' शिबिर कार्यक्रम का आयोजन किया ।
* दूसरी ओर कार्यक्रम अधिकारियों और सदस्यों ने गाँव वालों को धर्म और मूल्य प्रणाली तथा संरक्षण पर व्याख्यान दिए। इसके लिए सभी की ओर से रा.से.यो.इकाइयों को अच्छी प्रशंसा प्राप्त हुई ।

✔ रक्तदान शिबिर राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ में 30 मार्च 2014 को आयोजित किया गया । रक्तदान से मानव जीवन की बचाव का शिक्षण छात्रों को दिया गया । उन में से करीबन 50 व्यक्तियों ने 125 इकाइयों की रक्त दान किया जो श्री वेंकटेश्वर आयुर्विज्ञान संस्था द्वारा सराहना की गई ।

एक दिन शिबिर -

एक दिन शिबिर कार्यक्रम भी रा.सं.वि.परिसर प्रांत में आयोजित की जाती है । 45 एकड भूमि पर विभिन्न इमारतों जैसे पुस्तकालय, शैक्षिकभवन, छात्रावास, प्रशासनिक भवनों का निर्माण किया गया । एक बडा मैदान भी है जिसमें नियमित से रा.से.यो कार्यक्रमों का संचालन किया जाता है। इन इकाइयों ने पुस्तकालय परिसर प्रांत में स्वच्छता एवं हरा भरा पौधों का रोपण करवाया । इन इकाइयों द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रम सूचीबद्ध है -

कंकडे और पत्थरों को निकालकर बैडमिंटन, वॉलीबाल, और खो खो मैदान को समतल बनाया तथा क्रिकेट पिच को सीधा किया ।

* राष्ट्रीय सांप्रदायिक सद्भव से संबंधित एन.एस.एस. सेल तिरुपति में एक बडी रैली के साथ कुलसचिव, प्रो. हरेकृष्ण शतपथी द्वारा उद्घाटित किया तथा एकत्रित राशि भेजी गई ।

* दिनांक 24 फरवरी 2014 श्री अर. गोकुल कृष्ण, युवा अधिकारी और प्रधान के की उपस्थिति में विद्यापीठ के स्वयं सेवा योजना के स्वयं सेवकों ने राष्ट्रीय युवा नीति कार्यक्रम में भाग लिया । इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवकों ने रैली कार्यक्रम में भाग लिया ।

संकाय सदस्यो द्वारा संगोष्ठियों, सम्मेलनों, कार्यशालाओं और विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों में भागीदारी-

❋ प्रो. जी.एस.आर. कृष्णमूर्ति

1. दिनांक 29.11.2013 तथा 30.11.2013 को श्री चंद्रशेखरेंद्र सरस्वती विश्व महाविद्यालय (एस.सी.एस.वी. एच.वी. विश्वविद्यालय) कांचीपुरम, में ''प्राचीन भारत में दार्शनिक शिक्षा की नींव और वर्तमान संदर्भ में उसकी प्रासंगिकता'' पर द्वि दिवसीय राष्टीय संगोष्ठी में भाग लिया ।
2. दिनांक 13.2.2014 संस्कृत व्याकरण विभाग, संस्कृत के श्री शंकराचार्य विश्वविद्यालयों, कालडी में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी ''पाणिनियन व्याकरण और क्षेत्रीय भाषा'' में भाग लिया ।

❋ प्रो. सत्यनारायण आचार्य

1. दिनांक 12 से 17 सितंबर, 2013 तक लखनऊ के राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, लखनऊ परिसर में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन आधुनिक युग में संस्कृत का महत्व'' में भाग लिया ।
2. दिनांक 18.3.2014 ''ओडिशा की पांडुलिपि में परिलक्षित भारतीय संस्कृति'' - राष्टीय संगोष्ठी में भाग लिया ।
3. दिनांक 18.3.2014 से 26.3.2014 तक, श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी में धर्मशास्त्र और मानवीय मूल्यों पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया ।
4. दिनांक 18.3.2014 से 26.3.2014 तक आर.एस. संस्थान सदाशिव परिसर, पुरी द्वारा आयोजित ''पुराण पुरुष पुरुषोत्तम श्री जगन्नाथ देव'', विषय पर आयोजित त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।
5. दिनांक 18.3.2014 से 26.3.2014 तक यू.जी.सी. द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी ''शास्त्रेषु आत्मसंस्कारा विमर्श'' आर.एस. संस्थान, सदाशिव परिसर पुरी में भाग लिया ।

❋ प्रो. एस. सत्यनारायण मूर्ति

1. दिनांक 16.9.2013 से 20.9.2013 तक शृंगेरी के श्री श्री जगद्गुरु शंकराचार्य महासंस्थान में आयोजित महागणपति वाक्यार्थ विद्वत सभा (शास्त्रों में वार्षिक सम्मेलन) में भाग लिया ।

❋ प्रो. आर.एल.नरहिंह शास्त्री

1. दिनांक 24.3.2014 से 26.3.2014 तक शृंगेरी के राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान राजीव गांधी परिसर में आयोजित व्याकरण राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर ''स्थानिव दो देशोन ल विधो'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

❋ प्रो. जे. रामकृष्ण

1. दिनांक 16.9.2013 से 20.9.2013 तक शृंगेरी के श्री श्री जगद्गुरु शंकराचार्य महासंस्थान में आयोजित महागणपति वाक्यार्थ विद्वत सभा (शास्त्रों में वार्षिक सम्मेलन) में ''येत्याविचारः''न विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।
2. दिनांक 11.02.2014 तथा 12.02.2014 संस्कृत के श्री शंकराचार्य विश्वविद्यालय, कालडी में ''पाणिनियन व्याकरण और क्षेत्रीय भाष्याँ'' - आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया ।

❋ प्रो. वी. मुरलीधर शर्मा

1. दिनांक 7.1.2014 से 11.1.2014 तक एस.वी. विश्वविद्यालय और ति.ति.दे. द्वारा महाभारत पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में महाभारत में मानव संबंध पर व्याख्यान दिया ।

❋ प्रो. रजनीकांत शुक्ला

1. दिनांक 12 जुलई 2013 तिरुपति के राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ द्वारा आयोजित सेतु पाठ्यक्रम कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के विशेषज्ञ के रूप में भाग लिए ।
2. दिनांक 24.1.2014 केरल में गुरुवायुर परिसर के राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में विशेषज्ञ के रूप में भाग लिए ।

❋ प्रो. प्रहलाद आर . जोशी

1. दिनांक 4.7.2013 से 10.7.2013 तक तिरुपति के राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, शिक्षाविभाग द्वारा आयोजित संकाय विकास कार्यक्रम के तहत विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रायोजित ''शैक्षिक अनुसंधान की प्रवृत्तियों'' के प्रशिक्षण में एक सप्ताह के लिए भाग लिया ।
2. दिनांक 13.9.2013 तथा 14.9.2013 वि.अ.ए. द्वारा प्रायोजित एन.वी. सोसाइटी और श्री स्वामीनारायण गुरुकुल, गुलबर्गा, कर्नाटक द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित ''महाभारत अध्ययनस्य सर्वकालिकत्वम'' राष्ट्रीय संगोष्ठी में विशेषज्ञ के रूप में भाग लेकर ''विदुरनीते प्रासंगिकत'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।
3. दिनांक 23.1.2014 राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति में आठवी. अखिल भारतीय संस्कृत छात्र प्रतिभा महोत्सव, वि.अ.ए. द्वारा प्रायोजित तथा कैरियर कौंसिलिंग सेल द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया ।
4. दिनांक 24.3.2014 से 30.3.2014 तक वि.अ.ए. दिल्ली द्वारा प्रायोजित तथा राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ द्वारा ''सांख्यिकी में शैक्षिक अनुसंधान'' संकायों के लिए एक सप्ताह के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया ।

❋ प्रो. एन. लता

1. दिनांक 4 से 10 जुलाई 2013 तक वि.अ.ए. द्वारा प्रायोजित शिक्षा विभाग में आयोजित ''शैक्षिक अनुसंधान की प्रवृत्तियाँ'' प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग ली ।
2. दिनांक 24.3.2014 से 30.3.2014 तक वि.अ.ए. दिल्ली द्वारा प्रायोजित तथा राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ द्वारा ''सांख्यिकी में शैक्षिक अनुसंधान'' संकायों के लिए एक सप्ताह के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग ली।
3. दिनांक 7.3.2014 से 8.3.2014 तक राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ द्वारा आयोजित ''राष्ट्र निर्माण में संस्कृत महिला विदूषियों की भूमिका'', अखिल भारतीय संस्कृत महिला विदुषी स्मेलन में भाग लिया ।

❋ प्रो. ए. श्रीपाद भट्ट

दिनांक 11.12.2013 से 13.12.2013 तक तिरुवनंतपुरम के सरकार संस्कृत कॉलेज में ज्योतिष्य विभाग द्वारा आयोजित ''ज्योतिष और मौसम का पूर्वानुमान'' द्वि दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

❋ प्रो. आर. जे. रमाश्री

दिनांक 13.8.2013 चेन्नई के श्री कन्यका परमेश्वरी कला और विज्ञान कॉलेज में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में विशेषज्ञ के रूप में भाग ली ।

❋ प्रो. नरसिंहाचार्य पुरोहित

1. दिनांक 24.6.2013 श्री कृष्ण मठ में ''भारतीय दर्शन साहित्य में वादिराज का योगदान'' राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया ।
2. ति.ति.दे, तिरुमला में दास साहित्य परियोजना द्वारा आयोजित ''श्रीमान न्याय सुधा'' राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया ।
3. दिनांक 12.9.2013 से 13.9.2013 तक कर्नाटक, के गुलबर्गा में एन.वी. सोसाइटी, एन.वी. आर्टस कॉलेज में ''महाभारत अध्ययनस्य सर्वकालिकत्व'' राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया ।

❋ प्रो. टी.वी. राघवाचार्युलु

दिनांक 4.9.2013 से 6.9.2013 तक गोवर्धन पीठ शंकराचार्य मठ, पुरी, उड़ीसा में श्री जगन्नाथ दमन : पुर्थः प्रसिधार्य त्रयनम ज्ञानानम रथारोहनपूर्वक श्री विग्रहनम तथा स्पर्शः विशायकः प्रसंगः'' पर आयोजित द्वि दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया ।

❋ प्रो. वी.एस. विष्णुभट्टाचार्युलु

1. दिनांक 4.9.2013 से 6.9.2013 तक गोवर्धन पीठ शंकराचार्य मठ, पुरी, उड़ीसा में श्री जगन्नाथ दमन: पुर्थः प्रसिधार्य त्रयनम ज्ञानानम रथारोहनपूर्वक श्री विग्रहनम तथा स्पर्शः विशायकः प्रसंगः'' पर आयोजित द्वि दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया ।

❋ प्रो. ओ.एस.श्रीरामलाल शर्मा

1. नवंबर, 2013 हैदराबाद में आयोजित सपरिकर अद्वैत विद्वत सदस में भाग लिया ।
2. वामी जी के जन्म दिन समारोह के अवसर पर कांचीपुर में आयोजित अद्वैत सभा में भाग लिया।
3. मार्च, 2014 विजयवाड़ा में आयोजित महामहोपाध्याय मद्दुलपल्ली माणिक्य शास्त्री जन्मदिन समारोह, व्याख्यार्थ सभा में भाग लिया ।

❋ प्रो. पी.टी.जी.वाई. संपतकुमाराचार्युलु

1. दिनांक 5 और 6 सितंबर 2013, गोवर्धन मठ, पुरी द्वारा जगन्नाथ रथोत्सव संगोष्ठी में भाग लेकर ''पांचरात्रानुसारेण रथोत्सवनियमः'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।
2. दिनांक 18 और 19 मार्च 2014 राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन, दिल्ली के सहयोग से श्री एस.एल.बी.एस. आर.एस. विद्यापीठ द्वारा ''बुनियादी स्तर पर पांडुलिपि और प्राचीन शिलालेखों का अध्ययन'' विषय पर आयोजित कार्यशाला में दो व्याख्यान दिए ।
3. दिनांक 24-25 मार्च, 2014 राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ तिरुपति में सॉप दर्शना द्वारा आयोजित ''तत्वचिंतामणि टिप्पणियाँ'' राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर ''तत्वचिंतामणि पर नरहरि की दुशनोद्धारा में तर्कप्रकरणा'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

❋ डा. विरूपाक्ष जड्डीपाल

दिनांक 10.202014 से 12.2.2014 तक पांडिचेरी विश्वविद्यालय, पांडिचेरी में ''दक्षिण पूर्व एशिया में महाकाव्य परंपरा'' अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेकर ''महाभारत की महत्वपूर्ण संशोधन संस्करण की आवश्यकता'' पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

❋ डा. आर. सदाशिव मूर्ति

दिनांक 25.7.2014, इस्कॉन, बैंगलूर में भारतीय विद्याभवन, मल्टी विजन द्वारा आयोजित वैदिक साहित्य पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर ''वेदांग छंदसः'' पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

❋ डा. आर. दीप्ता

1. दिनांक 3 और 4 सितंबर 2014 राष्ट्रीय संगोष्ठी ''अंग्रेजी और संस्कृत में कथा साहित्य'' का आयोजन किया ।
2. दिनांक 7 से 11 जनवरी 2014 तक एस.वी. विश्वविद्यालय ओ.आर.आई. द्वारा महाभारत पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेकर ''महाभारत में कथा की तकनीक'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत की ।
3. दिनांक 27 से 29 जनवरी 2014 तक एस.वी. विश्वविद्यालय, अंग्रेजी विभाग द्वारा आयोजित ''उमा परमेश्वर की चयनित कविताओं में अभीप्सित और अपनेपन अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन संस्कृति संदर्भ में कनाडा और भारत'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत की ।

4. दिनांक 7 और 8 मार्च, 2014 तिरुपति के राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ में आयोजित अखिल भारतीय संस्कृत महिला विदूषियों सम्मेलन में ''राज्य निर्माण में कुंती का स्थान'' - शीर्षक से प्रपत्र प्रस्तुत की ।

❋ डा. राधा गोविंद त्रिपाठी

1. दिनांक 2 और 3 सितंबर, 2013 ''नीलाचल और सिंहाचल की तुलनात्मक अध्ययन शेषाचल के विशेष संदर्भ में'' राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर ''नीलाचल शेषाचलायोहः प्रसादविशेषः'' प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

2. दिनांक 23.12.2013 और 24.12.2013 साव्मी विवेकानंद की 150 वीं जयंती के संदर्भ में वि.अ.ए. द्वारा प्रायोजित, द्वि दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर ''स्वामी विवेकानंद दृष्ट्या शिक्षा स्वरूपम'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

3. दिनांक 7-11 जनवरी, 2014 एस.वी. विश्वविद्यालय, ओ.आर.आई. द्वारा महाभारत पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में ''महाभारते शैक्षिक विचारः'' प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

4. दिनांक 13.2.2014 एस.जे.एस. विश्वविद्यालय, पुरी के शिक्षा विभाग में ''शिक्षक के मानवीय मूल्यों की महत्व'' पर विस्तार व्याख्यान दिया ।

5. दिनांक 23 जनवरी 2014 तिरुपति, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ द्वारा आयोजित ''संस्कृत छात्रों के व्यक्तित्व विकास'' एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर ''व्यक्तित्व विकास कर्तव्यपालनां च'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

6. दिनांक 21 से 23 मार्च 2014 सदाशिव परिसर के राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान द्वारा आयोजित ''पुराण पुरुषा पुरुषोत्तमह श्री जगन्नाथ'' राष्ट्रीय संगोष्ठी में ''श्री जगन्नाथ संस्कृति सामाजिक प्रासंगिकतयः'' पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

7. दिनांक 24 से 30 मार्च, 2014 राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ में संकायों के लिए आयोजित संकाय विकास कार्यक्रम के अंतर्गत ''शैक्षिक अनुसंधान में सांख्यिकी'' साप्ताहिक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया ।

❋ डा. आर. चंद्रशेखर

1. दिनांक 3 तथा 4 सितंबर, 2013 राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति में वि.अ.ए. नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित अंग्रेजी विभाग द्वारा आयोजित ''अंग्रेजी और संस्कृत कथा साहित्य'' - राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर ''आर.के. नारायण की मालगुडी दिन की कथा शैली'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया।

2. दिनांक 13.9.2013 तथा 14.9.2013 वि.अ.ए. द्वारा प्रायोजित एन.वी. सोसाइटी और श्री स्वामीनारायण गुरुकुल, गुलबर्गा, कर्नाटक द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित ''महाभारत अध्ययनस्य सर्वकालिकत्वम'' राष्ट्रीय संगोष्ठी में विशेषज्ञ के रूप में भाग लेकर ''भागवतगीतायाः अलौकिक शिक्षा'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

3. दिनांक 22.10.2013, श्री चंद्रशेखरेन्द्र सरस्वती विश्वविश्वमहाविद्यालय, एनातुर, कांचीपुरम्, तमिलनाडु में संस्कृत मेतडालजी पर विस्तार व्याख्यान दिया।

4. दिनांक 23.12.2014 तथा 24.12.2014 आर.एस.विद्यापीठ तिरुपति में विवेकानंद की 150 वीं जयंती समारोह के उपलक्ष्य में आयोजित आधुनिक भारत में विवेकानंदका युग ''राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर'' स्वामीविवेकानंद के प्रवचन विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया।

5. दिनांक 4.7.2013 से 10.7.2013 तक वि अए द्वारा प्रायोजित शिक्षाविभाग में आयोजित विकास कार्यक्रम ''अनुसंधान में सांख्यिकी'' में भाग लिया।

6. दिनांक 7.1.2013 से 11.1.2014 तक ओ आर आई, एस.वी. विश्वविद्यालय, तितिदे के सहयोग से आयोजित अंत राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर ''महाभारतज्ञान का भण्डार'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया।

❋ डा. के. कादम्बिनी

1. दिनांक 4.7.2013 से 10.7.2013 तक वि.अ.ए. द्वारा प्रायोजित शिक्षा विभाग में आयोजित विकास कार्यक्रम शैक्षिक अनुसंधान की प्रवृत्तियों में भाग लिया ।

2. दिनांक 24 से 30 मार्च, 2014 तक वि.अ.ए. द्वारा शिक्षा विभाग में आयोजित ''शैक्षिक अनुसंधान में सांख्यिकी'' विकास कार्यक्रम में भाग लिया ।

3. दिनांक 7.3.2014 से 8.3.2014 तक तिरुपति के राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ में आयोजित अखिल भारतीय संस्कृत महिला विदूषियों सम्मेलन में भाग लेकर ''संस्कृत महिला विदूषियों की भूमिका'' - पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

❋ डा. परामिता पण्डा

1. दिनांक 2 और 3 सितंबर, 2013 ''नीलाचल और सिंहाचल की तुलनात्मक अध्ययन शेषाचल के विशेष संदर्भ में'' राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर ''वैदिकी वाङ्मय में जगन्नाथ'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

2. दिनांक 3 तथा 4 सितंबर, 2013 राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति में वि.अ.ए. नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित अंग्रेजी विभाग द्वारा आयोजित ''अंग्रेजी और संस्कृत कथा साहित्य'' - राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर ''रामायण में वाल्मीकी की कथाशैली'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया।

3. दिनांक 23.12.2013 और 24.12.2013 राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ द्वारा ''आधुनिक भारत में विवेकानंद का युग'' पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर ''श्री विवेरकानंदस्य धार्मिक तत्वम्'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

4. दिनांक 3-1-2014 से 5-1-2014 तक ''युवा वेदांत स्वामी विवेकानंद की विचारों'' राष्ट्रीय संगाष्ठी में भाग लेकर ''समापासम्स्करे विवेकानंदस्य भूमिका'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तत की।

5. दिनांक 3 से 5 जनवरी 2014 तक ''वेद परिजाक्शाने पद्दामानम भूमिका'' राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर ''वेदपरिजाक्षाने शिक्षयः योगदानम्'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

6. दिनांक 7 और 8 मार्च 2014 तिरुपति के राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ में आयोजित अखिल भारतीय संस्कृत महिला विदूषी सम्मेलन'' में भाग लेकर ''त्यागैकव्रती तुलसी'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत की।

7. दिनांक 21-22 मार्च, 2014 धर्मशास्त्र और मानव मूल्यों पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर ''भागवतस्य धार्मिक चिन्तने मवेविका मूल्यबोधः'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया।

8. दिनांक 21 से 23 मार्च, 2014 ''पुराण पुरुषः पुरुषोत्तमः श्री जगन्नाथ देवः'' राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर ''श्री जगन्नाथस्य पुरुषोत्तमतत्त्वम'' पर प्रपत्र प्रस्तुत किया।

9. दिनांक 7 से 11 जनवरी 2014 तक एस.वी. विश्वविद्यालय प्राच्य अनुसंधान संस्था द्वारा महाभारत पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेकर ''शांतिपर्वाणि प्रायक्षितस्यः औचित्य वर्णनम'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

10. दिनांक 8 से 15 नवंबर 2013 ''साहित्य में शिक्षण तकनीकें और अभिनव अनुसंधान की दक्षता सुधार'' पर आयोजित कार्यशाला में भाग ली ।

❋ डा. निरंजन मिश्र

1. दिनांक 2 और 3 सितंबर, 2013 उत्कलपीठ द्वारा आयोजित ''नीलाचल और सिंहाचल की तुलनात्मक अध्ययन शेषाचल के विशेष संदर्भ में'' राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर ''आदिवासी संस्कृतो श्री नीलाचलाधिनाथः'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

2. दिनांक 16 से 18 दिसंबर 2013 श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्व विद्यालय के वेद विभाग द्वारा आयोजित ''उड़िसा में वेद प्रचार'' राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर ''उत्कले वेदिक परंपरा'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

3. दिनांक 3 तथा 4 सितंबर, 2013 राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति के अंग्रेजी विभाग द्वारा आयोजित ''अंग्रेजी और संस्कृत कथा शैली'' - राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर ''अंग्रेजी और संस्कृत कथा शैली कथा शैली का संक्षिप्त विश्लेषण'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया।

4. दिनांक 23.12.2013 और 24.12.2013 राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ द्वारा ''आधुनिक भारत में विवेकानंद का युग'' पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर ''वैराग्य राग रक्षिकः विवेकानंदः'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

5. दिनांक 3 से 5 जनवरी 2014 तक एस.वी. विश्वविद्यालय, तिरुपति द्वारा आयोजित ''वेद परिरक्षणे वेदांगं महत्वम'' राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर ''वेदस्य परिरक्षणे कात्याययन - श्रौतसूत्र योगदानम्'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

6. दिनांक 8-9 जनवरी 2014 राष्ट्रीय युवा केंद्र पुरी द्वारा आयोजित ''युवा और वेदांत - विवेकानंद के विचार'' - राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर ''विवेकानंदस्य वैदिक चिंतनम्'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

7. दिनांक 21-22 मार्च, 2014 धर्मशास्त्र विभाग, श्री जगन्नाथ संस्कृत विद्यालय, पुरी द्वारा आयोजित ''धर्मशास्त्र और मानवीय मूल्य'' राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर ''वेदो मानविकामूल्य बोधः'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया।

8. दिनांक 21 से 23 मार्च, 2014 राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, सदाशिव परिसर, पुरी द्वारा आयोजित ''पुराण पुरुषः पुरुषोत्तमः श्री जगन्नाथ देवः'' राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर ''वैदिक पारंपरायाम् श्री जगन्नाथः'' पर प्रपत्र प्रस्तुत किया।

9. दिनांक 26-27 अक्तूबर 2013 जगन्नाथ मंदिर, बंजारा हिल्स, हैदराबाद द्वारा आयोजित ''मंदिर संस्कृति'' कार्यशाला में भाग लिया।

10. दिनांक 8.7.2013 से 10.7.2013 श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वनिद्यालय, पुरी में आयोजित कार्यशाला में भागलिया।

11. दिनांक 17.12.2013 से 19.12.2013 तक वेद विभाग, श्रीजगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, श्रीविहार, पुरी में आयोजित संगोष्ठी में भागलेकर प्रपत्र प्रस्तुत किया।

❋ डा. डी. ज्योति

1. दिनांक 2 और 3 सितंबर, 2013 राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ द्वारा आयोजित ''नीलाचल और सिंहाचल की तुलनात्मक अध्ययन शेषाचल के विशेष संदर्भ में'' राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर ''भगवान वेंकटेश्वर - एक वैश्विक भगवान'' एक शीर्षक से एक प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

2. दिनांक 3 तथा 4 सितंबर, 2013 राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति के अंग्रेजी विभाग द्वारा आयोजित ''अंग्रेजी और संस्कृत कथा शैली'' - राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर ''वशिष्ठ की कथा तकनीकें'' शीर्षक से प्रपत्र प्रस्तुत किया।

3. दिनांक 7.3.2014 से 8.3.2014 तक तिरुपति के राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ में आयोजित ''अखिल भारतीय संस्कृत महिला विदूषियों सम्मेलन'' में भाग लेकर ''राष्ट्र निर्माण में तरिगोंड वेंगमाम्बा का योगदान'' - विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

4. दिनांक 23.12.2013 तथा 24.12.2013 राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ द्वारा ''आधुनिक भारत में विवेकानंद का युग'' राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर ''कर्मयीगोट कर्मणि वृत्तिः'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

5. दिनांक 7 से 11 जनवरी 2014 तक एस.वी. विश्वविद्यालय प्राच्य अनुसंधान संस्था द्वारा महाभारत पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेकर ''गीता में मन पर नियंत्रण के तरीके'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

6. दिनांक 27 से 29 जनवरी 2014 तक अंग्रेजी विभाग, एस.वी. विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अंतर्राष्टीय सम्मेलन में भाग लेकर ''कनाडा में योग की समृद्ध अभ्यास'' विषय पर प्रपत्र स्तुत किया ।

7. साहित्य एवं संस्कृति, संकाय, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ द्वारा आयोजित ''साहित्य में शिक्षण तकनीक और नवीन अनुसंधान में सुधार'' - कार्यशाला में भाग ली ।

❋ डा. ए. सच्चिदानंद मूर्ति

1. दिनांक 13.9.2013 तथा 14.9.2013 एन.वी. सोसाइटी और श्री स्वामीनारायण गुरुकुल, गुलबर्गा,

कर्नाटक के संयुक्त रूप से आयोजित ''महाभारत अध्ययनस्य सर्वकालिकत्वम'' राष्ट्रीय संगोष्ठी में विशेषज्ञ के रूप में भाग लेकर ''महाभारते गीतयः प्रधानयः'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

2. दिनांक 2 और 3 सितंबर, 2013 उत्कलपीठ तिरुपति द्वारा आयोजित ''नीलाचल और सिंहाचल की तुलनात्मक अध्ययन शेषाचल के विशेष संदर्भ में'' राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर ''नीलाचल शेषाचलयोः प्रसादविशेषः'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

3. दिनांक 23.12.2013 और 24.12.2013 विवेकानंद की 150 वीं जयंती समारोह के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ तिरुपति द्वारा आयोजित ''आधुनिक भारत में विवेकानंद का युग'' राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर ''स्वामी विवेकानंद के शिक्षा (प्रवचन)'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

4. ओ.आर.आई, एस.वी. विश्वविद्यालय, तिरुपति द्वारा ''महाभारत'' पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में विशेषज्ञ के रूप में भाग लेकर ''महाभारते शैक्षिक मूल्यानि'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

5. दिनांक 4 - 10 जुलाई, 2013 तक वि.अ.ए. द्वारा प्रायोजित, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति के शिक्षा विभाग में आयोजित ''शैक्षिक अनुसंधान में वर्तमान तकनीकें'' संकाय विकास कार्यक्रम के तहत साप्ताहिक प्रशिक्षण में भाग लिया ।

❋ डॉ. ए. सुनीता

1. दिनांक 4 - 10 जुलाई, 2013 तक वि.अ.ए. द्वारा प्रायोजित, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति के शिक्षा विभाग में आयोजित ''शैक्षिक अनुसंधान में वर्तमान तकनीकें'' संकाय विकास कार्यक्रम के तहत साप्ताहिक प्रशिक्षण में भाग लिया ।

2. दिनांक 24 से 30 मार्च, 2014 तक वि.अ.ए. द्वारा शिक्षा विभाग में आयोजित ''शैक्षिक अनुसंधान में सांख्यिकी'' एक सप्ताह का प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग ली ।

3. दिनांक 7.3.2014 से 8.3.2014 तक तिरुपति के राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ में आयोजित अखिल भारतीय संस्कृत महिला विदूषियों सम्मेलन में भाग लेकर ''राष्ट्र निर्माण में संस्कृत महिला विदूषियों का योगदान'' - विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

❋ श्री यशस्वी

22 - 27 अगस्त, 2013 तक दिल्ली संस्कृत अकादमी, नई दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन में भाग लेकर ''पतंजली महाभाष्य धातुस्वरूप विमर्शः'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

❋ डा. अज्मीरा चंदूलाल

1. दिनांक 28.6.2013 एस.वी. विश्वविद्यालय, तिरुपति में आयोजित ''गणितीय विज्ञान में वर्तमान विकास'' (एन.एस.आर.डी.एम.एस.-2013) राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया ।

2. दिनांक 13 और 14 सितंबर 2013 भारतीय अकादमी स्नातक कॉलेज, अनुसंधान और पी.जी. अध्ययन केंद्र, बंगलूर में आयोजित ''आनुमानिक सांख्यिकी'' - द्वि दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया।

❋ **डा. के. गणपति भट्ट**

1. दिनांक 2 - 5 सितंबर, 2013 तक वैदिकदर्शन विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएच.यू.) वारणासी में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया ।

❋ **डा. के. नारायण**

1. दिनांक 24 - 25 जून 2013 तक श्री कृष्ण मठ में ''भारतीय दर्शन में वड्डीराज के योगदान'' - राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया ।
2. दिनांक 18 - 22 जुलाई 2013 तक ति.ति.दे. तिरुपति के दास साहित्य परियोजना द्वारा ''श्रीमन्यायसुधा'' राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया ।
3. दिनांक 13.9.2013 तथा 14.9.2013 एन.वी. सोसाइटी और एन.वी. आर्टस कॉलेण, गुलबर्गा, कर्नाटक के संयुक्त रूप से आयोजित ''महाभारत अध्ययनस्य सर्वकालिकत्वम'' राष्ट्रीय संगोष्ठी में विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया ।
4. दिनांक 13.12.2013 पूर्णप्रज्ञ विद्यापीठ, बंगलूर में श्री पेजावर अधोक्क्ष मठ द्वारा आयोजित कार्यशाला में रिसोर्स पर्सन के रूप में भाग लिया ।
5. दिनांक 21.3.2014 पूर्ण प्रज्ञ संशोधन मंदिर, पूर्णप्रज्ञ विद्यापीठ, बंगलूर में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी ''वामन पुराण में प्रह्लाद कृतार्थ यात्र वर्णनम्'' पर व्याख्यान दिया ।

❋ **डा. टी. लतामंगेश**

1. एस.वी. विश्वविद्यालय के प्राच्य अनुसंधान संस्था द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेकर ''महाभारत में शिक्षा का दर्शन'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।
2. दिनांक 7 और 8 मार्च, 2014 साहित्य विभाग, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति द्वारा आयोजित अखिल भारतीय महिला विदूषी सम्मेलन में भाग लेकर ''संस्कृत महिला विदूषियों'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

❋ **डा. भरत भूषण रथ**

दिनांक 22 - 27 अगस्त, 2013 तक दिल्ली संस्कृत अकादमी, नई दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन में भाग लेकर ''सामयिक समाजे अर्थनीतो राजनीतो च : नीति शास्त्रानाम प्रयोगः'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।

❋ **डा. श्वेतपद्मा शतपथी**

1. दिनांक 13.9.2013 से 17.9.2013 तक राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, लखनऊ परिसर, लखनऊ में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर ''आधुनिक युग में संस्कृत का महत्व'' पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।
2. दिनांक 11.3.2014 से 21.3.2014 तक भारतीय संस्कृति के रूप में परिलक्षित उडिशा की पांडुलिपि'' राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया ।

3. दिनांक 11.3.2014 से 21.3.2014 तक श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी और राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, सदाशिव परिसर, पुरी द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी ''पुराण पुरुषोत्तम जगन्नाथ देव'' में भाग लिया ।

❋ लीनाचंद्रा के.

1. दिनांक 27 और 28 जुलाई 2013 राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति में आयोजित द्वि दिवसीय राष्ट्रीय संस्कृत जागरूकता कार्यक्रम में भाग ली ।
2. दिनांक 2-3 सितंबर 2013 श्री जगन्नाथ चेतना गवेषणा प्रतिष्ठाना, पुरी के सहयोग से तिरुपति के उत्कलपीठ द्वारा आयोजित ''नीलाचल और सिंहाचल की तुलनात्मक अध्ययन शेषाचल के विशेष संदर्भ में'' - द्वि दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर ''श्री वेंकटाचलस्य महात्म्यम'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किया ।
3. दिनांक 3-4 सितंबर, 2013 आ.ए.विद्यापीठ, तिरुपति के अंग्रेजी विभाग द्वारा आयोजित द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर ''राजाराव के कांतापुरा में भारतीय कथा शैली'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत की।
4. दिनांक 13 से 15, 2013 तक राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, लखनऊ परिसर, लखनऊ द्वारा आयोजित ''आधुनिक युग में संस्कृत का महत्व'' - त्रि दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग ली।
5. दिनांक 8 से 15 नवंबर 2013 तक आर.एस. विद्यापीठ, तिरुपति में साहित्य और संस्कृति के संकायों द्वारा आयोजित कार्यशाला - ''साहित्य में शिक्षण तकनीकें और अभिनव अनुसंधान'' में भाग ली ।
6. दिनांक 23-24 दिसंबर 2013 आर.एस. विद्यापीठ, तिरुपति द्वारा आयोजित ''आधुनिक भारत में विवेकानंद का युग'' द्वि दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेकर ''साहित्य प्रक्रियेशु उपन्यासः तेन विवेकानंदस्य संबंधः'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत की ।
7. आर.एस. विद्यापीठ, तिरुपति द्वारा आयोजित संस्कृत साप्ताहिक समारोह में भाग लेकर अलंकार शास्त्रे प्रादेशिका प्राधान्यम'' राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रपत्र प्रस्तुत की ।
8. दिनांक 7-11 जनवरी 2014 ओ.आर.आई., एस.वी. विश्वविद्यालय, तिरुपति, ति.ति.दे. के सहयोग से ''महाभारत'' पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेकर ''महाभारत में सब से बुद्धिमान महिला - कुंती'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत की ।
9. दिनांक 7-8 मार्च, 2014 आर.एस. विद्यापीठ, तिरुपति द्वारा आयोजित अखिल भारतीय संस्कृत महिला विदूषी सम्मेलन में भाग लेकर ''राष्ट्र निर्माणे द्रौपदी स्थानः'' - विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत की ।
10. आर.एस. विद्यापीठ के कैरियर कॉउसलिंग सेल द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी ''व्यक्तित्व विकास'' में भाग लेकर ''अभिज्ञान शाकुंतले नारीनाम व्यक्तित्वविकासः'' विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत की ।
12. दिनांक 25 नवंबर से 21 दिसंबर 2013 तक वि.अ.ए. द्वारा प्रायोजित, वि.अ.ए. अकादमिक स्टाफ कॉलेज में आयोजित अभिविन्यास कायक्रम में भाग लिया।

❋ डा. डी. नल्लन्न

1. बहुभाषी संस्कृत व्युत्पत्ति शब्द कोश की तैयारी पर राष्ट्रीय कार्यशाला 30 सितंबर 2013 से 3 अक्तूबर 2013 तक राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ तिरुपति में आयोजित किया गया ।
2. दिनांक 21 और 22 दिसंबर 2013 को तेलुगु विभाग, मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई द्वारा ओयजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में ''भगवद्गीता और समकालीन समाज'' पर ''श्री विद्या प्रकाशानंद स्वामुलवारि तत्वसार विचारम'' नामक शीर्षक से एक प्रपत्र प्रस्तुत किया गया ।
3. दिनांक 21 और 22 मार्च 2014 को तेलुगु विभाग, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय तिरुपति (सांस्कृतिक विभाग, आन्ध्रप्रदेश हैदराबाद) द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में ''पुट्टपर्ति नारायणाचार्युलु जीवित - साहित्यम्'' पर पुट्टपर्ति नारायणाचार्युल मेघदूतम' 'गुर्रम जाशुवा गब्बिलम तुलनात्मक परिशीलन' शीर्षक से एक प्रपत्र प्रस्तुत किया गया ।
4. दिनांक 7 से 11 जनवरी 2014 तक ओरियंटल रिसर्ज इन्स्टीट्यूट, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति और तिरुमल तिरुपति देवस्थानम, तिरुपति द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में ''श्रीमद् महा भारतम्'' पर भारत, भागवताविष्कृत इतिवृत्तालु'' नाक शीर्षक से एक प्रपत्र प्रस्तुत किया गया ।

❋ डा. सी. गिरिकुमार

1. दिनांक 21.5.2013 से 31.6.2013 तक आचार्य नागार्जुन विश्वविद्यालय, गुण्टूर में आयोजित पी.ई.सी.ई.टी. (शारीरिक शिक्षा कॉमन एन्ट्रेन्स टेस्ट) के लिए एक परीक्षक (फील्ड परीक्षक) के रूप में काम किया ।
2. दिनांक 10 से 11 जून 2013 तक योगी वेमना विश्वविद्यालय के तहत शारीरिक शिक्षा - जैन कॉलेज - कडपा में आयोजित द्वितीय वर्ष प्रायोगिक परीक्षा में यूजी डीपी एड बाहरी प्रायोगिक परीक्षक के रूप में काम किया ।
3. दिनांक 04 से 10 जुलाई 2013 तक संकाय विकास कार्यक्रम के तहत विश्वविद्यालय अनुवाद आयोग द्वारा प्रायोजित शिक्षा के संकाय, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ तिरुपति द्वारा आयोजित ''शैक्षिक अनुसंधान में वर्तमान तकनीकें'' पर एक सप्ताह के प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया ।
4. दिनांक 3 से 8 दिसंबर 2013 तक आचार्य नागार्जुन विश्वविद्यालय, गुण्टूर (आन्ध्रप्रदेश) में आयोजित दक्षिण आंचलिक अन्तर्विश्वविद्यालय कबड्डी (पुरुष) 2013-14 प्रतियोगिता के लिए विद्यापीठ टीम के लिए एक प्रबन्धक के रूप में काम किया ।
5. दिनांक 11 से 24 दिसंबर 2013 तक पांडिचेरी विश्वविद्यालय - पुदुच्चेरी में आयोजित दक्षिण आंचलिक विश्वविद्यालय क्रिकेट (पुरुष) प्रतियोगिता 2013-14 के विद्यापीठ टीम के लिए एक प्रबन्धक के रूप में काम किया ।
6. दिनांक 18 से 24 दिसंबर 2013 तक कालीकट विश्वविद्यालय, मलपुरम, केरल में आयोजित दक्षिण आंचलिक अन्तर्विश्वविद्यालय खो-खो पुरुष प्रतियोगिता 2013-14 के राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ टीम के लिए एक प्रबन्धक के रूप में काम किया ।

7. दिनांक 19 से 24 दिसंबर 2013 तक अलगप्पा विश्वविद्यालय - काराईकुडि, तमिलनाडु में आयोजित अखिलभारतीय अन्तरविश्वविद्यालय बॉल-बैडमिंटन (पुरुष और महिला) प्रतियोगिता 2013-14 के विद्यापीठ टीम के लिए एक प्रबन्धक के रूप में काम किया ।

8. दिनांक 6 से 10 फरवरी 2014 तक श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति आन्ध्रप्रदेश में आयोजित दक्षिण आंचलिक अन्तरविश्वविद्यालय वॉली बॉल (पुरुष) प्रतियोगिता 2013 - 14 के विद्यापीठ टीम के लिए एक प्रबन्धक के रूप में काम किया ।

9. दिनांक 24 से 30 मार्च 2014 तक संकाय विकास कार्यक्रम के तहत विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रायोजित शिक्षा संकाय, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति द्वारा आयोजित ''संकाय के लिए शैक्षिक अनुसंधान में सांख्यिकी'' पर एक सप्ताह के प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया ।

IV . विशेष कार्यक्रम

(अ) संस्कृत सप्ताह समारोह -

संस्कृत सप्ताह समारोह (16 से 23 अगस्त 2013 तक) पिछले वर्षों के जैसे, भगवान श्री वेंकटेश्वर की कृपा से इस साल भी संस्कृत सप्ताह समारोह एक भव्य उत्सव, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ तिरुपति परिसर में दिनांक 16 से 23 अगस्त, 2013 तक मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के संरक्षण और निर्देशन में श्रावण पूर्णिमा के शुभ दिन के अवसर पर मनाया गया ।

उद्घाटन समारोह महोत्सव - 16.8.2013

इस महोत्सव का भव्य उद्घाटन विद्यापीठ में दर्शकों से भरे हुए इंडोर स्टडेडियम में आयोजित किया गया था। विद्वानों, छात्रों, मीडिया सदस्य और विद्यापीठ के कर्मचारियों ने इस अवसर पर भाग लेकर कार्यक्रम को संपन्न बनाया।

स्वागत भाषण

प्रो. राधाकांत ठाकुर, शैक्षिक संकाय प्रमुख, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ तथा लोकप्रिय संस्कृत कवि और विद्वान, तिरुपति ने स्वागत भाषण पर हमारे समाज पर अतुलनीय प्रभाव पर प्रकाश डाला । संस्कृत साहित्य की शिक्षायाँ, भारत के महान संतों द्वारा दिया ज्ञान का फल है जो हर समय प्रासंगिक है ।

मुख्य अतिथि संदेश

प्रो. एस. सुदर्शन शर्मा, प्रथम और पूर्व कुलपति, श्री वेंकटेश्वरा वेदिक विश्वविद्यालय, बहुमुखी व्यक्तित्व और वर्तमान साहित्य और संस्कृति संकाय प्रमुख इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे । उनके उदात्त और महान विचारों विद्यापीठ भर में सभी प्रगति के लिए आवश्यक मार्गदर्शन से हमेशा संस्कृत के क्षेत्र की सेवा का समर्थन करता हूँ । अपने संदेश में उन्होंने भारतीयों के जीवन पर बल दिया । संस्कृत और संस्कृत के अभाव में मनुष्य का भविष्य अंधेरा होता है । संस्कृत शिक्षा सार्वभौमिक मूल्य के लिए है । अतः संस्कृत में छिपे ज्ञान और उसके संरक्षण की जिम्मेदारी संस्कृत पढ़ने वालों पर है । संस्कृत सभी दिलों को शुद्ध और पूरी दुनिया को शांत बनाता है ।

सम्मानित अतिथि का प्रेरक भाषण

प्रो. रविशंकर मेनोन, तत्कालीन कुलसचिव, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति तथा बहु प्रज्ञावत ने

अध्ययन और अनुभवों पर दर्शकों को उत्तेजक भाषण दिया । सभी भारतीय भाषाओं पर संस्कृत का प्रभाव पर विचार को व्यक्त किया ।

अध्यक्षीय भाषण

महामहोपाध्याय प्रो.हरेकृष्ण शतपथी, माननीय कुलपति, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, ने अपने अध्यक्षीय भाषण के माध्यम से विद्वानों और व्यवस्थापकों की प्रशंसा जीता । उन्होंने अपने अमूल्य भाषण में संस्कृत के सभी छात्रों को देवभाषा के संतान का विचार व्यक्त किया । इसलिए संस्कृत समुदाय के सभी सदस्यों के दिल, विचारों और जीवन संस्कृतके भावों से भरा कर अमर बना देना है । अपने श्रद्धा और संस्कृत के प्रति समर्पण के कारण वैयाकरण पतंजली एक संत बने । हमें अपने आपको वैश्विक नागरिक मानना है ।

डा. राणी सदाशिव मूर्ति संस्कृत सप्ताह समारोह के समन्वयक उद्घाटन सत्र की तुलना किया, डा. सत्यनारायण आचार्य उचित रूप से धन्यवाद भाषण दिया ।

भजन संध्या - आध्यात्मिक श्रोत की ऊर्जा

पहले दिन के शाम विद्यापीठ के सभी छात्र एकत्रित हुए और अत्यंत भक्ति के साथ विभिन्न देवी देवताओं के भजन संस्कृत, उड़िया, मलयालम, तेलुगू, कन्नड, बंगाली और हिंदी में गाये । प्रतिभागी छात्रों ने बहुत ही उत्साह के साथ अपनी असाधारण प्रतिभा को प्रस्तुत किया । भजन संध्या आध्यात्मिक, मधुर भक्ति और जीवंत था । यह भावी कार्यक्रम सफल संचालन के साथ चलाने के लिए एक महान शक्ति प्रदान करने वाला था ।

दिनांक 17.8.2013 को विद्यापीठ छात्रों के लिए आयोजित प्रतियोगितायें -

विद्यापीठ के छात्रों के लिए विशेष रूप से दूसरे दिन संस्कृत गीत गान स्पर्धा, आशुभाषण स्पर्धा, रसप्रश्न और श्लोक अंत्याक्षरी का आयोजन किया गया । डा. सी. रंगनाथन, सह आचार्य, साहित्य विभाग इन प्रतियोगिताओं के संयोजक थे ।

गीतगायन स्पर्धा

पुरस्कार		पुरस्कार विजेता
प्रथम	-	बी. यशोवरर्धन, बि.एससी. - III
द्वितीय	-	बरुन नंदिनि पण्डा, आ-II
तृतीय	-	बिभूतिभूषण जेना, शि.शा.

रस प्रश्न

प्रथम पुरस्कार	द्वितीय पुरस्कार	तृतीय पुरस्कार
कृष्णानंदा, आ-II	अखिलेश मिश्र, आ-II	सौरभ मनदय
कृष्णा राव, शा-I	राजेश गुर्जर, आ-II	बिस्वजित मोहराना
शिवशंकर होत्ता, शा-III	सम्राट गांगुली, एम.ईडी.	बि. यसोवरधन, बी.यससी. -III
रेवती सुप्रजा - शि.शा.	नारायण अधिकारी, आ-II	महेश कुमार पांडे, शा-I

श्लोक अंत्याक्षरी

प्रथम पुरस्कार	-	शिवशंकर होत्ता, आ.-III
द्वितीय पुरस्कार	-	महेश कुमार पांडे, शा.-I

आशुभाषण

प्रथम पुरस्कार	-	शिवशंकर होत्ता, आ.-III
द्वितीय पुरस्कार	-	राजेश कुमार गुर्जर, आ-II
तृतीय पुरस्कार	-	अखिलेश मिश्र, अ.-II

18.8.2013 दिन स्थानीय शिक्षण संस्थानों के छात्रों लिए प्रतियोगितायाँ शैक्षिक संस्थानों के छात्रों के लिए प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । प्रतियोगिताएँ की घटनायाँ थी सस्वर पाठ से संस्कृत गीत प्रश्नोत्तरी और संस्कृत श्लोक । विद्यालय स्तर और कॉलेज स्तर प्रतियोगितायाँ आयोजित की गई, लगभग 20 विद्यासंस्थानों से छात्रों ने भाग लिया था ।

साहित्य विभाग के डा. भरतभूषण रथ, डा. बलि चक्रवर्ति और डा. प्रदीप कुमार बाघ सहायक प्रोफेसर इन प्रतियोगिताओं को चलाया था ।

प्रतियोगिताओं के विजेता निम्नांकित हैं -

विद्यालय स्तर संस्कृत गीत प्रतियोगिता

प्रथमपुरस्कार	-	आर.वि.एस. दीप्ति, भारतीय विद्याभवन-IX
द्वितीय पुरस्कार	-	आर.नीरजा, भारतीय विद्याभवन-X
तृतीय पुरस्कार	-	बि. लक्ष्मी प्रत्यूशा, केशवरेड्डी कान्सेप्ट विद्यालय-VIII

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता विद्यालय स्तर

प्रथमपुरस्कार	-	आर. सुधनवन, भारतीय विद्याभवन-IX
प्रथमपुरस्कार	-	आर. पियंवदा, भारतीय विद्याभवन-X
द्वितीय पुरस्कार	-	ए. हिमबाला पद्मिनी, रत्नम टेकनो विद्यालय-VII
तृतीय पुरस्कार	-	आर. हिरणमई, भारतीय विद्याभवन-V
तृतीय पुरस्कार	-	वि.जे. विष्णु, भारतीय विद्याभवन-V

कॉलेज स्तर

प्रथमपुरस्कार	-	जी. श्रीवल्लभन, केंद्रीय विद्यालय-XI
द्वितीय पुरस्कार	-	सौम्येश, केंद्रीय विद्यालय-XI
प्रथमपुरस्कार	-	डि. हेमनाथ नायुडु, के. कॉन्सेप्ट विद्यालय - III

द्वितीय पुरस्कार	-	वाई. लक्ष्मी वर्षिता, गीतम-II
तृतीय पुरस्कार	-	एन. पियांशु, भारतीय विद्याभवन-IV

सामूहिक - 2

प्रथमपुरस्कार	-	जि. चिरंजीवी, ब्रिलियंट हैस्कूल-VII
द्वितीय पुरस्कार	-	वि.जे. विष्णु, भारतीय विद्याभवन-V
तृतीय पुरस्कार	-	ए. इन्दुप्रिय, के. कॉन्सेप्ट स्कूल, VII

सामूहिक - 3

प्रथमपुरस्कार	-	टि. पुष्या मित्रा, के., कॉन्सेप्ट स्कूल
द्वितीय पुरस्कार	-	एन. वि. सुप्रजा, के., कॉन्सेप्ट स्कूल
तृतीय पुरस्कार	-	ए. देवीश्री, के., कॉन्सेप्ट स्कूल

दिनांक 17 और 18 अगस्त 2013 आयोजित इन प्रतियोगिताओं के निर्णायक निम्नांकित थे । डॉ. सी. रंगनाथन, डॉ. भरत भूषण रथ, डॉ. बलिचक्रवर्ति, डॉ. जी. ज्योति, जॉ. श्वेतपद्मा शतपथी, डॉ. यशष्वी, डॉ. सी. नागराजु और डॉ. पी.टी.जी. रंगरामानुजाचार्युलु ।

आ) स्वतन्त्रता दिवस समारोह

15 अगस्त , 2013 को सुबह 8.15 बजे विद्यापीठ में स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया । विद्यापीठ के कुलपति प्रो. हरेकृष्ण शतपथी जी ने ध्वज फहराकर सभी को संबोधीत करते हुए भाषण दिया । उन्होंने अपने भाषण में त्री-रंगों का महत्त्व बताते हुए कई शहीदों के विचारों का अवलोकन किया । उन्होंने सभी संस्कृत विद्वानों से निवेदन किया कि इस संस्था के लिए कुछ नया कर दिखाए ।

शैक्षिक संकाय अधिष्ठाता, प्रो. आ.के. ठाकुर, कई संकाय अधिष्ठाताओं, कुलसचिव प्रो. के. रविशंकर मेनोन, शिक्षक, शिक्षकेतर कर्मचारी और विद्यापीठ के छात्र इस समारोह में उपस्थित थे ।

इ) हिंदी दिवस समारोह

दिनांक 14 सितंबर 2013 विद्यापीठ में हिंदी दिवस का उद्घाटन प्रो. कृष्णकंचन शर्मा, एस.वी.आई.एम.एस., तिरुपति द्वारा किया गया । इस उपलक्ष्य पर आयोजित भाषण, निबंध, हिंदी गायन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कारों पुरस्कृत किया गया ।

डॉ. टी. लतामंगेश, सहायक आचार्या, हिंदी विभाग समारोह में स्वागत तथा धन्यवाद भाषण दिया ।

ई) गणतन्त्र दिवस -

दिनांक 26 जनवरी, 2014 के सुबह 8.15 बजे विद्यापीठ में गणतंत्र दिवस का आयोजन किया गया था। कुलपति प्रो. हरेकृष्ण शतपथी जी ने ध्वज फहराकर उपस्थित सभी को संबोधित कर भाषण दिए। शैक्षिक संकाय अधिष्ठाता प्रो. आर.के. ठाकुर, कई संकाय अधिष्ठाताओं, कुलसचिव प्रो. सी. उमाशंकर, शिक्षक - शिक्षकेतर कर्मचारी और विद्यापीठ के छात्रों ने इस समारोह में भाग लिए था।

उ) अम्बेडकर जयंती समारोह

दिनांक 14 अप्रैल 2013 बाबा साहेब डा. भीम अम्बेडकर जयंती को विद्यापीठ ने समर्पण भाव के साथ मनाया । डा. चिंता मोहन, संसद के माननीय सदस्य, तिरुपति, मुख्य अतिथि थे । प्रो. हरेकृष्ण शतपथी कुलपति अध्यक्ष थे ।

ऊ) आठ वाँ अखिल भारतीय संस्कृत छात्रों का प्रतिभा उत्सव - 2014

दिनांक 22 से 25 जनवरी 2014 तक राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ ने 8 वीं अखिल भारतीय संस्कृत छात्र पतिभा समारोह का आयोजन किया । माननीय कुलपति ने डॉ. सी. रंगनाथन वाग्वर्धिनी परिषद के समन्वयक को इस महोत्सव के संयोजक तथा वाग्वर्धिनी परिषद के सहसमन्वयक डॉ. भरत भूषण रथ को इस महोत्सव के सह संयोजक के रूप में नियुक्त किया । महोत्सव के सुचारू संचालन की सुविधा के लिए कई समितियों का गठन किया गया । भारत भर से 25 टीम महोत्सव में भाग लिए । इस अवसर पर मानव संसाधन विकास के माननीय मंत्री डा. एम.एम. पल्लं राजु, ज्ञानपीठ पुरस्कार से पुरस्कृत तथा द्वितीय संस्कृत आयोग के अध्यक्ष प्रो. सत्यव्रत शास्त्री, संसद के सदस्य, तिरुपति डा. चिंतामोहन और एम.जी. गोपाल, आई.ए.एस., कार्यनिर्वहण अधिकारी, तिरुमल तिरुपति देवस्थानम, समारोह के अतिथि के रूप में उपस्थित थे ।

प्रतिभागी संस्थायाँ :

1. राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति, आं.प्र.
2. श्री वेंकटेश्वर वेदिक विश्वविद्यालय, तिरुपति, आं.प्र.
3. श्री सुर्यपुर संस्कृत महाविदद्यालय, अहमदाबाद, गुजरात
4. दर्शनम संस्कृत महाविद्यालय, अहमदाबाद, गुजरात
5. ब्रह्म श्री संस्कृत महाविद्यालय, दकोर रोड, नदीयद, गुजरात
6. राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, वेद व्यास परिसर, हिमाचलप्रदेश
7. राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, वेद व्यास परिसर, रणबीर परिसर, जम्मु
8. राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, राजीव गाँधी परिसर, शृंगेरी, कर्नाटक
9. एस.एम.एस.पी. संस्कृत स्नातक स्नातकोत्तर अध्ययन केन्द्रम, उडुपी, कर्नाटक
10. पूर्णप्रज्ञा विद्यापीठ, बंगलूरु, कर्नाटक
11. केरल वैश्य संस्कृत विद्यापीठ, (कोट्टापुरम), त्रिसुर, केरला

12. राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, गुरुवायुर परिसर, केरला
13. मुम्बदेवि आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, मुम्बई, महाराष्ट्रा
14. राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, के.जी. सोमय्या संस्कृत विद्यापीठ, मुम्बई, महाराष्ट्रा
15. कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विदद्यालय, रामटेक, महाराष्ट्रा
16. पुने विश्वविद्यालय, पुने, महाराष्ट्रा।
17. श्री लाल बहादूर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, कटवारिया सराई, नई दिल्ली.
18. राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, श्री सदाशिव परिसर, पुरी, ओडिशा।
19. श्री चंद्रशेखरेंद्र सरस्वति विश्व महाविद्यालय, एनत्तुर, काँचीपुरम्, तमिलनाडु
20. श्री अहोबिल मठ संस्कृत कॉलेज, मधुरान्तकम।
21. राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, लखनऊ परिसर, उत्तरप्रदेश ।
22. बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वारणासी, उत्तर प्रदेश
23. कालियाचौक बी.के.ए. किशोर संस्कृत महाविद्यालय,पश्चिम बंगाल।
24. राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, जयपुर परिसर, जयपुर।
25. श्री रंगलक्ष्मी आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, बृंदावन, मथुरा, उत्तरप्रदेश ।

समारोह के मुख्य अतिथि ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त पद्मभूषण प्रो.सत्यव्रत शास्त्री, द्वितीय संस्कृत आयोग के अध्यक्ष द्वारा उद्घाटन किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में मुख्य अतिथि हमारी संस्कृति, महाकाव्यों तथा पुराणों में छिपे मूलयों पर प्रकाश डाला। प्रो. हरेकृष्ण शतपथी कुलपति समारोह की अध्यक्षता की। उन्होनें अपने अध्यक्षीय भाषण मे स्मरण किया कि संस्कृत अध्ययन से नैतिकता से रहित दुनिया से पीछा छुडवाताहै।

प्रो.राधाकांत ठाकुर, शैक्षिक संकाय प्रमुख समारोह के प्रतिभागी दल और निर्णायकों का स्वागत किया। प्रो.एस.सुदर्शनशर्मा द्वितीय संस्कृत आयोग के सदस्य तथा साहित्य और संस्कृति के संकाय प्रमुख ने मुख्य अतिथि का संक्षिप्त विवरण दिया। डॉ.सी.रंगनाथन, वाग्वर्धिनी परिषदके समन्वयक ने महोत्सव के उद्देश्यो और लक्ष्यों को सूची बद्ध किया प्रो.सी.उमाशंकर, कुलसचिव ने धन्यवाद भाषण समर्पित किया।

पहली प्रतियोगिता अंत्याक्षरी थी, 54 प्रतियागियों ने भाग लिया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गग संस्कृत गीत गायन प्रतियोगिता आयोजन किया गया। 19 प्रतिभागियों ने संस्कृत गायन प्रतियोगिता में भाग लिया।

महोत्सव की दूसरे दिन अतः 23-1-2014, साहित्य, ज्योतिष, न्याय, व्याकरण पर भाषण प्रतियोगिता का संचालन किया गया। साहित्य में 20 प्रतिभागी, ज्योतिष में 19, न्याय में 16, व्याकरण में 23 छात्रो ने भाग लिया। सांस्कृतिक प्रतियोगिता ओं के अंतर्गत - एक पात्राभिनय और शास्त्रीय नृत्य का आयोजन किया गया। 13 प्रतिभागिय्रों, 15 प्रतिभागियों ने क्रमशः एक पात्राभिनय और शास्त्रीय नृत्य में भाग लिया। इस अवसर पर संस्कृत छात्रो के लिए व्यक्तित्व विकास पर कैरियर कौंऊसलिंग सेल द्वारा अखिलभारतीय प्रतिभा माहोत्सव, राष्ट्रीय संगोष्ठी को आयोजित किया । मानव संसाधन विकास, भारत सरकार के माननीय मंत्री, डॉ.एम.एम.पल्लम राजु, 8 वी अखिल भारतीय संस्कृत छात्र प्रतिभा महोत्सव 2014, पूर्ण अधिवेशन का उद्घाटन किया। उन्होंने प्रतिभागियों को प्रभावी ढग से संस्कृत के कौशलो को विकसित करने की सलाह दी। ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित प्रो. सत्यव्रत शास्त्री जी इस अवसर की शोभा बढाई। संसद सदस्य, तिरुपति डॉ. चिंतामोहन भी इस कार्यक्रम मे उपस्थित थे।

तीसरे दिन को 24-1-2014 धर्मशास्त्र, मिमांसा, सांख्या और वेदांत में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। धर्मशास्त्र में 19, मिमांसा में 15, सांख्या मे 20, और वेदांत में 19 छात्र भाग लिए। साहित्यिक प्रतियोगिता ओ के अंतर्गत समस्या पूर्ति और प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया। समस्यामूर्ति मे 47 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रश्नोत्तरी मे प्रारंभिक परिक्षा का आयोजन किया गया और 8 टीमों को फइनल केलिए चुने गए और कई दौरो केबाद सर्वशेष्ठ को चुना गया। अंतिम प्रतियोगिता एक पात्रा भिनय था और 12 दलो ने प्रतियोगिताओं में भाग लिया था।

दिनांक 25 जनवरी 2014 को समापन समारोह का आयोजन किया गया। श्री एम.जी.गोपाल, आई एस, कार्यकारी आधिकारी, तिरुमल तिरुपति देवस्थानम, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। ज्ञानपीठ पुर्स्कार विजेता प्रो.सत्यव्रत शास्त्री, सम्मानित अतिथि छात्रों को बहुमूल्य सुझाव दिए। डॉ.सी.रंगनाथन, समन्वयक ने कार्यक्रम की एक विस्तृत प्रतिवेदन प्रस्तुत की। गणमान्य व्यक्तियों ने विजेताओ को पुरस्कार वितरित किए। प्रथम पुरस्कार विजेता को एक स्वर्ण पदक, रु. 1000 एक प्रमाण पत्र, द्वितीय पुरस्कार विजेता को रजत पदक, 750 रु, एक प्रमाण पत्र, तृतीय पुरस्कार विजेता को एक कांस्य पदक, 500 रु. प्रमाणपत्र और सांत्वना पुरस्कार विजेता को 250 रु तथा एक प्रमाण पत्र दिया गया।

इस वर्ष रोलिंग शील्ड राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति के छात्रों द्वारा जीता गया था। डॉ भरतभूषण रथ, सहसमन्वयक ने धन्यवाद समर्पण किया था ।

(ऋ) 17 वें दीक्षांत समारोह -

दिनांक 5 मार्च 2014 राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, में 17 वे दीक्षांत समारोह आयोजित किया गया था। विद्वान प्रियब्रत दास सम्मानित मुख्य अतिथि के रूप मे उपस्थित थे। महामहिम प्रज्ञानवाचस्पति डॉ. जानकी वल्लभ पठनायक, माननीय असम के राज्यपाल तथा विद्यापीठ के कुलाधिपति ने अपना अध्यक्षीय भाषण दिया और प्रो. एच के. शतपथी, कुलपाति, विद्वनो का स्वागत किया।

17 वी. दीक्षांत समारोह में विद्यापीठ निम्नलिखित विद्वानों को मानद उपाधि से सम्मानित किया -

महामहोपाध्याय	वाचस्पाति
1. प्रो. अशोक कुमार कालिया	विद्वन प्रियब्रत दास
2. प्रो. पी.आर. रंगराजन	ब्रह्म श्री चागंटीकोटेश्वर राव
3. विद्वान श्री राजा एस. गिरिआचार्य	प्रो. एस रंगनाथ

कुल मिलाकर 108 छात्रों ने शास्त्री बीए स्नातक प्राप्त की। 108 छात्रो को स्नातकोत्तर आचार्या की डिग्री से सम्मानित किया गया। 277 उम्मीदवारो और 50 विद्वनो को क्रमशः विशिष्ट आचार्य (एम.फिल) और विद्यावारिधी पीएचडी की डिग्री से सम्मानित किया गया। दीक्षांत समारोह के दौरान 20 छात्रो को स्वर्णपदक और एन्डोमेंट नकद मिला।

विद्वान प्रियब्रत दास के दीक्षांत अभिभाषण का सार

प्राचीन समय में शिक्षा के लिए ब्रह्मचर्य और छात्र के लिए ब्रह्मचारी का नाम दिया गया था। ब्रह्मचर्य की अवधारणा वैदिक युग की एक अद्भुत खोज थी। महान बनने की आंदोलन ब्रह्मचर्य है। ब्रह्मा (महान) चर्या (आंदोलन)।

एक ब्रह्मचारी विलासिता का जीवन से अपने आप को बचाता और आधिग्रहण सामग्री तथा आध्यात्मिक ज्ञान के लिए प्रेरित करता है। शिक्षक ब्रह्माज्ञान प्रदान करता है अर्थात् देवत्व से छात्र पूर्ण जीवन जीने की शिक्षा देता है। अथर्व वेद के प्रसिद्ध सुक्ता की अंतिम कविता की कथन -

तानि कल्पद् ब्रह्मचारी सलिलस्य पृष्ठे तपोऽतिष्ठत्तप्यमानः समुद्रे।
स स्नातो बभ्रुः पिंगलः पृथिव्यां बहु रोचते।। (AV - XI - 5.26)

शिटाचार का आचार, वह समुद्रपर स्नान, भूरे, लाल कीसतह पर शानदार ढगसे तपस्या का प्रदर्शन खडा करता है।

मनुष्य निशचय तरीके से जन्म लेता है, जहाँ अन्य प्राणियाँ उनकी स्वाभाविक व्यवहार से तर्क और प्रशिक्षण के बिना जीने के लिए प्रवृत्त होते हैं। इसलिए वेद मनुष्य के दो जन्म बताये है। एक, माँ की खोक से पहला जन्म और दूसरा, अधिक महत्वपूर्ण है माँ से सीखना अर्थवेद का प्रबोधन -

"आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः।
तं रात्रीस्तिस्त्रम् उदरे बिभर्ति तं जातं द्रष्टुमभिसंयन्ति देवाः।।" (AV - XI - 5.3)

एक आध्यात्मिक शिक्षक, भर्ती लिए नए छात्र को एक भ्रूण, मान कर उसे अपने पेट में तीन रातो के लिए स्थान देता है (तीन विधियों को निकालने के लिए - आधिभौतिक, अधिदैविक, और आध्यात्मिक) पर्याप्त सभी दिव्य संस्थायाँ जन्म लिए उसे देखने के लिए इकट्ठा होते है।

शिक्षा का उद्देश्य न्सांसारिक और आध्यात्मिक ज्ञान का सम्मिश्रण है - यजुर्वेद का कथन -

"अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते" (YV. XI. 14)

विज्ञान का पीछा करते हुए मृत्यु पार काबू पाना तथा आध्यात्मिकता के माध्यम से अमरत्व प्राप्त करना। आदमी के अंतिम क्षण तक मनुष्य को सच्चाई तक पहुँचना, जीवन के हर कदम सच्चाई के लिए ही है। सच्चाई तक पहुँचने के लिए वेदो ने एक सीढी की सलाह दी के बरि बताते हुए-

"व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।" (YV. XIX. 30)

वह व्रत से अभिषेक, अभिषेक के माध्यम से दक्षता, दक्षता से श्रद्धा और श्रद्धा के माध्यम से विश्वास के आधार पर सच्चाई का ज्ञान होता है। मनुष्य के दिल में सच्चाई के मार्ग पर कई रुकावटें होते हैं। ये सब लगाव, क्रोध, वासना, लालच, गर्व और ईर्ष्या है। पक्षियों और जान वरों की बुराई, जीवन प्रतीक के रूपक में बताया गया है। ऋग्वेद की कविता -

हे प्रभु ! आप भेड, हंस, गिद्ध और कुत्ते के सभी आकर्षक दोष को भुला देते हो। अपनी देदीप्यमान की निगाहो को दुःख कार हरण कर देते हो -

"उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम्।
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र।। "(RV. VII. 104.22)

मनुष्य जुलाहा है जो अपने कार्यो के धागे के साथ निरंतर जीवन को बुनता है। अधिक गौरवशाली जीवन कपडा है। जुलाहा प्रकाश में बैठकर कपडा बुनता है ताकि कही बुना सामग्री में मोड या घाँठ न हो। वैसे ही मनुष्य भी ज्ञान का दीप के जरिए सभी कार्यो का प्रदर्शन करे मनुर्भावं आप जीवन रूपी कपडे का ज्ञान के प्रकाश के साथ बुन सकते हो। इस प्रकार आदमी बनने की प्रयत्न कर सकते हो। मनुष्य सांप्रदायिक विचारों को गले लगा कर घृणा, ईर्ष्या की भावना को छोडना शुरू करता है ''जनय दैवम् जन्म'' तब आप अन्य प्राणियो से अलग ही माने जाते है। जो देवत्व के लिए अपने आप को तरक्की के लिए योग्य माना। एक प्रबुद्ध की स्थिति जन्म और परमानंद की प्रभु के साथ निकटतास्थापित करता है निम्नानुसार पूरी कविता चलता है -

"तन्तुं तन्वन्रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मत: पथो रक्ष धिया कृतान्।
अनुल्बणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।। "(RV.X. 53.6)

अब 'मधुरेण समापयेत' वेदो की प्रसिद्ध मधुर कविता की भावना के साथ मुझे निष्कर्ष पर आने दो-

"मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धव:। -
माध्वीर्न: सन्त्योषधी:।।" (RV.1.90.6)

हे पवन, हमें आपके सुखद स्पर्श लग रहा है। आप हमारे भीतर नया जीवन फैला रहे हैं। हे नदी। अपनी मीठी वर्तमान और मधुर संगीत तथा खुशी के साथ हमारे मन भर दे। पेड, पौधे, बनस्पति की दुनिया हमें अपनी शुभ कामनाएँ भेजे। लेकिन कविता में शब्द छुपा है। सच्चाई केवल निम्नलिखित उन लोगों के लिए - जो पूरी दुनिया को मिठास और सुखद देता है। दुष्ट लोगो को रचना की मिठास नजर नहीं आती।

मेरे प्रिय स्नातक, मुझे विश्वास है कि आप को वेदों और अन्य संस्कृत ग्रंथो के महान संदेश का महत्व समझ मे आ गया है। राष्ट्र आप से बहुत सारी बातों की उम्मीद रखता है। अपने गहरी शास्त्र ज्ञान के साथ और अद्वितीय कौशलो से अपने अपने तरीके से अपने प्रिय मातृभूमि की वृद्धि और विकास की योगदान में सक्षम रहे स्नातक ब्रह्मचारिणों हमारे पूर्वजो द्वारा दिए स्नातक वैदिक संदेश का पालन करना है -

"सत्यं वद " "धर्मं चर " "स्वाध्यायान्मा प्रमद:" "मातृदेवो भव" "पितृदेवो भव" "आचार्यदेवो भव" "अतिथिदेवो भव"

कुलाधिपति का भाषण -

यह विश्ववियालय समय समय पर विभिन्नक्षेत्रो मे अभूतपूर्व प्रगति प्राप्त कर रहा है। विभिन्न पाठ्यक्रमों में छात्रों का नामांकन कई गुणा बढगया है। वर्तमान में, विश्वविद्यालय ने 1700 से अधिक छात्रों को नामांकित किया है। पुरुष और महिला छात्रों की संख्या बराबर अर्थात् 50-50 है। यह खुशी की बात है। मैं इस तरह की प्रवृत्तात्मक प्रतिस्पर्धा को असम के सामान्य विश्वविद्यालयों में देखता हूँ। जहाँ देश मे सबसे ज्यादा साक्षरता राज्य मिजोरम है।

जहाँ 95 लोग साक्षर है। और मेघालय जैसे कुछ राज्यों में पुरुषो की तुलना महिलायें अधिक साक्षर है। मैं एक कहानी याद दिलाता हूँ जो आदिशंकराचार्य की दार्शन चर्चा से संबंधित थी। मंडन मिश्र एक महान विद्वान थे, निर्णायिका उभय भारती, मंडन मिश्र कि पत्नी थी जिन्हों ने चर्चा में शंकराचार्य को विजेता के रूप में घोषित किया, इस उक्ति से उन दिनों मे ही महिला ओं की उच्च सशक्तिकरण की कल्पना कर सकते है। इसीलिए कहा जाता है कि -

आगर एक आदमी को शिक्षित किया जाता है, तो
एक व्यक्ति शिक्षित होता है,
अगर एक महिला को शिक्षित किया जाता है, तो
पूरा परिवार शिक्षित होता है।

हमारा देश का इतिहास महिला विद्वानों, शासकों, और योद्धाओं की कहानियों से भरा पडा है। उडिसा के इतिहास मे रानियो की एक वंश ने उत्तराधिकार बन कर शासन किया।

यह नोट करने कि बात है कि विअए ने हमारे विश्वविद्यालय को पारंपरिक शास्त्रो के विषय मे उत्कृष्टता केंद्र के रूप मे पहचानकर, हमे प्रोत्साहित कर रही है। कई शैक्षणिक और अनुसंधान कार्यक्रम विअए के सहयोग से योजना के अंतर्गत क्रियान्वित की जा रही है। इसके अलावा वर्त मान सत्र के दौरान शैक्षणिक कार्यक्रमों अनुसंधान गतिविधियाँ नियमित से, उत्कृष्टता केंद्र के क्षेत्र में प्रगति पा रहा है। छात्रों और कर्मचारियो के लिए कई नए केंद्रीय सुविधायों को जोड दिया है। विअए के सहयोग से हम संस्कृत साहित्य एक नया और प्रासंगिक व्याख्यान देने के लिए विभिन्न विषयों मे कई अभिनव पाठ्यक्रम और विशेष सहायता कार्यक्रम को बनाने में सक्षम है। बहुभाषी व्युत्तपत्ति शब्द कोश शीर्षक से परियोजना आरंभ किया गया है तथा इस संबंध में प्रगति अत्यधिक उत्साह वर्धक है।

इस संस्था की प्रगति के लिए कुलपति और उनके योग्य टीम को बधाई देता हूँ, मै उम्मीद करता हूँ कि, हमे प्रेरित करने के लिए आने वाले दिनो की सभी प्रगति जारी रहेगा।

मै इस विश्वविद्यालय की कुलाधिपति के रूप मे सतत हूँ तो इस की वजह है मेरी संस्कृत के प्रति प्यार और इस विश्वविद्यालय के गतिशील नेतृत्व वाले हरेकृष्णु शतपथी के प्रतिप्यार। संस्कृत हमारे देश की आत्मा के रूप में माना जाता है और जब तक देश रहेगा यह भी मौजूद रहेगा। यह प्राचीन भाषा हमे प्रभावित करने के लिए जारी रहेगा।

यावत् स्थास्यन्ति गिरय: सरितश्च महीतले ।
तावच्च संस्कृतभाषा लोकेषु प्रचरिष्यति ।।

संस्कृत का अध्यय हमे भारत के गार्व नागरिक बनाता है, क्यों कि जो हमारी जाति, पंथ, विभिन्न क्षेत्रो और उनके देशी भाषा ओं की परवाह किए बगैर यह भाषा हमें एक साथ रहने के लिएह्न बाध्य करती है। इसका संदेश विविधता में एकता है और इस देश में जन्म लेना बहुत ही गर्व की बात है।

चित्रं जम्बूद्वीपं मनोरमं जीवितं मनुष्याणाम् ।

अतः महान बद्धा ने कहा कि जब स्वर्ण नगर लंका, रामा और लक्षमण की पहली नजर में चका चौध करता है तो तब राम लक्षमण से कहा कि -

अपि स्वर्णमयी लङ्का लक्ष्मण ! मे न रोचते

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।।

जो सोलहवी सदी के महान संत श्रीमंता माधवदेव ने लिखा कि -

धन्यधन्यकलिकाल धन्यनरतनुभाल ।

धन्य धन्य भारतवरिष

तप जप यज्ञ तेजि तो आर चरने भोजि।

तोआनाम घोषिव हरिष ।।

जो लोग जीवन की चुनौतियो का सामना करने में असफल होते है, वे अपने भाग्य या कलियुग को दोषी ठहराते है। किंतु माधवदेव वर्तमान कलियुग की प्रशंसा ही नहीं बल्कि भारतियों के रूप मे जनम लेने की प्रशंसा भी की। उन्होने हमें, जप, यज्ञ को भुलाकर भारत की महिमा का गान करने को कहा। हालांकि, हमारा उद्देश्य हमारी मातृभूमि की महिमा गाते समय हमें अपने साश्वतमूल्यो के सच्चाई पर ध्यान देना है। हमारे जीवन में नैतिकता के उच्च भावनाये वयाप्त करना है।

आज, हमारे देश में जो हो रहा है वह अत्यंत चिंता जनक है। हमारे देश के शहरों में महिलाएँ स्वतंत्र रूप से चल नही सकती। टीवी और इंटरनेट युवा को गुमराह कर रही है। यवा, स्कूल के दिनो से ही शराब पीना एक आदत बना दिया है। मादकता शहरों से गाँवो को फैल गया है।सरकार की खजाना शराब की दुकाने भरता है इसलिए सरकार आधिक से अधिक शराब की दुकाने खोलने की लाइसेंस दे रहा है इसीलिए शराब की दुकानो हर जगह बहुतायत है। राज्यों के बीच अधिक आबकारी राजस्व अर्जित करने के बीच एक प्रतियोगिता है। क्या हम इस बुरे प्रवृत्ति की ओर लड सकते है जो हमारे नैतिक गिरावट की कारण है। मुझे लगता है कि हम चाहे तो कर सकते है। जीवन में कही भी हो हमे गाँधीवादी मूल्यों को बनाए रखना है जो हमारे आजादी के दौरान, किए गए संघर्ष से लोगो की जीवन शैली में बदलाव आथा।

बारहवीं योजना के दौरान, उच्चशिक्षा ने तीन महत्वपूर्ण घटकों अर्थात् समानता, विस्तार और उत्कृष्टता पर ध्यान केंद्रित करने का निर्णय लिया। उच्चसिक्षा के सफल नामांकन 25 अंतर्राष्ट्रीय औसत केसाथ बराबरी पर लाया जा रहा है।

उच्च शिक्षा के विस्तार के बडे पैमाने पर योग्य और प्रशिक्षित शिक्षकों की भर्ती की आवश्यकता है। यह एक दुष्चक्र जैसा है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए, हमे गुणवत्ता स्कूलो, कॉलेजो और विश्वविद्यालयों की जरूरत है। इस तरह के संस्थानो को प्रभावी ढंग से कार्य करने के लिए गुणवत्ता शिक्षको की जरूरत है। हमारे विश्वविद्यालय के 2/3 और कॉलेजों की 19% की गुणवत्त के मानकों पर औसत से नीचे की मूल्यांकन में है। प्राथमिक स्कूलों के विश्वविद्यालय के शिक्षण की गुणवत्ता में काफी सुधार लाना है और नैतिकता के बिना गुणवत्ता की कोई अर्थ ही नही, है।

1947 मे बहुत सालों के स्वतंत्रता बाद, हमारे तत्कालीन प्रधान मंत्री पंडित जवहरलाल ने हरू ने अलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि - एक विश्वविद्यालयमानवतावाद, कार्य के लिए, प्रगति केलिए, साहसिक विचारो केलिए, सत्य की खोज के लिए -- और मानवतावाद क्या है और सत्य की खोज क्या है, पंडित नेहरू आगे कहा, युवाओ में मूल्यो की स्थापित करने का एक जगह है विश्वविद्यालय।

एक विश्वविद्यालय अकेले विज्ञान और मानवता की शिक्षा के साथ पूरा नही माना जाता। पूरे विश्व मे भारत अपनी आध्यात्मिक शिक्षा को स्थाप्ति करने में अनूठी भूमिका निभाया है। आध्यात्म विद्या हमारे जीवन का पहला प्राप्ति होना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति सामग्री तथा आध्यात्मिक प्राप्ती की कोशि श्करना है।

अन्य देशों से गुणवत्ता शिक्षा की परंपरा हमारे देश को उपलब्ध है । विदेशी देशों से हमारे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों नलंदा, तक्षशिला, पुष्पगिरि आदि में छात्र भर्ती ले रहे हैं । हालांकि, बहुत लंबी अवधी के लिए समाज स्थिर है और भारत नवाचार और आत्म नवीकरण की कला खो दिया है । तदुपरांत पश्चिम में औद्योगिक क्रांति आई और फलस्वरूप आधुनिक विज्ञान और परिणाम स्वरूप प्रौद्योगिकी क्षेत्र में पश्चिमी वर्चस्व दुनिया के 200 वर्षों के लिए हो गया।

विश्वविद्यालय सिर्फ डिग्री और डॉक्टरेट प्रमाण पत्र जारी करने की संस्था हीं नहीं, बल्कि ज्ञान क्षेत्र है । यह अपने अंतर्गत ज्ञान का भंडार है जो सभी चाहने वालों को ज्ञान का प्रसार करती है । अनपढ और अर्ध शिक्षित जनता को शिक्षित करने के क्रम में उत्कृष्ट शिक्षकों का उत्पादन होगा । हमारे देश में आज कई आई आईटी संस्था है । 270 विश्वविद्यालय से अधिक और कई प्रसिद्ध अनुसंधान और विकास की केंद्रीय संस्थाएँ हैं । लेकिन रैंकिंग स्थिति हाँलांकि, हमारे विश्वविद्यालयों अभी भी दुःखद है । टाइम्स उच्च शिक्षा के अनुसार दुनिया में हमारे आई आई टी 50

वें. आई आई एम 84 वें में और प्रसिद्ध जेएनयू 192 स्थान पर हैं । चीन हम से काफी आगे है । दुनिया में बीजिंग विश्वविद्यालय को 15 वीं रैंक है । वर्ष 2012 की यह स्थिति अभी भी जारी है । समकालीन समाज में संस्कृत की स्थिति का अध्ययन करने और सुझाव देने की दृष्टि से भारत सरकार ने द्वितीय संस्कृत आयोग को नियुक्त किया, यह जानकर मुझे बहुत खुशी हुई । यह आयोग इस देश के महान विद्वान प्रो. सत्यव्रतशास्त्री के नेतृत्व में है । प्रहले संस्कृत आयेग डॉ. सुनील कुमार चटर्जी की अध्यक्षता में वर्ष 1956 में नियुक्त किया गया था । आयोग की सिफारिशों के आधार पर बहुत कार्य हमारे देश में संस्कृत बढ़ावा देने के लिए किया गया है । संस्कृत को बढ़ावा देने की आधुनिक प्रवृत्ति का पूरा ढाँचा समीक्षा और भावी दिनों के लिए एक नया रोडमैप तैयार करने की आवश्यकता है ।

मै आयोग को मुख्य रूप से माध्यमिक और उच्च माध्यमिक पाठ्यक्रम में एक अनिवार्य विषय के रूप में संस्कृत सीखने का एक प्रावधान करने की सुझाव देना चाहता हूँ । इसके अतिरिक्त सम्मेलन के बीच एक संतुलन कायम रखने की दृष्टि से विद्वान अंतर अनुशासनात्मक शोध का संचालन करे और आधुनिक तकनीक का प्रयोग करते हुए भारत के नक्शे में संस्कृत शिक्षा को दिखावें.

संस्कृत हमें एकता और देश की अखंडता, उच्च स्तरीय नैतिकता और परोपकारी जीवन सिखाता है ।

संस्कृत द्वारा सिखाया गया शाश्वत संदेश हमारे जीवन भर की गतिविधियों में परिलक्षित हो सके । इस प्रकार हमारे ज्ञान का उपयोग करना चाहिए ।

शिक्षाक्षियों के रूप में आप ने अपना कार्य सफलतापूर्वक संपन्न किया और अब आप की यात्रा ब्रह्मांड की ओर है जो कई अवसरें आपकी इंतजार में है । आप को यह नही समझना है कि आप की शिक्षा पूर्ण हो गया । हर कडी पर हमें कुछ न कुछ सीखने को प्राप्त होता है । यह पूरा ब्रह्मांड आप के लिए विश्वविद्यालय हो और सीखने की सतत प्रक्रिया जारी हो । हमे अपने कर्तव्य और जिम्मेदारियों के निर्वहण में हमारे शास्त्रों की महिमा को याद रखना है। आप खुले दिमाग के साथ ज्ञान के लिए सतत कोशिश करें । भगवान बुद्ध ने अपने शिष्यों से कहा कि - वे खुले दिमाग से सोचे और सच्चाई को सबूत के बिना स्वीकार मत करना । सौंदर्य के बल पर नहीं बल्कि दिमाग के बल पर कार्य करने को कहा।

प्रमाणं वीक्ष्य ग्राह्यं मद्वचः, न च गौरवात् ।

प्रिय स्नातक ! ज्ञान के लिए आप खुले दिमाग और अथक तलाश को जारी रखे । आप याद रखे कि आप इस महान देश के गर्व नागरिक है। आपने जो हासिल किया उस से अधिक से अधिक समाज आपसे प्राप्त करने की उम्मीद रखती है । दोस्तों मै आप सब को शुभ कामनाएँ देता हूँ, तथा अपना पथ आनंद से भरा रहे - **।। शिवास्ते सन्तु पन्थानः ।। - ।। जयहिन्द् ।।**

कुलपति संदेश -

श्रीश्रीस्वामिवेङ्कटेश्वरपदारविन्दपवित्री-कृतेऽस्मिन् तिरुपतिक्षेत्रे विराजमानेऽत्र राष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठज्ञानमन्दिरे

अस्माभिः सप्तदशदीक्षान्तसमारोहः परिपाल्यते। अस्मिन् मङ्गलमयमाहेन्द्रमुहूर्ते ललितलवङ्गलता परिशीलनकोमलमलयसमीरे अस्मिन् परमानन्दसन्दोहे मधुकरनिकरकरम्बित कोकिलकूजित-कुंजकुटीरे मधुमयसरसवसन्ते यथा नवपलाशपलाशवनैः मृदुलतान्तलतान्तकलापैः वासन्तम् उपवनं विराजते, तथैव भवादृशैः निमन्त्रितातिथिनवपल्लवैः बहुविधस्नातकाभिनवकुड्मलैः विद्वत्कुसुम-तल्लजैः समावर्त्तनसभाङ्गणमिदं नितरां संशोभते इति महान् आनन्दः ।

महामहिमशालिनां कुलाधिपतीनां **महामान्यराज्यपालप्रज्ञानवाचस्पतिडाक्टर्जानकीवल्लभ-पट्टनायक**महोदयानामाध्यक्ष्ये अनुष्ठीयमानेऽस्मिन् दीक्षान्तसमारोहे अस्माकं परममाननीयसारस्वतातिथीनां डक्टर्प्रियव्रतदाशमहोदयानामुपस्थितिः अस्माकं सर्वेषां कृते यथा प्रेरणाप्रदायिनी तथा आनन्दविधायिनी । हे माननीयाः दीक्षान्तसमा- रोहसारस्वतातिथयः ! तत्रभवतां भवतां न केवलं विशिष्टवैज्ञानिकरूपेण, अपि तु वेदविद्याविशारद-निरन्तरहवनकर्मसंपादनपवित्रीतान्तःकरणरूपेण संस्कृतस्य भारतीयसंस्कृतेश्च विकाशाय मार्गदर्शनमविस्मरणीयम्। अस्माकं सौभाग्यं यत् अद्यतनमहनीययज्ञकार्यसम्पादनार्थं यथा भगवत्या पद्मावत्या सह शङ्खपाणिः मुकुन्दः तथा सुरसरस्वतीस्वरूपिण्या डक्टर् शन्नोदेवीमहोदयया सह निरन्तरमेधमानः भवान् विराजते। अवसरेऽस्मिन् अत्र विराजमानयोः उभयोः तत्रभवतोः भवतोः पार्वतीपरमेश्वकल्पयोः कृतज्ञताविनिवेदनपूर्वकम् अभिनन्दनं शुभाभिनन्दनञ्च कुर्मः ।

हे वैज्ञानिकशेखर ! प्रियकथाप्रीतिप्रभाभास्कर !
वेदानां परिरक्षणेऽनवरतं ह्यानन्दतश्च तत्पर !
शन्नोदेविविभा-विभूषिततनो ! हे वेदवित् श्रोत्रिय !
हे श्रीमन्नतिथिप्रियव्रतविभो ! तुभ्यं सदा स्वागतम् ।।

सुहृदः ! अस्माकं विश्वविद्यालयस्य कृते ये महान्तः कल्पद्रुमाः, येषां छायायां वयं सर्वे संबर्द्धिताः, संरक्षिताः, ते भवन्ति अस्माकं महामान्याः कुलाधिपतयः प्रज्ञानवाचस्पति-डाक्टर्जानकीवल्लभपट्टनायकमहोदयाः । श्रीयुक्तपट्टनायकमहोदयाः न केवलं लोकप्रियाः जननायकाः वा सुप्रसिद्धाः राष्ट्रनीतिज्ञाः, अपि तु शिक्षा-साहित्य-संस्कृत-संस्कृतिक्षेत्रेषु विश्वविश्रुताः विद्वांसः। हे मान्याः कुलाधिपतयः ! विश्वप्रसिद्धविद्यानगरीवाराणसी भवतां

विद्यासाधनाक्षेत्रम् ; आकुमारीहिमाचलं सम्पूर्णं भारतवर्षं भवतां कर्मक्षेत्रम् ; महाभारतीयचेतनायोगात् समग्रा वसुधैव भवतां कुटुम्बकम् । वनारसहिन्दुविश्वविद्यालयमदनमोहनमालव्यस्मृतिपुरस्कार-केन्द्रसाहित्य- एकाडेमी-राज्यसाहित्यएकाडेमी-साहित्यभारती-उत्कलरत्न-विश्वभारती- पुरस्कार-प्रभृति बहुवहुमानपुरस्कृताः तत्रभवन्तो भवन्तः निरन्तरं भारतीय- धर्म-दर्शन-संस्कृति-संस्कृत-परम्परासंरक्षणतत्पराः इति अद्य धारा सदाधारा सदालम्वा सरस्वती । एतदर्थं तत्रभवतां भवतां संस्कृत-संस्कृतिक्षेत्रे विद्यमानमतुलनीयं दानं विविच्य केन्द्रसर्वकारैः पुनः द्वितीयवारम् अस्य राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य कुलाधिपतिरूपेण सम्माननं कृतम् । एतेन न भवताम् ; अपि तु अस्माकं विश्वविद्यालयस्य गौरववृद्धिः सञ्जाता ; एतेन वयं धन्याः, संस्कृतवाङ्मयः धन्यतरः, समग्रविद्यापीठपरिवारः धन्यतमः । विश्वविद्यालयस्यास्य या सुमहती प्रगतिः भवति ; सा केवलं भवतां मार्गदर्शनेन ; शुभाशीर्वादेन च सम्भवति । भूयोभूयः कृतज्ञताविनिवेदनपुरस्सरं वयं तत्र भवतां भवतां स्वागतं सुस्वागतञ्च व्याहरामः।

हे पूज्याः ! जननायकाः ! जनमनोमाङ्गल्यसंबर्द्धकाः !
भाषा-संस्कृति-संस्कृतप्रियकला-साहित्यसंरक्षकाः ! ।
हे वाचस्पतयः स्वयं धिषणया हे जानकीवल्लभाः !
हे दीक्षानिरताः कुलाधिपतयः ! सुस्वागतं स्वागतम् ।।

सुहृदः ! अस्मिन् दीक्षान्तसमारोहे ये विद्वांसः सम्मानजनक-डाक्टरेट्-उपाधिना विभूषिताः भवन्ति ते भारतवर्षस्य सुविदिताः संस्कृतिसम्पन्नाः संस्कृतविद्वांसः आचार्य अशोककुमारकालिआ-आचार्यपि.आर्.रङ्गराजन्-विद्वान्श्रीराज.एस्.गिरि आचार्य-विद्वान्डक्टर्प्रियव्रतदाश-ब्रह्मश्री चागण्टिराजावीरवेङ्कटबसवकोटेश्वरराव्-आचार्यएस्.रङ्गनाथमहोदयाः भवन्ति । एतेषां सर्वेषां विदुषां स्वस्वक्षेत्रेषु यत् यत् नैपुण्यमस्ति ; तेन समग्रसंस्कृतवाङ्मयः समृद्धः भवति ; अभवत् ; भविष्यति च। ते सर्वे संस्कृतसाहित्य-व्याकरण-वेद-दर्शनादिषु शास्त्रेषु कृतभूरिपरिश्रमाः, भारतीयदर्शनपरम्परायां महान्तः यशस्विनः, मानवजातेः कल्याणाय प्रतिश्रुतिबद्धाः विशिष्टाः समाजसेविनः । एतेभ्यः सर्वेभ्यः संवर्द्धनीयेभ्यः विद्वद्वरेभ्यः अहं विश्वविद्यालयपक्षतः अभिनन्दनं शुभाभिनन्दनञ्च व्याहरामि। अन्ये च ये निमन्त्रिताः अतिथयः, प्रबन्धकपरिषदः विद्वत्परिषदः सदस्याः, आचार्याः, कर्मचारिणः, वार्ताहाराः तथा प्रियतमाः स्नातकाः, गवेषकाः, स्वर्णपदकविजेतारः, छात्राः, छात्राश्च अत्र उपस्थिताः तेभ्यः सर्वेभ्यः स्वागतं सुस्वागतञ्च सानन्दं सादरं सान्तरञ्च विनिवेदयामि।

ऊ) वार्षिक एवं छात्रवास दिवस समारोह :

वर्ष के दौरान, दिनांक 6 मार्च 2014 को वार्षिक तथा छात्रावांस दिवस को. प्रो. एस. बी. रघुनाथाचार्य ओपन एयर ऑडिटोरियम मे आयोजित किया गया। श्री पोलाभास्कर, आई एएस, संयुक्त कार्यकारी अधिकारी, तिति देवस्थान्म, तिरुपति, मुख्य अतिथि थे। प्रो.हरेकृष्ण शतपथी, कुलपति ने समारोह की अध्यक्षता की।

छात्रावास दिवस समारोह विद्यापीठ में 8 मार्च 2014 को आयोजित की गई। प्रो.के.ई.देवनाथन, कुलपति, एस वी वैदिक विश्वविद्यालय के मुख्य अतिथि थे। प्रो.हरेकृष्ण शतपथी, कुलपति समारोह की अध्यक्षता की। प्रो.सी.उमाशंकर कुलसचिव, वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत की। डॉ.रानी सदाशिवमूर्ति, सांस्कृतिक समन्वयक द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों समन्वित किएगए।

ऋ) गण्यमान्यों की भेंट :

शैक्षिक, प्रशासनिक, पाठ्यक्रम और सहपाठ्यक्रम कार्यकलापों के संबंध मे निम्न लिखित गणमान्य व्यक्तियों, शिक्षाविद्, देश के विभिन्न भागों से प्रख्यात संस्कृत विद्वानों ने विश्वविद्यालय का भ्रमण किया।

डॉ.जानकी वल्लभ पट्टनायक
विद्यापीठ के माननीय कुलाधिपति

श्री एम.जी. गोपाल, ऐ.ए.एस.
कार्यकारिअधिकारी
ति.ति.दे., तिरुपति

डॉ. एम.एम.पल्लम राजु,
माननीय केंद्रीय मंत्रि,
एच.आर.डी, भारत सरकार

डॉ.चिंता मोहन,
माननीय संसद, तिरुपति

प्रो.सत्यव्रत शास्त्री,
ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित,
नई दिल्ली

डॉ. के. कुपारानी
राज्य मंत्री - राष्ट्र

क) अन्नदानम परियोजना :

राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के पुराने छात्र एवं शिक्षक संघ वालों ने यह निर्णय लिया कि देश के कोने-कोने से अध्ययन हेतु आए गरीब एवं मेधावी छात्र-छात्राओं को विद्यापीठ के छात्रावासों में मुफ्त रूप से खाना देना। इससे उनकी पढाई के लिए मन चिंता मुक्त रहेगा। इसके अतिरिक्त रखरखाव के लिए अन्य आवर्ती अनुदान रु. 50 लाख है। करीब 1778 छात्र विद्यापीठ में देश के अलग-अलग इलाके से आए रहते हैं। तकरीबन 1332 छात्र विद्यापीठ के हॉस्टलों में रहकर इस मुफ्त खाने का उपयोग लेंगे। इस संघ के विद्वानों, प्रोफेसरों, प्राचार्यों, शिक्षकों एवं अधिकारियों आदि आकर अन्नदानम् परियोजना व्यवस्था में बडे उदार मन से चावल और रूपये देने का निर्णय लिए हैं।

साथ ही तिरुमल देवस्थानम, तिरुपति ने 15 लाख रूपये का दान किया है। यह आवर्ती अनुदान बच्चों को कम खर्चे में बोजन देने के लिए दिया गया है। इस कम खर्चे का भोजन का उद्घाटन दिनांक 29 जुलाई, 2008 को माननीय कुलाधिपति जी ने किया है।

ख) छात्रों की उपलब्धियाँ -

1. निम्नलिखित छात्रों ने जे आर एफ प्राप्त की -

विद्यावारिधी (पीएचडी) जे आर एफ मे भर्ती छात्र -

1. श्रीमती जी. सुमेधा - साहित्य
2. श्री. अशोक कुमार दास - ज्योतिष
3. कु. प्रभासिनी - व्याकरण
4. श्री.एन.के.जगन्नाथन - न्याय

2. राजीव गाँधी फेलोशिप -

प्रशांत कुमार निखंडिया - शिक्षाशास्त्र

3. पोस्ट - डॉक्टरल फेलोशिप -

डॉ.सुजनी, को वि.अ.ए. ने सम्मानित किया। दिल्ली मे विशेषज्ञ समिति के आगे एक प्रस्तुति देने के बाद उन्हे चुना गया है। वह डॉ आर सदाशिव मूर्ति के मर्ग दर्शन मे काम कर रही है।

V. परियोजनाएँ

अ. पारंपरिक शास्त्रार्थ विषय के संबंध में उत्कृष्टता केंद्र

प्रस्तावना -

राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, अपने आप में एक अलग पहचान रखता हैं। इस संस्था का मूल उद्देश्य देश में अच्छे व्यक्तित्व और अच्छे नागरिकों को निर्माण करना तथा शास्त्र-संस्कृति ते उनको ज्ञानार्जन करवाना साथ ही साथ उसका विकास करवाना है। यह संस्कृत भाषा सभी को एकता में जोडनेवाली एक मजबूत कडी है। इसलिए इसकी राष्ट्रीय संस्कृति चारों तरफ छलकती है।

विद्यापीठ की स्थापना आंध्रप्रेदश तिरुपति में भगवान श्री वेंकटेश्वर के छत्र छाया में सन 1961 में शिक्षा विभाग, भारत सरकार द्वारा की गयी थी। सन् 1987 में विद्यापीठ को भारत सरकार ने संस्कृत प्रचार प्रसार हेतु संपूर्ण रूप से मानित विश्वविद्यालय के नाम पर घोषित कर दिया था। विद्यापीठ ने निम्नलिखित प्रमुख गतिविधियों को शुरू किया है-

1. संस्कृतभाषा और साहित्य, शास्त्रों के शिक्षण
2. अनुसंधान और प्रकाशन
3. नवाचारी परियोजनाएँ
4. संग्रह और पांडुलिपियों का संरक्षण
5. विस्तार कार्यकलापों

उत्कृष्टता केंद्र के संबंध में -

सन् 2002 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग- नई दिल्ली ने विद्यापीठ में पारंपरिक शास्त्रों के अंतर्गत संस्कृत भाषा का अध्ययन-अध्यापन एवं प्रचार-प्रसार हेतु उत्कृष्टा केंद्र की अनुमति दी गई थी। इसके संबंध में ३ करोड मंजूर की गई और उसके अंतर्गत शास्त्रार्थ संबंध में कई परियोजनायाँ का आरंभ राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ में किया गया है।

उत्कृष्टता केंद्र के अंतर्गत कई परियोजनाएँ चलाई जा रही हैं, वे सभी काफी महत्वपूर्ण कार्यों में अपना काम जारी रखे हुये हैं। इस योजना के अंतर्गत 13 कार्यक्रमों को लागू किया गया। यह कार्यक्रम तेजी से लुप्त होती पारंपरिक संस्कृत सीखने को अतः पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से, तथा आधुनिक तकनीक का उपयोग करते हुए संस्कृत शिक्षण/अध्ययन प्रक्रिया पांडुलिपि उपकरण आदि बनाने के लिए किया गया है।

पारंपरिक शास्त्रार्थ विषय से संबंधित में उत्कृष्टता केंद्र

चरण - II

दूसरा और तीसरा हप्ता अगस्त 2007 में राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के उत्कृष्टता केंद्र के पारंपरिक शास्त्रों संबंध

में जांच- पडताल समिति ने निरीक्षण कर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को सूचित करते ही वह उत्कृष्टता केंद्र के अंतर्गत ग्यारह वी योजना में 3.00 करोड रुपये की मंजूरी दी है। इस परियोजना की कार्य-सूची निम्न है। संबंधित पत्र संख्या 18/2002 (एन.एस./पी.ई) दिनांक 8 अक्तूबर, 2008.

प्राप्त परियोजना

1. शास्त्रवारिधि
2. प्रकाशन
3. आडियो और विडियो प्रलेखीकरण
4. आडियो - विडियो रिकार्ड केंद्र का निर्माण
5. लिपि विकास प्रदर्शिनी
6. प्राचीन पांडुलिपि अध्ययन के ईलेक्ट्रानिक साधन
7. संस्कृत स्वयं अध्ययन कीट्स
8. प्रलेखीकरण अर्टफ्याक्ट्स
9. पांडुलिपियों का डिजिटिलैजेशन
10. योग, दबाव प्रबंध एवं हेलिंग केंद्र
11. संगोष्ठीयाँ/कार्यशालाएँ
12. कंप्यूटर विज्ञान और संस्कृत भाषा तकनालजी में स्नातकोत्तर सेतु पाठ्यक्रम

योजना के निर्णय

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा इस योजना संबंधित विद्यापीठ के कुलपति जी ने समस्त संकाय प्रमुखों, विभाग के अध्यक्षों, अधिकारियों, संयोजनाधिकारियों और अन्य उत्कृष्टता केंद्र से संबंधितों को दिनांक 30 अक्तूबर 2008 शाम 4.00 बजे बधाई देते हुए उनसे निवेदन किए कि समिति के सभी सदस्यों ने उसे देखकर वित्तिय वर्ष के तदत सभी प्राध्यापकों को परियोजना के लिए प्रस्ताव रख कर मंजूरी लेने के लिए बताये। इसके संबंधित दिनांक 10.11.2008 सुबह 10.30 बजे कुलपति जी के अध्यक्षता में सह-समिति बैठक बुलाया गया था। माननीय कुलपति जी ने सभी सदस्यों को सराहते हुए वित्तीय वर्ष के तदत सभी प्राध्यापकों को परियोजना के लिए प्रस्ताव रख कर मंजूरी लेने के लिए बताया। उसके लिए एक एक्शन योजना भी उन्होंने तैयार की है। ग्याहवी योजना के अंतर्गत उत्कृष्टता केंद्र द्वारा चलाए - जानेवाले चरण - II के कार्यक्रमों की सूची निम्न रूप से बनाई गई है।

पारंपरिक शास्त्रार्थ विषय में उत्कृष्टता केंद्र पर लिए गए निर्णयों का प्रतिवेदन

सलाहकार समिति की बैठक -

दिनांक 13 जनवरी 2011 श्री गुणशेखरण, सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति के सलाहकार समिति की बैठकमें पधारे। सभी परियोजना निर्देशकों ने लिए गए परियोजनाओं

की प्रगति और प्रत्येक परियोजना की पवरपाईंट प्रस्तुतीकरण किया। युजीसी के माननीय सदृश्य ने प्रस्तुतीयों को देखकर विभिन्न परियोजनाओं के परिणाम में लाभ पाने के लिए आवश्यक प्रतिक्रिया और बहुमूल्य सूझावों को दिया।

सलाहाकार समिति की बैठक से सी.ओई.कार्यक्रम की विभिन्न परियोजनाओं की कार्य प्रगति की समीक्षा के लिए। नियमित रूप से समीक्षा बैठकों को आयोजित किया गया।

1. कार्यक्रम का नाम - शास्त्रवारिधि

जुलाई-अगस्त २०१३ के दौरान ज्योतिष में ३० छात्रों को लेकर एक लघु अवधि पाठ्यक्रम आयोजित किया गया था।

2. कार्यक्रम का नाम : प्रकाशन

इस कार्यक्रम के अंतर्गत, ५० पुस्तकें प्रकाशित किए गए। इन पुस्तकों के अतिरिक्त, विद्यापीठ ने भारी माँग और लोकप्रिय विषय जैसे रामायण की भी सीडियों का आविष्कार किया। संस्कृत को आम आदमी के करीब लाने के लिए श्री रामानुजाचार्युलु और श्री चैतन्य महाप्रभु के जीवनी और दर्शन तथा उनके संदेशों को सरल भाषा में तैयार कर, अंतिम रूप दिया गया और प्रकाशन के लिए तैयार है।

वर्ष २०१३-१४ के दौरान कुल २३ पुस्तकें प्रकाशित किए गए थे।

3. कार्यक्रम का नाम : आडियो और विडियो प्रलेखीकरण

इस कार्यक्रम के अंतर्गत १०० घंटे / वर्ष @ शास्त्रिक प्रवचनों का रिकॉर्डिंग किया गया। व्याख्यान और शास्त्रों पर विचार विमर्श संस्कृत में परंपरागत तरीके से संबंधित चयनित विषयों - अद्वैत वेदांत और द्वैत वेदांत - १० घंटे और साहित्य शिक्षण की तकनीकें - ३५ घंटे रिकार्ड की गई हैं। यह छात्रों और शोधकर्ताओं के लाभार्थ प्रस्तुत किया जा रहा है।

4. कार्यक्रम का नाम : आडियो और विडियो रिकॉर्डिंग केंद्र

स्टूडियो के बाहर रिकॉर्डिंग : 8 वीं अखिल भारतीय संस्कृत छात्र प्रतिभा महोत्सव 2013-14, 17 वीं विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह, भाषण, संगाष्ठी, अखिल भारतीय संस्कृत महिला सम्मेलन और पट्टाभिरामशास्त्री व्याख्यानमाला ई-स्टूडियो में रिकॉर्डिंग किया गया।

विवेकानंद की 150 वीं जयंती समारोह, वैशेषिक उत्सव राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के अंतर्गत ऑडियो वीडियो रिकॉर्डिंग केंद्र गतिविधियों के साथ विवेकानंद के संस्कृत गीतों का संग्रह का भी आयोजन किया गया। सीडी में कुछ गाने राष्ट्र के लोकप्रिय गायक और कर्मचारी तथा विद्यार्थियों द्वारा भी गीत गान करवाया गया।

5. कार्यक्रम का नाम : लिपि विकास प्रदर्शिनी (लिपि तथा लिखित गैलरी)

लिखित गैलरी परियोजना का आयोजन तथा जगद्गुरु श्री आदिशंकराचार्य की जीवनी और दर्शन का आर्ट गैलरी की व्यवस्था की गई थी। ''इलस्ट्रेटेड लैफ हिस्टरी ऑफ श्री चैतन्य'' किताब, प्रकाशन के लिए तैयार है। श्री रामानुजाचार्य की जीवनी की दूसरा पुस्तक प्रगति पर है।

6. कार्यक्रम का नाम : प्राचीन लिपि अध्ययन के विद्युत उपकरण

उपरोक्त लिखित विषय के लिए लिपि लेआउट तैयार है और एक स्वयं सीखने की सीडी का प्रारूप लागू होने की प्रक्रिया जारी है ।

7. कार्यक्रम का नाम: संस्कृत स्व- अध्ययन कीट्स (व्याकरण आसान बनाया गया (भाग-I)

इस परियोजना के तहत संस्कृत वर्णनमाला तैयार कर, अभ्यास तथा संस्कृत वर्णमाला के कुछ अभ्यास पाठ तैयार किए गए । संधि के नियम और कुछ संधि नियम के अभ्यास तैयार किया गया । संस्कृत स्व अध्ययन के अंतर्गत १ से १२ वीं कक्षा तक विभिन्न स्तरों को उद्देशित करते हुए बनाया गया । इसके लिए पाँच समूह बनाये गए । १ से ५वीं कक्षा की पाठ का अंतिम रूप कर प्रकाशन के लिए तैयार हैं ।

8. कार्यक्रम का नाम: प्रलेखिकरण अर्टिफ्याक्ट्स

i) **उद्देश्य:**

यज्ञ हवनों को करने से संस्कृतियों का पालन करने जैसा होता है। इस चरण अंधों के संबंध में किया। चित्रीकरण अडियो- विडियों द्वारा बनाया गया है। इस में प्राचीन काल के यज्ञायुधों का प्रयोग इस परियोजना में क्रमानुसार में किया गया है।

9. कार्यक्रम का नाम : पांडुलिपियों का डिजिटलाईजेसन

पांडुलिपियों को डिजिटलाईजेसन उत्कृष्टता केंद्र परियोजना में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इस परियोजना में क्रमानुसार शीर्षकों को कंपोज किया गया है। पांडुलिपियों के वर्णनात्मक सूची तैयार करने के लिए परियोजना अध्येयताओं और संपादकों को नियुक्त किया गया है। वर्तमान में सूची का कार्य भी पूरा हो गया है ।

10. कार्यक्रम का नाम : योग दबाव प्रबंध और चिकित्सा केंद्र

कई शिबिरों का आयोजन योग दबाव प्रबंध के अल्पकालिक पाठ्यक्रम के साथ किया गया ।

11. कार्यक्रम का नाम : संगोष्ठियाँ/कार्यशाला

सीओ ई परियोजनाओं के तत्व विषयों पर आयोजित संगोष्ठियाँ और कार्यशाला।

12. कार्यक्रम का नाम : स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में सेतु पाठ्यक्रम - कंप्युटर विज्ञान संस्कृत भाषा तकनीकी

किए गए कार्य का विवरण

शैक्षणिक वर्ष के दौरान, निम्नलिखित गतिविधियॉ जगह ले ली :

* शैक्षणिक वर्ष 2011-12 में विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली एम एस सी (कम्प्यूटर विज्ञान और भाषा तकनीकी) शुरू की गई थी ।
* शोध के एक भाग के रूप में, पहले बैच के छात्रों को सांख्यिकीय विकसित संस्कृत भाषा के लिए दोनों संज्ञा और क्रिया के लिए मार्फलाजिकल उपकरण ।

* 100%परिणाम प्रथम श्रेणी में हासिल किए गए।

* पहले बैच के सभी छात्रों को एच.डी.एफ.सी बैंक, और इन्फोसिस, बंगलौर में कार्यरत चुना गया ।

इस बढौती को देखकर छात्र अधिक संख्या में इस पाठ्यक्रम को इस वर्ष के दौरान लेने के लिए इच्छालु हैं ।

आ. उत्कलपीठ :

उडिसा सरकार द्वारा प्रायोजित उत्कलपीठ अध्ययन केंन्द्र सन् 2000 में राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ में प्रारंभ किया गया है। उसका प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार है -

इसके अंतर्गत भगवान जगन्नाथ संस्कृति, श्री चैतन्य की दार्शनिकता और जयदेव साहित्य का अनुसन्धान कर अमर संदेश को मुद्रित कर समाज के समक्ष रखना एक महान् कार्य है।

संपादन, संकलन और पुस्तक प्रकाशन, प्रपत्रों और आलेखों इन तीन बातों पर जोर दिया जाता है।

इस वर्ष राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति के मार्गदर्शन एवं कार्यान्वयन में उत्कलपीठ ने कार्यशालाएँ, गोष्ठियाँ, प्रकाशन, प्रदर्शिनी आदि का आयोजन किया है।

श्रीसारंगधार रायगुरु, आई,पी.एस (सेवानिवृत्ति), पुरी द्वारा रचित ''जगन्नाथ शक्तकल्पा'' रचना की प्रकाशन कार्य जारी है ।

इस शैक्षणिक वर्ष में प्रकाशन :

(i) दिनांक 2 और 3 सितंबर 2013 उत्कल पीठ, जगन्नाथ चेतना, पुरी के सहयोग से ''नीलाचल और सिंहाचल के तुलनात्मक अध्ययन शेषाचल के विशेष संदर्भ में'' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया । संगोष्ठी का उद्घाटन पुरी के स्वामीजी सच्चिदानंद दास महाराज द्वारा किया गया और प्रो. हरेकृष्ण शतपथी, विद्यापीठ के कुलपति ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की । श्री रवीन्द्रनाथ प्रतिहारी श्री असित महन्ती, अध्यापक सुनील रथ, श्री रामचंद्र दास महापात्र, श्रीमती श्रद्धांजली कानूनगो, प्रो. जी.एस.आर. कृष्णूर्ति, प्रो. सी. ललिताराणी, डा. सी. रंगनाथन, डा. आर. सदाशिवमूर्ति, डा. के. राजगोपालन, डा. एस. एन. आचार्य आदि विद्वान उपस्थित थे । विद्यापीठ के कुलसचिव प्रो. आर.के. ठाकुर समापन सत्र के मुख्य अतिथि थे । उपरोक्त उल्लिखित सत्रों में डा. राधागोविंद त्रिपाठी, समन्वयक, डा. ज्ञान रंजन पण्डा, सह समन्वयक डा. ए.के. नंदा रिसर्च असोसिएट और अन्य उपस्थित थे ।

(ii) प्रो. अलेख सीएच. सडंगी (राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त) पूर्वकुलपति, श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी ने दिनांक 10 नवंबर 2013 जगन्नाथ संस्कृत पर भाषण दिया और उत्कलपीठ द्वारा सम्मानित किया गया । कुलपति प्रो. एच.के. शतपथी समारोह की अध्यक्षता की । डा. राधागोविंद त्रिपाठी, समन्वयक, और सह-समन्वयक डा. ज्ञानरंजन पण्डा, डा. ए.के. नंदा, अनुसंधान एसोसिएट भी उपस्थित थे ।

(iii) दिनांक 30 मार्च 2014 उड़ीसा न्यायायलय के न्यायाधीश श्री देबब्रत दास द्वारा जगन्नाथ संस्कृति पर विशेष व्याख्यान दिया गया । उत्कलपीठ द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया । कुलपति प्रो. एच.के. शतपथी ने समारोह की अध्यक्षता की । डा. राधागोविंद त्रिपाठी, समन्वयक, और सह-समन्वयक डा. ज्ञानरंजन पण्डा, डा. ए.के. नंदा, अनुसंधान एसोसिएट भी उपस्थित थे ।

इ. सॉप (विशेष सहायक कार्यक्रम)

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग - साप के मदद से तीन विभागों को अनुदान प्राप्त हुआ है - साहित्य विभाग शिक्षा विभाग और दर्शन विभाग ने प्राप्त किया था ।

(i) साहित्य विभाग :

दिनांक 1.4.2013 से 31.3.2018 तक वि.अ.ए. ने सॉप साहित्य डी.आर.एस.-1 से डी.आर.एस.2, 5 वर्ष की अवधी के लिए उन्नयन की मंजूरी दी । सॉप में डी.आर.एस.-2 के महत्वपूर्ण क्षेत्र में ''भरत के समय से संस्कृत काव्यशास्त्र में तकनीकी शब्दों का विश्वकोश'' है । 31.00 लाख से अधिक राशी तथा प्रोजेक्ट फेलोओं की मंजूरी दी गई । प्रो. सी. ललिताराणी समन्वयक और डा. के. राजगोपालन सह समन्वयक हैं ।

प्रतिवेदन के तहत दिनांक 31.3.2014 डी.आर.एस. - द्वितीय की प्रथम सलाहकार समिति की बैठक हुई थी । नई दिल्ली, एल.बी.एस. आर.एस. विद्यापीठ के प्रो. आर.के. पाण्डेय वि.अ.ए. नामित ने बैठक में भाग लिए। अन्य सदस्य प्रो. एच.के. शतपथी, कुलपति, प्रो. सी. उमाशंकर कुलसचिव, प्रो. एस. सुदर्शन शर्मा, प्रो. आर.के. ठाकुर, प्रो. जी.एस.आर. कृष्णमूर्ति, प्रो. सी. ललिताराणी और डा. के. राजगोपालन उपस्थित थे ।

(ii) शिक्षा विभाग :

विशेष सहायता कार्यक्रम के तहत शिक्षा विभाग को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग वित्तीय सहायता के लिए चयनित किया था । यह 2009-10 से पाँच वर्षों के अवधि के लिए डी.आर.एस. फेस-1 स्तर पर किया जाएगा । 29.50 लाख रुपए की वित्तीय सहायता की वित्तीय दिशा में मंजूर किया गया था । ''भाषा विकास और सामग्री उत्पादन'' पर कार्यक्रम है ।

परियोजना उद्देश्य : - भाषा व्यक्ति के व्यक्तित्व के समग्र विकास में प्रमुख भूमिका निभाता है । यह भी एक एकीकृत बल है । इसलिए पाठ्यक्रम के हर स्तर पर भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है । भाषा को सरल और प्रभावी रूप में सिखाने की जिम्मेदारी शिक्षक शिक्षा विभागों पर है । शास्त्रीय भाषा भी सांस्कृतिक विकास में प्रमुख भूमिका निभाती है । इसके अतिरिक्त वे संस्कृति के संरक्षण के मुख्य श्रोत हैं । भारत एक बहुभाषी देश होने के नाते, शास्त्रीय भाषाएँ जैसे संस्कृत एक इकाई के लोगों को स्थानीय भाषा के संवर्धन के लिए सिखाया जाना चाहिए । इस वर्ष में विशेष सहायता कार्यक्रम मुख्य विषयों पर ध्यान देगा।

सलाहकार समिति की बैठ की प्रतिवेदन :- दिनांक 31 मार्च 2014 सलाहकार समीति की बैठक माननीय कुलपति प्रो. हरेकृष्ण शतपथी की अध्यक्षता में की (1) प्रो. एस. सुदर्शन शर्मा (सदस्य) प्रो. एन.लता (सदस्य) प्रो. के. रविशंकर मैनोन, समन्वयक, प्रो. रजनीकांत शुक्ल, सह समन्वयक बैठक में भाग लिए । समन्वयक ने सलाहकार समिति के सदस्यों का स्वागत किया । समिति के गतिविधियों की समेकित प्रतिवेदन की समीक्षा की और संतोष व्यक्त किया । डी.आर.एस. -2 की भविष्य योजना की सविस्तार से चर्चा की गई । सदस्यों ने किए गए गतिविधियों की प्रभावशाली प्रतिवेदन वि.अ.ए. को सहमति भेजने की राय दी ।

वर्ष 2013-14 के दौरान किए गए महत्वपूर्ण कार्य :-

(1) शास्त्रीय भाषा शिक्षण के मौजूदा तरीकों की समीक्षा संस्कृत के विशेष संदर्भ में (पूर्ण)

(2) संस्कृत प्रयोग की शिक्षा देने के लिए आधुनिक शिक्षण पद्धतियों का आयोजन किया गया।

(3) विभिन्न अधिग्रहण भाषा सिद्धांतों की प्रदर्शनी प्राचीन भारतीय दार्शनिक ग्रंथों में प्रदर्शन - सामग्री एकत्रित किया गया ।

(iii) दर्शन विभाग :

प्रतिष्ठित विशेष सहायता कार्यक्रम राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के दर्शन विभाग की मंजूरी विश्व विद्यालय अनुदान आयोग द्वारा दी गई । गंगेश उपाध्याय की तत्व चिंतामणि पर टिप्पणियाँ और उपटीकाओं का महत्वपूर्ण सर्वेक्षण'' परियोजना शीर्षक है । प्रो. ओ.श्रीरामलाल शर्मा समन्वयक और प्रो. पी.टी.जी.वाई. संपतकुमाराचार्युलु अतिरिक्त समन्वयक हैं ।

दिनांक 10 दिसंबर 2013 राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति में कुलपति के कक्ष में दूसरा सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन किया गया । कुलपति प्रो. हरेकृष्ण शतपथी ने बैठक की अध्यक्षता की । वारणासी के बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वैदिक दर्शन विभाग के प्रो. राजाराम शुकग्ल को बाहरी विशेषज्ञ के रूपमें और प्रो. के.ई. देवनाथन तथा के. रामसूर्यनारायण आंतरिक विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया गया । प्रो. ओ. श्रीरामलाल शर्मा, सॉप दर्शना के समन्वयक और प्रो. पी.टी.जी.वाई. संपत्कुमाराचार्युलु अतिरिक्त समन्वयक ने बैठक की कार्यवाही की जानकारी दी । परियोजना के लिए गए प्रगति की जाँच सदस्यों ने अच्छी तरह से की थी । समिति के सदस्यों ने परियोजना की प्रगति पर अपनी संतुष्टि की पुष्टी कर परियोजना की समुन्नति के लिए बहुमूल्य सुझाव दिए ।

सॉप से संबंधित संकाय सदस्यों और कर्मचारियों की भेंट -

न्याय विभाग, विशेष सहायता कार्यक्रम से संबधित संकाय सदस्यों और परियोजना अध्येताओं ने विभिन्न स्थानों और पुस्तकालयों - अडयार पुस्तकालय, जी.ओ.एम.एल., चेन्नई, सरस्वती महल पुस्तकालय, तंजाऊर, बी.एच.यु. वारणासी, श्री वेंकटेश्वर प्राच्य पुस्तकालय, प्राच्य अनुसंधान पुस्तकालय, मैसूर, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय पुस्तकालय, दरभंगा, का दौरा किया और विभिन्न पांडुलिपियों से प्रासंगिक और आवश्यक डेटा सॉप प्रगति के लिए किया ।

सदस्य की भेंट :-

प्राच्य कॉलेज के डा. विश्वनाथ शास्त्री, प्राचार्य को परियोजना की प्रगति निर्धारित करने के लिए विद्वान अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था । उन्होंने देश भर में गंगोपाध्याय के तत्वचिंतामणि की टिप्पणियों पर विभिन्न प्रकार के पांडुलिपियों की बहुमूल्य जानकारी दी । उन्होंने अलोक सिद्धाञ्जनम नामित अलोका, तत्व चिंतामणि की टिप्पणी पर श्री अन्नंभट्ट द्वारा लिखित उपटिप्पणियों पर एक विस्तृत ब्योरा दिया । उन्होंने तत्वचिंतामणि जयदेव और अन्नंभट्ट के टिप्पणियों के संदर्भ पुस्तकें बताया । उन्होंने तर्कसंग्रहदीपिका, तर्कसंग्रह दीपिका प्रकाशिका, न्याय सिद्धांतामुक्तावलि और दिनकरी जैसे प्रकरण ग्रंथों के बारे में परियोजना अध्येताओं को समझाया ताकि वे तत्वचिंतामणि के मुख्य पाठ को समझ सके ।

अब तक किए गए कार्य का प्रतिवेदन :-

परियोजना का कार्य सलाहकार समिति के सदस्यों द्वारा बनाई योजना के अनुसार किया जा रहा है । सलाहकार समिति के सुझावानुसार, गंगोपाध्याय का तत्वचिंतामणि पर प्रकाशित अप्रकाशित कार्यों को सूचीबद्ध किया गया । योजनानुसार तत्वचिंतामणि की उपलब्ध टिप्पणियाँ तथा उपटिप्पणियों जो देश भर मुद्रित या । पांडुलिपियों में हैं उन्हें पहचान कर सूची तैयार की गई है । सलाहकार समिति के निर्देशानुसार इन सूचियाँ को क्रमादेशित या डेटाबेस में संग्रहीत किया गया ।

परियोजना गंगोपाध्याय का तत्वचिंतामणि की मुद्रित पुस्तकों पर एक ग्रंथ सूची तैयार की गई । यह तत्वचिंतामणि और अपनी टिप्पणियों पर अनुसंधान कर रही शोध छात्रों के लिए अत्यंत उपयोगी होगा । विभिन्न विषयों से संबंधित ग्रंथ सूची सब के लिए लाभदायक होगा । यह बडी आसानी से पूरे पुस्तकों का अध्ययन किए बिना पुस्तक की पहचान कर चर्चा की विषय बनाकर पूरी जानकारी देती है ।

अप्रकाशित कार्यानुसार, देश भर के पुस्तकालयों से डेटा एकत्रित किया गया था । नए पुस्तक सूचियों की मदद से कई अप्रकाशित तत्वचिंतामणि की टिप्पणियाँ तथा उपटिप्पणियाँ को पहचाना गया । देश भर के विभिन्न भागों से उपलब्ध पांडुलिपियाँ जैसे - अडयार पुस्तकालय, जी.ओ.एम.एल. पुस्तकालय, तंजाऊर, सन्वति महल पुस्तकालय, गंगानाथ झा अनुसंधान संस्था, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति, एस.वी. प्राच्य अनुसंधान पुस्तकालय आदि सूची बद्ध किया गया । तत्वचिंतामणि पर अप्रकाशित कार्यों का एक और डेटाबेस तैयार करने का कार्य प्रगति पर है । कई दुर्लभ पांडुलिपियों का नकल किया गया ।

सलाहकार समिति द्वारा तैयार किए गए योजना अनुसार तत्वचिंतामणि की टिप्पणियाँ और उपटिप्पणियों के लेखकों की सूची बनाया गया । सूची लेखक का समय, जन्म स्थान, पारिवारिक संबंध और तत्वचिंतामणि पर किए गए कार्य से संबंधित है । सूची नव्य न्याय और गंगोपाध्याय से संबंधित विभिन्न संदर्भ सूचियों की सहायता से तैयार किया गया है ।

द्विदिवसीय संगोष्ठी में प्रख्यात विद्वानों द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रपत्रों को पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया।

विभाग के संकाय सदस्यों को आधारिक संरचना की सुविधाएँ :

विशेष सहायता कार्यक्रम के तहत, दर्शन विभाग 5 कंप्यूटर, इंटरनेट, रिप्रोग्राफिक सुविधा अर्थात् ज़ेराक्स मशीन, स्कैनर, लेजर जेट प्रिंट, स्टील अलमिर, यूपीएस. लॉप-टॉप आदि उचित आचरण और शोधकार्य कार्यान्वयन के लिए सज्जित किया गया ।

पुस्तकालय का विकास :- विशेष सहायता कार्यक्रम के अंतर्गत, विभाग ने विभिन्न श्रेणियों में 200 से अधिक पुस्तके अर्थात् प्राचीन न्याय, नव्यन्याय, वैशेषिका, मिमांसा, सांख्य, वेदांत, शब्दकोश और विश्वकोश संबंधित पुस्तकालय विकसित किया । परियोजना 25 संस्करणों की नए पुस्तक सूची, संस्कृत वर्णमाला रजिस्टर और मद्रास विश्वविद्यालय के लेखक से संबद्ध कार्य है । नई पुस्तक सूची पत्र देश के विभिन्न भागों में उपलब्ध गंगोपाध्याय की तत्वचिंतामणि पर विभिन्न दुर्लभ पांडुलिपियों को खोजने में बहुत उपयोगी है ।

इस वर्ष, उपरोक्त पुस्तकों के अलावा, दर्शन शास्त्र की विभिन्न शाखाओं पर 200 से अधिक पुस्तकें खरीदी गयी है । मुर्दित रूप में उपलब्ध तत्त्वचिंतामणि सिद्धांतो की बेहतर समझ के लिए, तत्त्वचिंतामणि से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में संबंधित कई पुस्तकें खरीदी गयी ।

ई . प्रमुख अनुसंधान परियोजनाएँ

1. 3 वर्ष की अवधी के लिए ''संस्कृत के बहु शब्द भाव निकालना'' शीर्षक परियोजना वि.अ.ए. द्वारा मंजूर की गई । प्रो. आर.जे. रमाश्री मुख्य अन्वेषिका है । 11,85,800/- की राशी मंजूर किया गया था और रुपये 7,16,800/- की राशी पहले किस्त के रूप में जारी किया गया था । राशि खर्च की जा चुकी है और अनुदान की शेष राशि का इंतजार है ।

2. दो वर्ष की अवधी के लिए ''श्रीमदांध्र भागवत में मानवीय मूल्य'' शीर्षक परियोजना वि.अ.ए. द्वारा मंजूर की गई । डा. नल्लन्ना प्रधान अन्वेषक हैं । रु 4,95,800/- मंजूर किया गया था और रुपये 3,57,500/- की राशि - पहले किस्त के रूप में जारी किया गया था । राशि खर्च की जा चुकी है और अनुदान की शेष राशि की प्रतीक्षा है ।

3. सामान्य अनुसंधान परियोजना :- दो वर्ष की अवधी के लिए ''कुछ गुणवत्ता आश्वासन पहलुओं की वेब डिजाईनिंग भारत विश्वविद्यालय वेब साइटों की विशेष संदर्भ में'' शीर्षक परियोजना मंजूर की गई । डा. जी. श्रीधर प्रधान अन्वेषक हैं । रु. 1,80,000/- की राशि मंजूर किया गया था और रु. 1,20,000/- की राशी पहले किस्त के रूपमें जारी की गई । राशि खर्च की जा चुकी है और अनुदान की शेष राशि की प्रतीक्षा है ।

4. प्रमुख अनुसंधान परियोजना :- दो वर्ष की अवधी के लिए ''गीतगोविंद की नकल में लिखा अप्रकाशित राग काव्यों के महत्वपूर्ण संस्करण नामक परियोजना को मंजूर किया गया । डा. सोमनाथ दास प्रधान अन्वेषक हैं। रु. 5,49,100/- की राशी मंजूर किया गया था और रु. 3,21,100/- की रकम पहले किस्त के रूप में जारी किया गया । राशि खर्च की जा चुकी है और अनुदान की शेष राशि की इंतजार है ।

5. ''भारत में संस्कृत पत्रिकाओं की प्रलेखीकरण'' शीर्षक से दो वर्ष की परियोजना मंजूर की गई । डा. जी. गोपालरेड्डी (सेवानिवृत्त) प्रधान अन्वेषक हैं । रु. 5,69,300/- की राशि मंजूर किया गया था और रु. 3,32,800/- की राशी पहले किस्त के रूप में मंजूर की गई । रकम खर्च की जा चुकी है । और अनुदान की शेष राशि की प्रतीक्षा है ।

6. प्रमुख अनुसंधान परियोजना : - ''व्युत्पत्ति विषयक बहुभाषी शब्दकोष की तैयारी'' शीर्षक दो वर्ष की परियोजना मंजूर की गई थी । डा. के. सूर्यनारायण प्रधान अन्वेषक हैं । रु. 10,00,000/- की राशि मंजूर किया गया था और रुपये 7,50,000/- की राशी पहले किस्त के रूप में जारी किया गया था । राशि खर्च की जा चुकी है और अनुदान की शेष राशि का इंतजार है ।

7. प्रमुख अनुसंधान परियोजना : - ''श्रीपति 11 वींशती की सिद्धांत शेखर भाग - 2 के अंगेजी अनुवाद संस्करण के साथ'' परियोजना मंजूर किया गया था । डा. ए. श्रीपाद भट्ट प्रधान अन्वेषक हैं । रु. 95000+95000= 1,90,000/- जारी किया गया था । राशि खर्च की जा चुकी है और अनुदान की शेष राशि की इंतजार है ।

VI. आधारिक संरचना

अ. ग्रंथालय :

विद्यापीठ ग्रंथालय की मुर्दित पुस्तक संग्रह 2,688 पुस्तकों जोडकर, 1,101,680 तक बढ़ गया। कुल पांडुलियों का संग्रह 8,006 शीर्षकों के साथ 3,903 तक बढ़ गया है । दिनांक 31.3.2014 के आँकडे के अनुसार श्री शिव नागेश, शोधछात्र द्वारा डिजिटल के रूप में उपहार दिया गए 6 पांडुलिपियाँ है। ग्रंथालय हर साल 150 भारती पत्रिकाएँ और 4 विदेशी पत्रिकाओं की सदस्यता ले रही है । वर्ष के दौरान 20,626 पुस्तकों की लेन देन है ।

अब वि.अ.ए. इन्फ्लिब्नेट् कार्यक्रमों के सहारे यह विद्यापीठ का ग्रंथालय सारा गणकीकृत हो चुका है । अर्जन, क्याटलॉगींग और परिचालन अनुभाग सारा अपने - आप कार्य करता है । ओप्याक व्यवस्था को जनता के लिए रखा गया है। बारकोडिंग किताबों का कार्य सब समाप्त हो गया है ।

अलग-अलग विषयों के किताबें और पांडुलिपियाँ आदि सब ग्रंथालय में उपलब्ध हैं । वे निम्न हैं -

साहित्य, व्याकरण, श्रीमद्भगवद्गीता, वेदांत, अद्वैत वेदांत, विशिष्टाद्वैत वेदांत, द्वैत वेदांत, मीमांस, योग, साङ्ख्य, न्याय, वैशेषिक, उपनिषद, ज्योतिष, रामायण, महाभारत, भारतीय विज्ञान, गणितशास्त्र, कंप्यूटर विज्ञान, भारतीय धर्म, बुद्धीजम, जैनीजम्, अन्य धर्म वैदिक साहित्य, पुराण साहित्य, पाश्चात्य तत्त्वज्ञान, इन्डोलाजी, चरित्र, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, ग्रंथालय शास्त्र, आयुर्वेद, हिंदी साहित्य, अंग्रेजी साहित्य, तेलुगु साहित्य, कला और वास्तुशास्त्र, कानून्, अन्य विशेष (महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद, श्री अरबिंदो आदि) सम्मेलन और स्मरणोत्सव खण्ड, प्रचलित क्याटलॉग् में पांडुलिपियाँ उपस्थित हैं।

ग्रंथालय का उपयोग करनेवाले :

विश्वविद्यालय ग्रंथालय ने 1500 सदस्यों को बनाया है । हर बार ज्यादा से ज्यादा सदस्यों को यह ग्रंथालय बनाती है। कम- से - कम हर दिन पाँच सौ सदस्य - ग्रंथालय का उपयोग लेते हैं । और एक सौ लोग छुट्टियों में ।

स्वचलित ग्रंथालय :

वि.अ.ए. के सहारे इस ग्रंथालय को इन्फ्लिब्नेट् योजना के अंतर्गत स्वचालित बनाया गया है । इसलिए किताबों का हिसाब लेना-देना आदि सब स्वचालित है । ओप्याक (OPAC) आवश्यकताएँ सब फिलहाल उपयोगकर्ताओं को मौजूद हैं । स्वचलित पत्रिकाएँ और लेन-देन विभाग प्रगती में है । फोन-दूरभाष, ई-मेल आदि पर भी किताबों की जानकारी देने का कार्य प्रगती में है । ग्रंथालय में विद्वानों अध्यापकों, छात्रों को अंतर्जाल सुविधा भी दी गयी है ।

आ. छात्रावास :

तीन छात्रावास छात्रों के लिए और एक छात्राओं के लिए बनाया गया है ।

छात्रों के छात्रावासों के नाम - शेषाचल, वेदाचल और गरुडाचल आदि प्राक्-शास्त्री से विद्यावारिधी तक हैं । दो अलग-अलग भोजन शाला और एक जुडा हुआ पाक गृह है। उनमें उत्तर भारतीय एवं दक्षिण भारतीय भोजनों की सुविधा दी गई है । जिससे देश के अलग - अलग जगह से आए छात्र - छात्राओं को ज्यादा फायदा हो सके ।

नीलाचल छात्र वास नए भवन का नाम नीलाचल रखा गया है । इस में 150 छात्रों को रहने की सुविधा होगी।

'श्री पद्मावती महिला छात्रावास' लडकियों के लिए है । इसमें प्राक्-शास्त्री से विद्यावारिधी तक की लडकियाँ रहती हैं । अलग पाकगृह और भोजनशाला की सुविधा दी गयी है । यहाँ सुविधानुसार छात्रावास बनाने को सोचा जा रहा है ।

नये महिला छात्रावास को हाल ही में बनाकर आनेवाले छात्राओं को रहने की इंतजाम कर देने के लिए विद्यापीठ तैयार है । इसका खर्चा तकरीबन एक करोड रुपये तक आने की संभावना मानी जाती है । यहाँ कमसे कम 125 छात्राएँ रह सकती हैं।

सिंहाचल शोध छात्रावास - ग्यारहवें योजना के मुताबिक वि अ ए द्वारा शोध छात्रों के लिए स्वीकृती प्राप्त छात्रावास की निर्माण हो चुका है । दिनांक 29.12.2012, माननीय केंद्रीय मंत्री श्री.एम.एम.पल्लम राजु, एम एच आर डी द्वारा उद्घाटन किया गया । अभी निर्माण कार्य चालू है। इस वर्ष के अंत तक कार्य संपन्न हो जाएगा।

अतिथि गृह - इस वर्ष के दौरान अतिथि गृह में एक और मंजिल बनाया गया। लिफ्ट को भी व्यवस्थित किया गया ।

प्रधान भवन और अन्य

1. योग मंदिर का निर्माण हुआ है ।
2. एक बृहत् पानी टन्की का निर्माण किया गया है जिसमें दो लाख लीटर पानी संग्रहित किया जा सकता है।
3. शिक्षा भवन का दूसरे मंजिल का निर्माण किया गया है ।
4. प्रोफेसर एस.बी.रघुनाथाचार्य मुक्त सभाङ्गण का निर्माण किया गया है ।

5. आरोग्य केंद्र का निर्माण किया गया है।

6. दूसरे शैक्षिक भवन का निर्माण किया गया है।

नीव का पत्थर रखा गया

1. सिंहाचल शोध छात्रों का छात्रवास

2. टईप-IV कर्मचारी आवास

इ. मन:शास्त्र प्रयोगालय :

इस मन:शास्त्र प्रयोगशाला को वैज्ञानिकता में छात्र प्रशिक्षणता को ध्यान में रखते हुए आई.ए.एस.ई. ने निर्माण किया है । यह शाला शिक्षा शास्त्री (बी.एड्.) और शिक्षाचार्य (एम्.एड्.) छात्रों को अत्यंत उपयोगी है ।

ई. बहु भाषा माध्यम प्रयोगालय :

यह बहु भाषा माध्यम प्रयोगालय संस्कृत और अंग्रेजी प्रशिक्षणार्थियों को सुविधाजनक है । 'संस्कृत भाषिका' नामक संस्कृत प्रक्रिया सामग्री फिलहाल तैयारी में है । इसे उच्चतर पर बनाने का विचार जारी है । इस प्रयोगशाला का उपयोग, भाषा सीखनेवालों, संस्कृत, सांस्कृतिक ज्ञानि आदियों को सुविधाजनक हों इसीलिए गणकीकृत बनाया जा रहा है ।

उ. वर्णानुसार गैलरी :

वर्णानुसार गैलरी (लिपि विकास प्रदर्शनी) का निर्माण 2003 में उत्कृष्टता परियोजना के अंतर्गत किया गया है । इस वर्णानुसार गैलरी को निर्माण करने का मकसद प्राचीन युग से वर्णों का विकास करना था । (3000 बी.सी.) अब प्रांतीय स्तर पर लिपि विकासित हो रही है । (9 वी सदी ए.डी.)

आरंभ से हिंद प्रांत के नागरिकों को भाषाई ज्ञान बडाने हेतु लिखना व पढाने के लिए आसान बनाने में डा. एस्.आर. राव जैसे ख्यात विज्ञानियों का योगदान है । प्रारंभ से हिंद लिपि का संबंध सेमेटिक लिपि से ही है । अवेस्तन और वैदिक संस्कृत भाषाएँ (फोनेटिक, सेमेटीक और व्याकरण) ऐसे बहुत सारे द्रवीडियन भाषाएँ (विद्वानों से परिचर्यात हैं) हरचानीगई ऋग्वेद के समय की कही जाती है ।

ऐतिहासिक काल से हिंद लिखावट अच्छी मानी गई है । खासकर जो लिपि मुद्रित होती हैं । ये मुद्रित हिंद लिपियाँ महत्वपूर्ण हैं । उनमें लोथा नामक पाश्चात्य भारतीय शोधकर्ता ने 1950-1980 में काम किया है । यह गैलरी भी मुद्रित करने में महेजोदाडो (पाकिस्तान) और कालिबंगान (भारत) साथ ही साथ प्राचीन पूर्वी भारतीय हिस्सा, जैसे कीस्स और बरगा, डा. (सुमेर-ईराक), हिस्सार तथा बहरेन । हिंद के मुद्रित माडल वैली, मुद्रा, स्कुलाचर, ब्रोंचस आदि को लोग अपनी जीवन में अपनाने लगे । और संस्कृत इतिहास को सीखने लगे । आज-कल वेदिक कन्सेप्ट और अध्यात्मीक समय को कितना हम जानते हैं; यह सोच पर निर्भर हैं ।

ऊ. प्रसारित अंतर्जाल सुविधा :

विद्यापीठ ने अपने कर्मचारियों एवं छात्रों को अंतर्जाल की सुविधा बनाए रखी है । यह सुविधा विद्यापीठ में प्रसारित के (के.बी.पी.एस.) डिसनेट और (256 के.बी.पी.एस.) नेट में दी है ।

अंतर्जाल : यह सुविधा यहाँ के शहरी हिसाब से चलती है ।

ऋ. कंप्यूटर केंद्र :

विद्यापीठ में उपकरणों से सुसज्जित कंप्यूटर केंद्र है जो 300 से अधिक छात्रों की आवश्यकता पूरी कर सकता है । यह केंद्र विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने सन् 1996 में मंजूर किया था । इसके मुख्य लक्ष्य निम्नलिखित हैं-

1. वेद, शास्त्र तथा आगम ग्रंथों का हैपर टेक्स्ट तैयार करना ।
2. वेद, शास्त्र, आगम के अमूल्य हस्तलिखित ग्रंथों के आलोचनात्मक संस्करण के लिए साफ्टवेर तैयार करना।
3. शोधार्थियों की सुविधा के लिए फ्लापी तथा सी.डी. में दुर्लभ ग्रंथों का संरक्षण करना ।
4. छात्रों, कर्मचारियों तथा पारंपरिक शोधार्थियों का कंप्यूटर से परिचय कराना ।
5. पाठ्यक्रम में कंप्यूटर विज्ञान/कंप्यूटर आप्लिकेशन जैसे विषयों का समावेश करना ।
6. कर्मचारियों, शोधार्थियों तथा छात्रों को इंटरनेट की सुविधा प्रदान करना । विद्यापीठ का वेबसाईट हैं **http://www.rsvidyapeetha.ac.in**

विशेष समिति को गणकीकृत केंद्र के बारे में वि.अ.ए. के सामने समजाकर वित्तीय खर्चा का विवरण देना है। उसके बाद विश्वविद्यालय प्रस्ताव बनाकर केंद्र के सामने रखेगी । अनुदानेतर 20,00,000/- (बीस लाख रुपये मात्र) में हार्डवेयर चीजों को खरीदना है । उसके बाद नेट वर्क संबंध में विश्वविद्यालय कंप्यूटर केंद्र सहीसलामत से बनाएगी। इसमें डा. आर.जे. रमाश्री, प्रवाचक, केंद्र का निरीक्षण करेंगी ।

ए. छात्र भोजन शाला :

'शेषाचल' छात्रवास में कम-से-कम 300 छात्रों के लिए भोजन शाला का प्रबंध किया गया है । यह एक बडी सुविधाजनक कार्यक्रम मानी जाती है । वेदाचल छात्रावास के बगल में ही ''आनंद बाजार'' नाम से एक नया छात्र भोजन शाला बनाया गया। लगभग 350 छात्र यहाँ भोजन ले सकते हैं। दिनांक 17 अक्टोबर 2011 को असम सरकार के माननीय राज्यपाल और सम्माननीय कुलाधिपति प्रज्ञान वाचस्पति डॉ जे.बी.पट्नायक जी ने ''आनंद बाजार'' का उद्घाटन किया।

ऐ. बहुविध व्यायाम शाला :

छात्रों के शारीरिक तंदुरुस्ती हेतु इस बहुविध व्यायाम शाला का विद्यापीठ में निर्माण किया गया है ।

यह बहुविध व्यायाम शाला के 16 केंद्र है -

कुल्हामांसपेशि : यह केंद्र कुल्हा, मांसपेशि को भी दोबारा विकास करता है । **ऊँचा चरखीदार :** यह नाडी युक्त मांसपेशि का विकास करता है । ऊँचापन, खांसी मांसपेशि, बाहें, चौडी छाती, कंधों को सुधार ने में ऊँची चरखीदार मदद करता है । जितना चाहे उतना तोलकर अपने कंधे के सहारे उठा सकते हैं । **उदर संबंधी बेंच :** यह साधन उदर संबंधी है । उदर के सहारे व्यक्ति जितना हो सके, उतना ही बोझा उठा सकता है । **भोरमुल यंत्र :** यह यंत्र बहुत ही उपयुक्त है । एक बार शरीर में ताजी हवा लेने लगे तो शरीर बडा तंदुरुस्त लगने लगता है। बडते तनाव को **रोकना :** यह यंत्र शरीर के आगे और पीछे के हिस्से का विकास करवाता है । **मरोडना :** यह व्यायाम शरीर के मांसपेशियों में ताकत भरता है । एक तरह से पूरे शरीर को तोड-मरोड करवाता है । **बांहे, हृदयंगम छल्लेदार :** इस व्यायाम शरीर के घुटने, बाहें, हथेली, माथा, एल्बो आदि मांसों का विकास करने में मदद करता है। **पेक्क डेक्क :** यह तंदुरुस्त मांसोंवाला मनाता है । और मांस, हड्डी को विकास करवाता है। **छुबकीदार:** यह यंत्र के प्रकार से हुबकी लगाने जैसा होता है । इससे शरीर के अंग-अंग फूल उठता है । मांसों में भी विकास होता है । **पैर से दबाना :** यह दोनों पैरों से चलता है । घुटने और एडियों में ताकत भरने में मदद करता है । मांस में भी विकास करता है । **स्काऊट दबाव :** इसके सहारे घुटने की मांस एवं एडियों में जोर बरनेवाला होता है । **पुल्ल अप्स:** यह यंत्र अपनी तरफ ध्विंचने का होता है । यह बाहों, छाती आदि में चौडाई लाने में सफल करवाता है।

इस बहुविध व्यायाम शाला का फायदा विद्यापीठ के कर्मचारी एवं छात्र सभी डा. एम.आदिकेशवुलु नायुडु, प्रवाचक एवं अध्यक्ष, व्यायाम शिक्षा विभाग जी के निरीक्षण में ले सकते हैं ।

VII. प्रशासन

अ. नियुक्ति -

विशिष्टाद्वैत वेदांत विभाग के प्रो. के.ई. देवनाथन, आंध्रप्रदेश के राज्यपाल द्वारा एस.वी. वेदिक विश्वविद्यालय के द्वितीय कुलपति के रूप में नियुक्त हुए । दिनांक 19.02.2014 को कार्यभार ग्रहण किया गया ।

1. ओ. कृष्ण प्रसाद - कनिष्ठ अभियंता, बिजली विभाग
2. श्री पी. के. फणी वर्मा - प्रबंधक, छात्रावास / अतिथिगृह
3. श्री वी.जी. शिवशंकर रेड्डी - उप कुलसचिव
4. प्रो. सी. उमाशंकर - कुलसचिव
5. डा. पी. वेंकट राव - शिक्षा विभाग में आचार्य

आ. पदोन्नति -

वर्ष के दौरान वि.अ.ए. के नियमों के अनुसार विभिन्न श्रेणियों के 37 संकाय सदस्यों को सी.ए.एस. के अंतर्गत उच्चचरण की पदोन्नति दी गई ।

इ. सेवानिवृत्त -

1. श्री एस. आनंद - 30.6.2013
2. प्रो. रविशंकर मेनोन - 31.8.2013
3. प्रो. के.ई. गोविंदन - 31.10.2013